

---

53<sup>वां</sup> 53<sup>rd</sup>  
राष्ट्रीय फ़िल्म National Film  
पुरस्कार Awards  
**2006**

---

**संपादन**

अक्षय कुमार

**Editor**

Akshay Kumar

**समन्वय**

मनोज श्रीवास्तव

**Coordination**

Manoj Srivastava

**सहयोग**

मंजु खन्ना

कौशल्या मेहरा

**Assistance**

Manju Khanna

Kaushalya Mehra

**उत्पादन**

एस. राय

वी. के. मीणा

किशोर कुमार

शान्तनु भट्टाचार्य

**Production**

S. Roy

V. K. Meena

Kishore Kumar

Shantanu Bhattacharya

फिल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित तथा अरावली प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

Designed and published by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals, Printed at Aravali Printers & Publisher's (P) Ltd, New Delhi-110020

No. : 2/5/2007 PP-V

1600 Copies

September 2007

# विषय सूची

# CONTENTS

Page  
No.

## निर्णायक मंडल

## JURY MEMBERS

### दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

### ABOUT DADASAHEB PHALKE AWARD

- दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता-2005 4  
पिछले वर्षों के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता 6  
पिछले वर्षों के स्वर्ण कमल विजेता 7

- Dadasaheb Phalke Award Winners - 2005  
Dadasaheb Phalke Award - Down The Years  
Past Winners of Swarna Kamal

## कथाचित्र पुरस्कार

## AWARDS FOR FEATURE FILMS

- सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार 10 Best Feature Film  
निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार 12 Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director  
स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम लोकप्रिय फिल्म 14 Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment  
राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार 16 Nargis Dutt Award for Best Film on National Integration  
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म 18 Best Film on Family Welfare  
अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म 20 Best Film on Other Social Issues  
पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म 22 Best Film On Environment / Conservation / Preservation  
सर्वोत्तम बाल फिल्म 24 Best Children's Film  
सर्वोत्तम निर्देशक 26 Best Direction  
सर्वोत्तम अभिनेता 28 Best Actor  
सर्वोत्तम अभिनेत्री 30 Best Actress  
सर्वोत्तम सह अभिनेता 32 Best Supporting Actor  
सर्वोत्तम सह अभिनेत्री 34 Best Supporting Actress  
सर्वोत्तम बाल कलाकार 36 Best Child Artist  
सर्वोत्तम पार्श्व गायक 38 Best Male Playback Singer  
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका 40 Best Female Playback Singer  
सर्वोत्तम छायांकन 42 Best Cinematography  
सर्वोत्तम पटकथा 44 Best Screenplay  
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन 46 Best Audiography

## FEATURE FILMS

सर्वोत्तम संपादन	48	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	50	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेषभूषा	52	Best Costume Designer
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	54	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	56	Best Lyrics
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	58	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	60	Best Special Effects
सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन	62	Best Choreography
सर्वोत्तम असमिया फीचर फिल्म	64	Best Feature Film in Assamese
सर्वोत्तम बंगला फीचर फिल्म	66	Best Feature Film in Bengali
सर्वोत्तम हिन्दी फीचर फिल्म	68	Best Feature Film In Hindi
सर्वोत्तम कन्नड़ फीचर फिल्म	70	Best Feature Film In Kannada
सर्वोत्तम मलयालम फीचर फिल्म	72	Best Feature Film in Malayalam
सर्वोत्तम मराठी फीचर फिल्म	74	Best Feature Film in Marathi
सर्वोत्तम उड़िया फीचर फिल्म	76	Best Feature Film in Oriya
सर्वोत्तम पंजाबी फीचर फिल्म	78	Best Feature Film in Punjabi
सर्वोत्तम तमिल फीचर फिल्म	80	Best Feature Film in Tamil
सर्वोत्तम तेलुगु फीचर फिल्म	82	Best Feature Film in Telugu
सर्वोत्तम अंग्रेजी फीचर फिल्म	84	Best Feature Film in English
सर्वोत्तम भोजपुरी फीचर फिल्म	86	Best Feature Film in Bhojpuri
सर्वोत्तम मोन्पा फीचर फिल्म	88	Best Feature Film in Monpa
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	90	Awards Not Given

## गैर कथाचित्र पुरस्कार

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार	92	Best Non-Feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र पुरस्कार	94	Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म	96	Best Anthropological / Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फिल्म	98	Best Biographical Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म/पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण फिल्म	100	Best Scientific Film/Environment Conservation/Preservation Film

## AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS



सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म	102	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम खोजी फिल्म	104	Best Investigative Film
सर्वोत्तम कार्टून फिल्म	106	Best Animation Film
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	108	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म	110	Best Short Fiction Film
सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म	112	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम कृषि फिल्म	114	Best Agricultural Film
सर्वोत्तम निर्देशन	116	Best Direction
सर्वोत्तम छायांकन	118	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	120	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	122	Best Editing
सर्वोत्तम प्रकथन/वाएस ओवर	124	Best Narration/Voice Over
विशेष उल्लेख	126	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	128	Awards not given

### सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार

सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	130	Best Book on Cinema
सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक	132	Best Film Critic

### AWARDS FOR BEST WRITING ON CINEMA

### सारांश : कथाचित्र

15 पार्क एवेन्यू	136	15 Park Avenue
आदम कुत्थू	137	Aadum Koothu
अचुविन्ते अम्मा	138	Achuvinte Amma
अन्धन	139	Anniyan
अपहरण	140	Apaharan
बागी	141	Baghi
बेलीफुल ऑफ ड्रीम्स	142	Bommalaata - A Belly Full of Dreams
ब्लैक	143	Black
देवानामाथिल	144	Daivanamathil

### SYNOPSIS - FEATURE FILMS

धावामाई धावमिरुन्तु	145	Dhavamai Dhavamirunthu
डोम्बिवली फास्ट	146	Dombivali Fast
हर्बर्ट	147	Herbert
इकबाल	148	Iqbal
काल पुरुष	149	Kaalpurush
कब होई गवना हमार	150	Kab Hoi Gawna Hamaar
कदम तले कृष्णा नाचे	151	Kadamtole Krishna Nache
कथान्तर	152	Kathantara
मैने गांधी को नहीं मारा	153	Maine Gandhi Ko Nahin Maara
पहेली	154	Paheli
परिणीता	155	Parineeta
परजनिया	156	Parzania
रंग दे बसंती	157	Rang De Basanti
सोनम	158	Sonam
श्रृंगारम	159	Sringaram
ताजमहल	160	Taj Mahal
तायी	161	Thaayi
तनमात्र	162	Thanmatra
द ब्लू अम्ब्रेला	163	The Blue Umbrella
तुत्तुरी	164	Thutturi

### सारांश गैर कथाचित्र

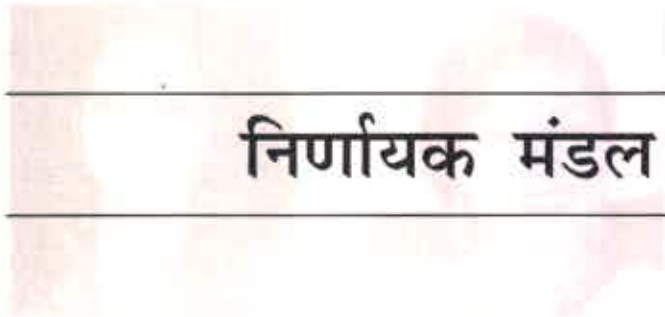
### SYNOPSIS NON-FEATURE FILMS

भ्राईमोमन थियेटर	166	Bhramimoman Theatre
क्लोजर	167	Closer
फाइनल सोल्यूशन	168	Final Solution
हंस अकेला-कुमार गंधर्व	169	Hans Akela - Kumar Gandharva
जॉन एण्ड जेन	170	John & Jane
कछुआ और खरगोश	171	Kachhua Aur Khargosh
नैना जोगिन (द एसेटिक आइ)	172	Naina Jogin (The Ascetic Eye)

पारसी वाड़ा, तारापोर प्रजेंट डे	173	Parsi Wada, Tarapore Present Day
राइडिंग सोलो टू द टॉप ऑफ द वर्ल्ड	174	Riding Solo to the Top of the World
स्परिट ऑफ द ग्रेसफुल लीनिएज	175	Spirit of the Graceful Lineage
थक्कायिन मीतु नांगु कंगल	176	Thakkayin Methu Naangu Kangal
चाबीवाली पॉकेट वाच	177	Chabiwali Pocket Watch
द सीडकीपर्स	178	The Seed Keepers
द वे टू डस्टी डेथ	179	The Way to Dusty Death
अंडर दिस सन	180	Under This Sun
वॉयस एक्रॉस द ओशन्स	181	Voices Across the Oceans
वापसी	182	Wapsi
द विसल ब्लोअर्स	183	The Whistle Blowers



श्री १०८ श्री गणेशाय नमः



श्री १०८ श्री गणेशाय नमः



श्री १०८ श्री गणेशाय नमः

---

निर्णायक मंडल

**Jury Members**

---



श्री १०८ श्री गणेशाय नमः



श्री १०८ श्री गणेशाय नमः

कथाचित्र निर्णायक मंडल

JURY FOR FEATURE FILMS



बी. सरोजा देवी (अध्यक्ष)  
B. Saroja Devi (Chairperson)



अशोक शरण  
Ashok Sharan



अनवर अली  
Anwar Ali



मीना देवबर्मा  
Meena Debburma



श्यामली देब बनर्जी  
Shyamali Deb Banerjee



श्याम प्रसाद  
Shyama Prasad



पी. सुदर्शन  
P. Sudershan



सीमा बिस्वास  
Seema Biswas



बी.एस. लोगनाथ  
B.S. Lognath



कट्टे रामचन्द्र  
Katte Ramachandra



पी.एच. विश्वनाथ  
P.H. Vishwanath



ईना पुरी  
Ina Puri

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन निर्णायक मंडल

JURY FOR BEST WRITING ON CINEMA



रत्नोत्तमा सेनगुप्ता  
Ratnottama Sengupta



खालिद मुहम्मद (अध्यक्ष)  
Khalid Mohammad (Chairman)



अमिताभ पाराशर  
Amitabh Parashar



गैर-कथाचित्र निर्णायक मंडल

JURY FOR NON-FEATURE FILMS



सिद्धार्थ काक (अध्यक्ष)  
Siddharth Kak (Chairman)



संगीता तामुली  
Sangita Tamuli



चिन्मय नाथ  
Chinmaya Nath



किरीट खुराना  
Kireet Khurana



ए.बी. त्रिपाठी  
A.B. Tripathi



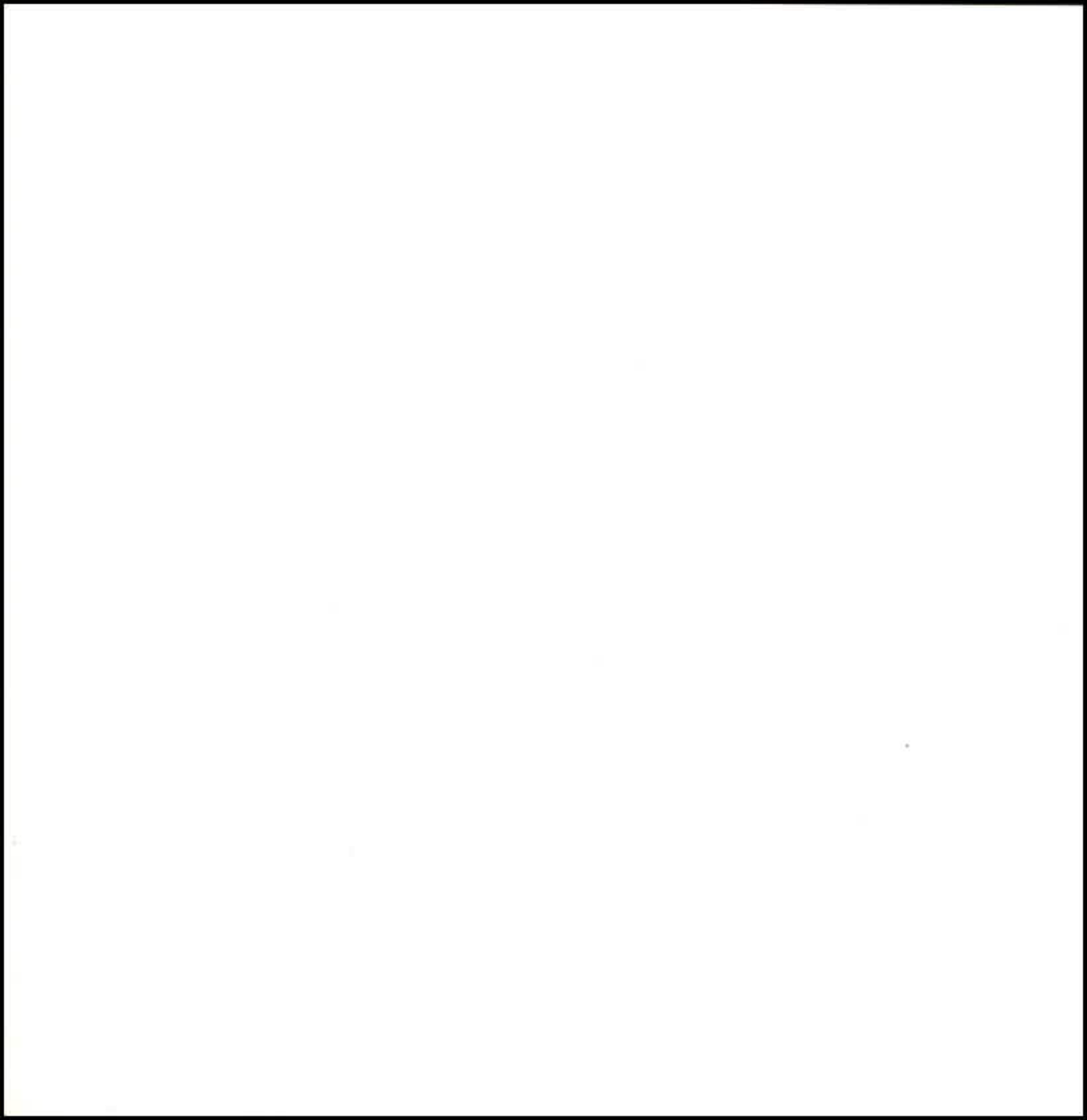
किशोर डंग  
Kishore Dang

---

दादा साहेब  
फाल्के पुरस्कार

---

**Dada Saheb**  
**Phalke Award**





हुंदीराज गोविन्द फाल्के (बायें)  
Dhundiraj Govind Phalke (Left)

#### ABOUT DADA SAHEB PHALKE AWARD

The prestigious and top most award of Indian cinema is named after the father of Indian cinema Dhundiraj Govind Phalke. He is credited with making the first ever Indian feature film in the year 1913. Beginning with Raja Harishchandra, Dadasaheb Phalke, as he was popularly called, went on to make 95 movies and 26 short films in a span of 19 years until 1932.

To honour this enterprising film personality, the Dadasaheb Phalke award was introduced in the year 1969 with a view to recognize the contribution of film personalities towards growth and development of Indian cinema. The first award was presented to the renowned actress and pioneer of studio system in India, Devika Rani.

#### दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

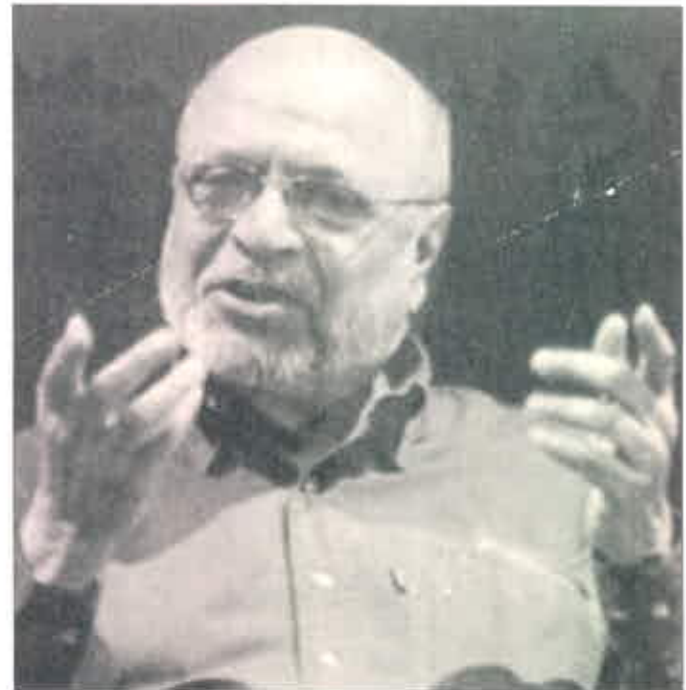
भारतीय सिनेमा का सर्वोत्तम पुरस्कार भारत में सिनेमा के जनक माने जाने वाले हुंदीराज गोविन्द फाल्के के नाम से सुशोभित है।

'राजा हरीश्चन्द्र' से फिल्मी जीवन का प्रारंभ करने वाले दादा साहेब फाल्के ने 1932 तक, 19 वर्षों में 95 फिल्में तथा 26 लघु फिल्में बनाईं।

दादा साहेब फाल्के के सम्मानार्थ यह नामित पुरस्कार सन् 1969 में पहली बार प्रसिद्ध अभिनेत्री तथा स्टूडियो तंत्र की प्रतिपादक देविका रानी को प्रदान किया गया। प्रत्येक वर्ष भारतीय सिनेमा के उत्पादन और विकास के लिए आजीवन काम करने वाले व्यक्ति को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

# दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता 2005

श्याम बेनेगल  
SHYAM BENEGAL



भारत में नये सिनेमा के प्रणेता, श्याम बेनेगल मूलतः अकादमिक रुचि रखने वाले एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। श्री बेनेगल राष्ट्रीय एकता और विकास से जुड़े मुद्दों के प्रति दिल से समर्पित हैं। उन्होंने अपना कैरियर एक विज्ञापन फिल्म में पटकथा लेखक के रूप में शुरू किया था। आगे बढ़कर उन्होंने टेलीविजन, सूचना प्रौद्योगिकी, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों आदि के विभिन्न पहलुओं पर संगोष्ठियों में भाग लिया और व्याख्यान भी दिए। श्री बेनेगल ने 1966 से 1973 तक भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे में जन संचार तकनीक पर अध्यापन का कार्य भी किया। 1980 से 1983 तक और फिर 1989 से 1992 तक संस्थान के चेयरमैन के रूप में उन्होंने इसके शैक्षिक क्रिया-कलापों में सक्रिय भूमिका निभाई। इनकी सबसे पहली फिल्म **अंकुर** ने भारत में एक नए सिनेमा की शुरुआत की और श्याम बेनेगल को देश के अग्रणी फिल्म निर्माताओं की श्रेणी में ला खड़ा किया। एक के बाद एक इन्होंने कई यादगार फिल्मों दी हैं। लोकप्रिय टीवी धारावाहिक **डिस्कवरी ऑफ इंडिया** श्याम बेनेगल की ही कृति है।

इनकी सिनेमा शैली में बौद्धिकता, मनोरंजन और प्रगोचन का अद्भुत मिश्रण है। 1976 में पद्मश्री और 1991 में पद्म भूषण से सम्मानित श्री श्याम बेनेगल को 2004 में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार सहित कई अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है। वर्तमान में श्याम बेनेगल राज्य सभा सांसद हैं।

श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित कुछ मुख्य फिल्में हैं — अंकुर (1974), निशांत (1975), मंथन (1976), भूमिका (1977), कौंडुरा (1978), जुनून (1978), कलयुग (1981), मंडी (1983), नेहरू (1985), त्रिकाल (1985), सुस्मान (1987), सूरज का सांतवा घोड़ा (1993), मम्मो (1994), सरदारी बेगम (1996), द मेकिंग आफ महात्मा (1996), जुबैदा (2001) और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस— द फॉरगॉटन हीरो (2006)

श्याम बेनेगल निर्देशित कुछ प्रमुख टेलीविजन धारावाहिक हैं — यात्रा (1986), कथासागर (1986) तथा भारत एक खोज (1988)



## DADASAHEB PHALKE

### AWARD WINNER 2005

#### SHYAM BENEGAL

One of the pioneers of the new cinema in India, Shyam Benegal is considered as one of the leading filmmakers of the country ever since his first feature film, **ANKUR** was released. His films have been seen and widely acclaimed in India and at different International film festivals for the last three decades. The core subjects of his films have been varied in nature but mainly centered around contemporary Indian experience. Problems of development, social and cultural change appear on many levels as a continuing thread in practically all his films. Apart from fiction features, he has made a number of documentaries on subjects ranging from cultural anthropology and problems of industrialization, to music and so on. His work on television consists of several popular series based on short stories by well-known Indian and International writers. His mammoth 53 part series on the history of India based on Jawaharlal Nehru's book *Discovery of India* has won wide acclaim. He has also made an extra-mural educational series sponsored by UNICEF, for rural children.

Shyam Benegal's career started with a job as a copywriter in advertising from where he graduated to become the Creative & Accounts Group Head before becoming a full

time filmmaker. He has lectured at many institutions in India and abroad as well as participated in seminars on subjects dealing with Cinema, Television, Information Technology and different aspects of social cultural change.

Shyam Benegal taught Mass-communication techniques between 1966 and 1973. He was a Homi Bhabha fellow (1970-72) during which time, he studied Children's Television with CTW in New York and worked as Associate Producer with WGBH, Boston. He took an active role in shaping film education as Chairman of the Film Television Institute of India during 1980-83 and 1989-92.

As a person deeply committed to social integration in India, Shyam Benegal was part of the National Integration Council (1986-89) and the National Council of Art. The Government of India has conferred on him two of its most prestigious awards – **PADMA SHRI (1976)** and **PADMA BHUSHAN (1991)**.

In 2004, he was awarded the **Indira Gandhi National Integration Award**. Awards and honours are not new for Shyam Benegal. Most all his films have won awards-national as well as international. **Shyam Benegal is presently a Member of Parliament, Rajya Sabha.**

*Shyam Benegal has over 70 prominent and celebrated films to his credit.*

**Some of his prominent films are :-** *Ankur (1974), Nishaant (1975), Manthan (1976), Bhumika (1977), Kondura (1978), Junoon (1978), Kalyug (1981), Mandi (1983), Nehru (1985), Trikal (1985), Susman (1987), Suraj Ka Satvan Ghoda (1993), Mamma (1994), Sardari Begum (1996), The Making of the Mahatma (1996), Zubeidaa (2001) and Netaji Subhas Chandra Bose: The Forgotten Hero (2005).*

*His prominent work on television includes popular and informative serials like: "Yatra" (1986) The Journey, "Katha Sagar" (1986) and "Bharat Ek Khoj" (1988)*



## DADASAHEB PHALKE AWARD DOWN THE YEARS

SR. NO.	YEAR	AWARDEE
1.	1969	Devika Rani Roerich
2.	1970	B.N. Sircar
3.	1971	Prithviraj Kapoor
4.	1972	Pankaj Mullick
5.	1973	Sulochana (Ruby Myers)
6.	1974	B. N. Reddy
7.	1975	Dhiren Ganguly
8.	1976	Kanan Devi
9.	1977	Nitin Bose
10.	1978	R. C. Boral
11.	1979	Sohrab Modi
12.	1980	P. Jairaj
13.	1981	Naushad Ali
14.	1982	L.V. Prasad
15.	1983	Durga Khote
16.	1984	Satyajit Ray
17.	1985	V. Shantaram
18.	1986	B. Nagi Reddy
19.	1987	Raj Kapoor
20.	1988	Ashok Kumar
21.	1989	Lata Mangeshkar
22.	1990	Akkineni Nageshwara Rao
23.	1991	Balachandra Govind Pendharakar
24.	1992	Dr. Bhupen Hazarika
25.	1993	Majrooh Sultanpuri
26.	1994	Dilip Kumar
27.	1995	Dr. Rajkumar
28.	1996	Shivaji Ganesan
29.	1997	Kavi Pradeep
30.	1998	B. R. Chopra
31.	1999	Hrushikesh Mukherjee
32.	2000	Asha Bhosle
33.	2001	Yash Chopra
34.	2002	Dev Anand
35.	2003	Mrinal Sen
36.	2004	Adoor Gopalakrishnan

## PAST WINNERS OF SWARNA KAMAL

Sr. No.	Film	Director	Language	Year
1.	Shyamchi Aai	P.K. Atre	Marathi	1953
2.	Mirza Ghalib	Sohrab Modi	Hindi	1954
3.	Parher Panchali	Satyajit Ray	Bengali	1955
4.	Kabuliwala	Tapan Sinha	Bengali	1956
5.	Do Ankhen Barah Haath	V. Shantaram	Hindi	1957
6.	Sagar Sangame	Debaki Kumar Bose	Bengali	1958
7.	Apur Sansar	Satyajit Ray	Bengali	1959
8.	Anuradha	Hrishikesh Mukherjee	Hindi	1960
9.	Bhagini Nivedita	Bijoy Basu	Bengali	1961
10.	Dada Thakur	Sudhir Mukherjee	Bengali	1962
11.	Shehar Aur Sapna	Khwaja Ahmed Abbas	Hindi	1963
12.	Charulata	Satyajit Ray	Bengali	1964
13.	Chemmeen	Ramu Kariat	Malayalam	1965
14.	Teesri Kasam	Basu Bhattacharya	Hindi	1966
15.	Hatey Bazare	Tapan Sinha	Bengali	1967
16.	Goopy Gyne Bagha Byne	Satyajit Ray	Bengali	1968
17.	Bhuvan Shome	Mrinal Sen	Hindi	1969
18.	Samskara	T. Pattabhiram Reddy	Kannada	1970
19.	Seemabaddha	Satyajit Ray	Bengali	1971
20.	Swayamvaram	Adoor Gopalakrishnan	Malayalam	1972
21.	Nirmalyam	M.T. Vasudevan Nair	Malayalam	1973
22.	Chorus	Mrinal Sen	Bengali	1974
23.	Chomana Dudi	B.V. Karanth	Kannada	1975

Sr. No.	Film	Director	Language	Year
24.	Mrigaya	Mrinal Sen	Hindi	1976
25.	Ghatashraddha	Girish Kasaravalli	Kannada	1977
26.	No award recommended			1978
27.	Shodh	Biplab Ray Choudhri	Hindi	1979
28.	Akaler Sandhane	Mrinal Sen	Bengali	1980
29.	Dakhal	Goutam Ghose	Bengali	1981
30.	Chokh	Utpalendu Chakraborty	Bengali	1982
31.	Adi Sankaracharya	G.V. Iyer	Sanskrit	1983
32.	Damul	Prakash Jha	Hindi	1984
33.	Chidambaram	G. Aravindan	Malayalam	1985
34.	Tabarana Kathe	Girish Kasaravalli	Kannada	1986
35.	Halodhia Choraye Bodhan Kahi	Jahnu Barua	Assamese	1987
36.	Piravi	Shaji N. Karun	Malayalam	1988
37.	Bagh Bahadur	Buddhadeb Dasgupta	Hindi	1989
38.	Maruppakkam	K. S. Sethumadhavan	Tamil	1990
39.	Agantuk	Satyajit Ray	Bengali	1991
40.	Bhagavad Gita	G. V. Iyer	Sanskrit	1992
41.	Charachar	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1993
42.	Unishe April	Rituparno Ghosh	Bengali	1994
43.	Kathapurushan	Adoor Gopalakrishnan	Malayalam	1995
44.	Lal Darja	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1996
45.	Thai Saheb	Girish Kasaravalli	Kannada	1997
46.	Samar	Shyam Benegal	Hindi	1998
47.	Vanaprastham	Shaji N. Karun	Malayalam	1999
48.	Shantham	Jayaraj	Malayalam	2000
49.	Dweepa	Girish Kasaravalli	Kannada	2001
50.	Mondo Meyer Upakhyan	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	2002
51.	Shwaas	Sandeep Sawant	Marathi	2003
52.	Page 3	Madhur Bhandarkar	Hindi	2004

---

कथाचित्र  
पुरस्कार

---

**Awards for  
Feature Films**

## सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार

कालपुरुष - मेमोरिज़ इन द मिस्ट (बंगाली)

निर्माता जुगल झामू सुगन्ध को स्वर्ण कमल एवं रू 50,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक बुद्धदेव दासगुप्ता को स्वर्ण कमल एवं रू 50,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का कालपुरुष - मेमोरिज़ इन द मिस्ट (बंगाली) को इसकी अनूठी संगीतमय शैली और कथा संरचना तथा पात्रों के बीच अद्भुत संयोजन के लिये दिया गया है। इससे फिल्म को विभिन्न स्तरों पर गतिशीलता मिली है।

## BEST FEATURE FILM

**KAALPURUSH - MEMORIES IN THE MIST (Bengali)**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Producer **JUGAL SUGANDH**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Director **BUDHADEB DASGUPTA**

### CITATION

The award for the Best Feature Film of 2005 is given to the Bengali film **KAALPURUSH - Memories In The Mist (Bengali)** for a rare lyrical style and a unique cohesion of narrative structure and characters that allow it to flow on different planes.



## जुगल झामू सुगन्ध

जुगल झामू सुगन्ध जाने-माने फिल्म निर्माता भानू सुगन्ध के सुपुत्र हैं और अपनी फिल्म निर्माण कम्पनी के रचनात्मक विभाग के अध्यक्ष हैं। स्वप्नेर दिन, जन्मदाता और कालपुरुष जैसी चर्चित बंगला फिल्मों के निर्माण में उनका हाथ रहा है।



## JUGAL JHAMU SUGHAND

Son of well known film producer, Jhamu Sughand, Jugal Sughand is a Commerce graduate and heads the creative department of his family production house, PH. Sughand Productions. He has been the Producer for all three Bengali ventures of his company viz. Swapner Din, Janmadata and Kaalpurush. All the three have won many awards at different Film Festivals.

## बुद्धदेव दासगुप्ता

भारतीय चलचित्रकी कला की महान परम्परा की सर्वाधिक लोकप्रिय हस्ती बुद्धदेव दासगुप्ता की फिल्मों में सामाजिक विषयों और संगीतमय सिने शैली का अद्भुत मिश्रण होता है। इनकी फिल्मों को कई राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में सम्मानित किया जा चुका है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी बुद्धदेव दासगुप्ता अर्थशास्त्र के प्रोफेसर होने के साथ-साथ कवि, लेखक और उपन्यासकार भी हैं। उन्हें भारत के अग्रणी फिल्म निर्देशकों में गिना जाता है।



## BUDDHADEB DASGUPTA

Buddhadeb Dasgupta is one of those few filmmakers who make you proud of the great Indian cinematic tradition. He creates cinema to tell the story of oppression and hope. His reputation as a filmmaker rests as much on the lyrical and poetic style his film making as on the socially relevant themes he chooses to highlight. A Professor of Economics by training, Buddhadeb Dasgupta is considered by critics as one of India's foremost directors today. A multi talented person, a poet, a novelist, a filmmaker, he has moved towards a more poetic cinema, in which the camera framing, compositions, lighting, symbolism all contribute significantly to the evocation of mood and atmosphere.



## निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म का इंदिरा गांधी पुरस्कार

परिणीता (हिन्दी)

निर्माता विधु विनोद चोपड़ा को स्वर्ण कमल एवं रू. 25,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक प्रदीप सरकार को स्वर्ण कमल एवं रू. 25000/- का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2005 का निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म का इंदिरा गांधी पुरस्कार हिंदी फिल्म **परिणीता** को सुयोग्य निर्देशन शैली और आधुनिक सिनेमाई संवेदनशीलता के अनुस्यू एक शास्त्रीय उपन्यास के जीवंत प्रस्तुतीकरण के लिये दिया गया है।

## **INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR**

**PARINEETA (Hindi)**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to Producer **VIDHU VINOD CHOPRA**

Swarna Kamal and a cash prize of RS. 25,000/- to the Director **PRADEEP SARKAR**

### **CITATION**

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director of 2005 is given to the Hindi Language Film **PARINEETA** for the competent directorial style to recreate a classic novel with modern cinematic sensibilities.

## विधु विनोद चोपड़ा

“गांधीगिरी” का यह प्रणेता कश्मीर से है। अर्थशास्त्र में स्नातक की डिग्री हासिल करने के बाद विधु विनोद चोपड़ा ने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान में दाखिला लिया और अपनी फिल्म **मर्डर एट मंकी हिल** के साथ स्नातक की डिग्री हासिल की। इस फिल्म को नेशनल अवार्ड मिला था। विधु चोपड़ा ने फिल्म **सजाये मौत** से अपनी फिल्मी करियर की शुरुआत की। **खामोशी**, **परिन्दा**, **1942-ए लव स्टोरी**, **मुन्ना भाई एमबीबीएस** और **लगे रहो मुन्ना भाई** जैसी फिल्मों से विधु विनोद चोपड़ा फिल्म उद्योग में एक जाना-माना नाम बन गया है।



## प्रदीप सरकार

कोलकता में जन्मे और पले-बढ़े प्रदीप सरकार ने दिल्ली कालेज ऑफ आर्ट्स से 1979 में प्रथम स्थान प्राप्त कर विज्ञापन की दुनिया में अपने कैरियर की शुरुआत की। लगभग 17 वर्षों तक विज्ञापन की मुख्यधारा से जुड़े रहने के बाद उन्होंने विज्ञापन फिल्में बनाना शुरू किया। विज्ञापन फिल्मों के सर्वश्रेष्ठ निर्देशक और कई अन्य पुरस्कार उन्हें मिले हैं। फिल्म **‘परिणीता’** से उन्होंने फीचर फिल्मों के निर्देशन में कदम रखा है।



## VIDHU VINOD CHOPRA

Born and raised in the idyllic paradise state of Kashmir, Vidhu Vinod Chopra earned a degree in Economics and got himself enrolled in the Film and Television Institute of India (FTII). He made his mark right with his graduate film **“Murder at Monkey Hill”** which won the National Award for best short film. His next film **“An Encounter with Faces”** was nominated for an Oscar in the short & non-fiction category.

Vidhu Vinod Chopra made his feature film debut with **“Sazaa-e-Maut”** (The Death Sentence) which won rave reviews **“Khamoshi”**, **“Parinda”**, **“1942-A Love Story”**, **“Kareeb”** and **“Misson Kashmir”** are some of the hit films of Vidhu Vinod Chopra. He turned to comedy with and, together with its sequel has established himself as a man of versatile talent and a Director with a purpose.

## PRADEEP SARKAR

Pradeep Sarkar was born and brought up in Calcutta. He graduated from the Delhi college of Arts with a Gold Medal in 1979 and joined advertising. After 17 years in mainstream advertising, he jumped into ad film making and bagged many prestigious advertising awards including the **‘Best Director of Ad films’** in 2003. He has also made over 1000 television commercials, 15 music videos and a few feature film songs. **‘Parineeta’** is his directorial debut and has been acclaimed as an emotional, visual and musical extravaganza.

## लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फिल्म

### रंग दे बंसती (हिन्दी)

निर्माता यू टी वी मोशन पिक्चर्स एवं राकेश ओमप्रकाश मेहरा पिक्चर्स (प्रा.) लिमिटेड प्रत्येक को स्वर्ण कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक राकेश ओमप्रकाश मेहरा को स्वर्ण कमल एवं रु. 40,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 की सर्वोत्तम लोकप्रिय फिल्म का पुरस्कार **रंग दे बंसती** को एक ऐसी जन अपील की रचना के लिये दिया गया जिसमें नौजवान पीढ़ी के क्रोध को संवेदनशील और रचनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

## BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

### RANG DE BASANTI (HINDI)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.20,000/- each to the Producer **UTV MOTION PICTURES & RAKESH OMPRAKASH MEHRA PICTURES (P) LTD.**

Swarna Kamal and a cash prize of RS.40,000/- to the Director **RAKESH OMPRAKASH MEHRA**

### CITATION

The award for the Best Popular Film of 2005 providing wholesome entertainment is given to the Hindi Language Film **RANG DE BASANTI** for creating popular appeal that captures the angst of the younger generation with compassion and imagination.

## राकेश ओम प्रकाश मेहरा

अमूल के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त डॉक्यूमेंट्री **मामूली राम** और कुछ जानी-मानी कम्पनियों के लिए 250 विज्ञापन फिल्मों के निर्देशन के बाद राकेश ओम प्रकाश मेहरा ने **अक्स** (2001) बनायी जिसमें अमिताभ बच्चन एवं मनोज बाजपेयी ने अभिनय किया था। 2004 में राकेश ने अपनी निर्माण कंपनी स्थापित की। उनकी मुख्य धारा की फिल्म **रंग दे बसंती** ने सिने जगत में हलचल मचा दी।



## यू टी वी मोशन पिक्चर्स

यू टी वी मोशन पिक्चर्स फिल्म और टेलीविजन कार्यक्रम निर्माण क्षेत्र में देश की एक अग्रणी कम्पनी है। रॉनी स्कूवाला के सक्षम नेतृत्व में कम्पनी ने भारतीय फिल्म उद्योग में नई ऊंचाईयों को छुआ है।

## RAKEYSH OMPRAKASH MEHRA

Rakeysh Omprakash Mehra started his career with ad films and commercials. In the span of his career, he also made an award-winning documentary, "**Mamuli Ram**" for the co-operative giant 'Amul' which was an award winning documentary. '**Aks**'-the reflection (2001), starring Amitabh Bachchan and Manoj Bajpai was his debut endeavor. It won him critical acclaim and various awards. In 2004 he set up his own production house, which has begun its journey with the Aamir Khan starrer, '**Rang De Basanti**'.

## UTV MOTION PICTURES

UTV Motion Pictures is one of the top Film and Television production houses of the country. Under the able leadership of Ronnie Screwvala, the company has risen to the position of Industry Leader.



## राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

दैवानामथिल (मलयालम)

निर्माता अरयादान शौकत को रजत कमल एवं रु. 30,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक जयराज को रजत कमल एवं रु. 30,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 की राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार मलयालम फिल्म दैवानामथिल को धार्मिक उन्मादों के समय महिलाओं की परेशानियों को परिलक्षित कर सम्प्रदायिकता से जुड़े मुद्दों के सशक्त प्रस्तुतीकरण के लिये दिया गया है।

## NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

DAIVANAMATHIL (MALAYALAM)

Rajat Kamal and a cash prize of RS. 30,000/- to the Producer ARYADAN SHOUKATH

Rajat Kamal and a cash prize of RS. 30,000/- to the Director JAYARAJ

### CITATION

The Nargis Dutt Award for the Best Feature Film of 2005 on National Integration is given to the Malayalam Film DAIVANAMATTHIL for the powerful representation of a burning communal issue highlighting the plight of women in times of religious intolerance.

## अर्यादन शौकत

अर्यादन शौकत ने कालीकट विश्वविद्यालय से प्राणी विज्ञान में बीएससी की डिग्री हासिल की। बाद में उन्होंने उपन्यास लेखन का काम शुरू किया और अब वे लघु कथा तथा पटकथा लेखन का कार्य करते हैं। वे फिल्म निर्माता के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। मलयालम की अग्रणी पत्रिकाओं में उनकी कई कहानियां प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी कहानियों पर कई फिल्में बन चुकी हैं। ऐसी ही एक पुरस्कार प्राप्त फिल्म है **पदम ओन्नूए: ओरु विलापम** जो शौकत की कहानी *शाहीना* पर आधारित है।



## ARYADAN SHOUKATH

Aryadan Shoukath has done his B.Sc. in Zoology from the Calicut University. He later turned to fiction writing and is now a short story and screenplay writer. He has also been working as a film producer. Shoukath's stories have been published in some of the leading Malayalam periodicals. His short stories have inspired many films including the award winning film **Padam Onnu: Oru Vilapan**, which drew inspiration from his story *Shahina*.

## जयराज

केरल के कोट्टायम में जन्मे जयराज अभी तक 29 फीचर फिल्मों और टेलीफिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं। कारलोबी, वारी, बर्लिन और फ्रांस जैसे अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में उनकी फिल्मों को सराहा गया है। इनकी कई फिल्में राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर पुरस्कार जीत चुकी हैं।



## JAYA RAJ

Born in Kottayam, Kerala, Jaya Raj has made 29 feature film and one tele film so far. His film **Deshadanam** (2000) got the special mention in KARLOVY VARI (CHEC REPUBLIC). **KARUNAM** (2000) was given Golden Peacock award for the best film in Asian competition, at the International Film Festival of India. **SHANTHAM** (2000) was adjudged the best cinematography at DE 3 Continents festival at France. Many of his other films too have won a number of Awards at the National and State levels. **Karunam** (1998) and **Santham** (2001) have also been honoured with V. Shantaram Awards.



## परिवार कल्याण पर आधारित सर्वोत्तम फिल्म

धवामाई धवामिरान्त (तमिल)

निर्माता पी ए शण्मुगम को रजत कमल एवं रु. 30,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक चेरन को रजत कमल एवं रु. 30,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का परिवार कल्याण पर आधारित सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार तमिल फिल्म धवामाई धवामिरान्त कश्मकश में फंसे एक परिवार की स्थिति को सादगीपूर्ण एवं सार्थक कथाशैली में प्रस्तुत करने के लिये दिया गया है।

## BEST FILM ON FAMILY WELFARE

**DHAVAMAI DHAVAMIRANTE (TAMIL)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer **P A SHANMUGAM**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to Director **CHERAN**

### CITATION

The Award for Best Film on family welfare for the year 2005 goes to the Tamil Film **DHAVAMAI DHAVAMIRANTE** for the evocative portrayal of a family caught in trials and tribulations in a simple narrative style.

## पी.ए. षण्मुगम

पी.ए. षण्मुगम एक नवोदित फिल्म निर्माता हैं जिन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत एक बहुचर्चित फिल्म से की है।



## P.A. SHANMUGAM

P.A. Shanmugam made his debut as a Producer with the National Award winning film *Dhavamai Dhavamirunthu* (2005).

## चेरन

निर्देशक तथा पटकथा लेखक चेरन तमिल सिनेमा के जाने-माने निर्देशकों में से एक हैं। उनकी पहली फिल्म **भारती कन्नम्मा** (1997) के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के फिल्म फेयर अवार्ड से सम्मानित किया गया था। उन्होंने कई लोकप्रिय तमिल फिल्मों का निर्देशन किया है और पुरस्कार जीते हैं।



## CHERAN

Director, producer, scriptwriter and actor Cheran is very well known in Tamil cinema. His debut film **Bharathi Kannamma** (1997) got him the Filmfare award for Best Director. He has given many notable Tamil films and has won a number of awards.

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याणए दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियाँ, विकलांग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दों पर आधारित सर्वोत्तम फिल्म

### इकबाल (हिन्दी)

निर्माता **सुभाष घई** को रजत कमल एवं रु. 30,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक **नागेश कुकुनूर** को रजत कमल एवं रु. 30,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोध, नशीले पदार्थों से हानियाँ, विकलांग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दों पर आधारित सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **इकबाल** को एक मूक बधिर नौजवान की चैंपियन क्रिकेट खिलाड़ी बनने की आकांक्षा और प्रयासों के प्रोत्साहात्मक और सशक्त सिनेमाई शैली में प्रस्तुतीकरण के लिये दिया गया है।

**BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC.**

### **IQBAL (HINDI)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer **SUBHASH GHAI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director **NAGESH KUKUNOOR**

### **CITATION**

The Award for the Best Film on Other Social Issues such as Prohibition, Women and Child Welfare, Anti-Dowry, Drug Abuse, Welfare of the Handicapped etc. of 2005 is given to the Hindi Language Film **IQBAL** for its inspiring and cinematically energetic portrayal of a hearing impaired in his aspiration to become a champion cricketer.

## सुभाष घई

सुभाष घई भारतीय सिनेमा का सर्वाधिक जाना-माना नाम है। भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से शिक्षा प्राप्त सुभाष घई ने अभिनेता के रूप में अपना कैरियर शुरू किया था लेकिन बाद में पटकथा लेखन में चले गए। निर्देशक के रूप में **कालीचरन** (1976) उनकी पहली फिल्म थी। फिल्म काफी सफल रही। तब से उन्होंने पीछे पलट कर नहीं देखा है। फिल्म **कर्मा** के लिए उन्हें फिल्मफेयर पुरस्कार प्रदान किया गया था। उनकी बाद की फिल्म **परदेश** और **ताल** ने इंडियन मोशन पिक्चर्स के लिए विदेशी बाजार खोले।

## नागेश कुकुनूर

पेशे से इंजीनियर, नागेश कुकुनूर ने अटलांटा में पर्यावरण सलाहकार के रूप में अपने आकर्षक कैरियर को फिल्मों के लिए त्याग दिया और अपनी निजी बचत से लेखक, निर्माता और निर्देशक के रूप में अपनी पहली फिल्म **हैदराबाद ब्ल्यूज** बनाई। हालांकि, इस फिल्म को भारतीय सिने जगत की पारम्परिक परिभाषा के अनुसार कमर्शियल फिल्म नहीं माना गया। इसके बावजूद इस कम बजट वाली फिल्म ने सबसे ज्यादा कमाई की। इसके बाद से नागेश कुकुनूर ने **बॉलीवुड कालिंग** और **तीन दीवारें** जैसी फिल्मों के निर्माण से मंजिल दर मंजिल सफलता हासिल करते जा रहे हैं।



## SUBHASH GHAI

Subhash Ghai is one of the most renowned names in Indian Cinema. Graduating from the Film and Television Institute of India, Subhash Ghai started his career as an actor but shifted to screenplay writing. **Kalichaaran** (1976) was his directorial debut. The film was a big hit and since then he has not looked back. He got the Filmfare award for his film **'Karma.'** His later films **Pardes** and **Taal** are known as pioneers for creating overseas markets for Indian Motion pictures.

## NAGESH KUKUNOOR

A chemical engineer by profession, Nagesh Kukunoor gave up his lucrative career as an environmental consultant in Atlanta. Using his personal savings he wrote, produced acted and directed his debut film **Hyderabad Blues**. The film became the largest grossing low budget Indian film in English in spite of the fact that the film was not what was traditionally defined as commercial in Indian filmdom. The film has been to several international festivals winning different awards. Nagesh has created a new genre in Indian cinema – the low budget film that breaks the traditional barrier of both commercial and art cinema. Nagesh's later productions include **Bollywood Calling** and the trend setter **Teen Deewarein**.



## पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर आधारित सर्वोत्तम फिल्म

### तुत्तुरी (कन्नड़)

निर्माता **जयमाला रामचन्द्र** को रजत कमल एवं रु. 30,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक **पी शेषाद्रि** को रजत कमल एवं रु. 30,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर आधारित सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार कन्नड़ भाषा की फिल्म **तुत्तुरी** को स्वस्थ पर्यावरण को संरक्षित के संघर्ष में लगे छोटे बच्चों के समूह के प्रस्तुतीकरण के लिये दिया गया है।

## BEST FILM ON ENVIRONMENT CONSERVATION/PRESERVATION

### THUTTURI (KANNADA)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer **JAIMALA RAMCHANDRA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to Director **P SESHADRI**

### CITATION

The Award for The Best Film on Environment Conservation/ Preservation for the year 2005 is given to the Kannada Film **THUTTURI** for its imaginative portrayal of a group of young children who fight to preserve a healthy urban environment.



## जयमाला रामचन्द्र

बहुमुखी प्रतिभा की धनी जयमाला रामचन्द्र ने 13 वर्ष की आयु में एक तुलु फिल्म में बाल कलाकार की भूमिका से अपनी फिल्मी यात्रा शुरू की थी। वे अभी तक 75 फिल्मों में अभिनय कर चुकी हैं और पांच फिल्मों बना चुकी हैं। इसमें पुरस्कार प्राप्त फिल्म **ताई साहेबा** भी शामिल है।

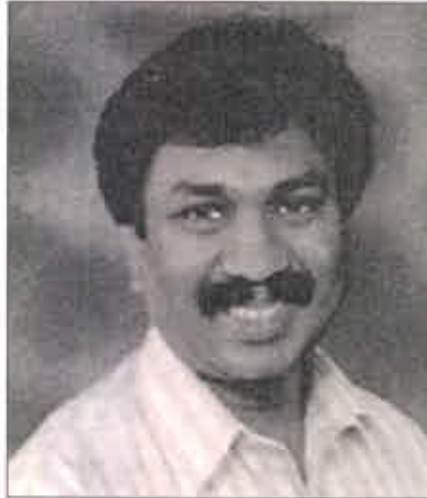


## JAIMALA RAMCHANDRA

A multi faceted personality, Jaimala Ramachandra started as a child artist at the age of 13 in a *Tulu* film and bagged the Best Actress award. She has acted in 75 movies. She entered into film production in 1986 and has produced 5 films so far including the well acclaimed **Thai Saheba** which has won as many as 25 awards.

## पी. शेषाद्रि

कन्नड़ साहित्य में स्नातकोत्तर और पत्रकारिता में डिप्लोमा प्राप्त पी. शेषाद्रि ने पटकथा लेखक तथा संवाद लेखक के रूप में फिल्म जगत में प्रवेश किया। वर्ष 2000 में पुरस्कार प्राप्त फिल्म **मुन्नूडि** से निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखने वाले शेषाद्रि ने तब से पीछे मुड़ कर नहीं देखा है। **अतिथि** (2001) तथा **बेरू** (2004) उनकी अन्य फिल्में हैं।



## P. SHESHADRI

P. Sheshadri is a postgraduate in Kannada Literature and a diploma holder in journalism. After a short stint as Journalist, he entered Film-land in 1990 as a screenplay and dialogue writer. Later, he directed different T.V. Serials and documentaries. In 1995 he became an independent Director of television serials, documentaries and tele-films. His maiden effort as Director of a feature film **MUNNUDI (A Preface)** in the year 2000 brought him great applause for his sensitive approach to cinema. **ATITHI (The Guest-2001)** and **BERU (The Root-2004)** are his other notable films.

## सर्वोत्तम बाल फिल्म

ब्लू अम्ब्रेला (हिन्दी)

निर्माता यू टी वी मोशन पिक्चर्स को स्वर्ण कमल एवं रू 30,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक विशाल भारद्वाज को स्वर्ण कमल एवं रू 30,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम बाल फिल्म का पुरस्कार **ब्लू अम्ब्रेला** को निस्वार्थ भावना और मानवीय संवेदना को गुणों को रेखांकित करती हुई कहानी के काव्यात्मक और चौंकाने वाले दृश्यात्मक रूपांतरण के लिये दिया गया है

## BEST CHILDREN'S FILM

**BLUE UMBRELLA (HINDI)**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.30,000/- to the Producer **UTV MOTION PICTURES**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs.30,000/- to Director **VISHAL BHARDWAJ**

### CITATION

The Award for the Best Children's Film of 2005 is given to the film **BLUE UMBRELLA** for its poetic and visually stunning interpretation of a story highlighting the values of selflessness and compassion.

## विशाल भारद्वाज

1965 में जन्मे दिल्ली युनिवर्सिटी से ग्रेजुएट, विशाल भारद्वाज ने अपना फिल्मी कैरियर संगीत निर्देशक के रूप में शुरू किया और फिल्म **माचिस** के संगीत के लिए फिल्म फेयर अवार्ड और फिल्म **गॉड मदर** के लिए नेशनल अवार्ड जीता। बाद में फिल्म **मकड़ी** से उन्होंने निर्देशन की दुनिया में कदम रखा। पुरस्कार प्राप्त फिल्म **मकबूल** और **ओमकारा** उनकी अन्य चर्चित फिल्में हैं।



## यू टी वी मोशन पिक्चर्स

यू टी वी मोशन पिक्चर्स फिल्म और टेलीविजन कार्यक्रम निर्माण क्षेत्र में देश की एक अग्रणी कम्पनी है। रॉनी स्कूवाला के सक्षम नेतृत्व में कम्पनी ने भारतीय फिल्म उद्योग में नई ऊंचाईयों को छुआ है।

## VISHAL BHARDWAJ

Born on 4<sup>th</sup> August, 1965, Vishal Bhardwaj, has graduated from Delhi University. He won the Filmfare Award, as Music Director for '**MACHCHIS**' and the National Award for the music of '**GOD MOTHER**' (1999).

He made his debut as Director with '**MAKDEE**' a film for children, which won the 2<sup>nd</sup> Best Adult Jury Award-CICFF (2002) and the Best Film – Open Doek Film Festival, Belgium 2003. **Maqbool** and **Omkara** are his other well known and widely acclaimed films

## UTV MOTION PICTURES

UTV Motion Pictures is one of the top Film and Television production houses of the country. Under the able leadership of Ronnie Screwvala, the company has risen to the position of Industry Leader.

## सर्वोत्तम निर्देशन

राहुल धोलकिया (परजानिया - अंग्रेजी)

निर्देशक राहुल धोलकिया को स्वर्ण कमल एवं रु. 50,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम निर्देशन का पुरस्कार अंग्रेजी भाषा की फिल्म **परजानिया** में साम्प्रदायिक द्वेष और हिंसा के कठिन दौर में फंसे समकालीन लोगों के मानवीय द्वंद्वों के सशक्त फिल्मीकरण के लिये दिया गया है।

## BEST DIRECTION

**RAHUL DHOLAKIA (PARZANIA – ENGLISH)**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to Director **RAHUL DHOLAKIA**

### CITATION

The Award for the Best Direction of 2005 is given to **RAHUL DHOLAKIA** for the compelling documentation of contemporary human lives trapped in difficult times of communal hatred and violence in his English Language Film **PARZANIA**.

## राहुल ढोलकिया

विज्ञापन फिल्मों से अपना कैरियर शुरू करने वाले राहुल ढोलकिया ने फिल्म निर्माण में न्यूयॉर्क से स्नातकोत्तर की उपाधि लेने के बाद वृत्तचित्रों, टीवी शो आदि के निर्माण और निर्देशन में कदम रखा। **कहता है दिल बार बार** फिल्म से उन्होंने हिन्दी सिनेमा में प्रवेश किया। इस फिल्म में मुख्य अभिनेता परेश रावल थे। **परजनियां** उनकी दूसरी फीचर फिल्म है।



## RAHUL DHOLAKIA

Rahul Dholakia entered the film world with Ad films and documentaries. Later he went to New York to pursue his Masters in Film Making. After graduating he got into producing and directing documentaries. After graduating, he produced a series of documentaries for Channel 4, London and directed for some other documentaries including the award winning 'Teenage Parents in New York'. He made his first feature in Hindi, **Kehtaa Hai Dil Baar Baar**, with Paresch Rawal & Jimmy Shergill. **Parzania** is his second feature and has received critical acclaim.



## सर्वोत्तम अभिनेता

### अमिताभ बच्चन

अभिनेता **अमिताभ बच्चन** को रजत कमल एवं रु. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार हिन्दी फिल्म **ब्लैक** में शराब की लत से उबर कर सुधरे एक ऐसे इन्सान के सशक्त अभिनय के लिये दिया गया है जो शारीरिक रूप से अपंग एक बच्ची को एक नया जीवन प्रदान करने के संघर्ष में जुटा है।

## BEST ACTOR

### AMITABH BACHCHAN

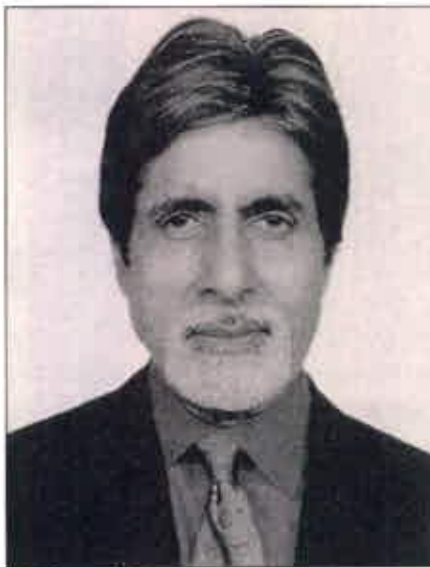
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Actor **AMITABH BACHCHAN**

### CITATION

The Award for the Best Actor of 2005 is given to **AMITABH BACHCHAN** in the Hindi Film **BLACK** for his dramatic rendition of reformed alcoholic who struggles to give a physically handicapped child a new life.

## अमिताभ बच्चन

भारतीय सिनेमा के बिग बी को किसी परिचय की जरूरत नहीं है। इन्होंने सात हिन्दुस्तानी से अभिनय की दुनिया में कदम रखा था और अपनी इस पहली ही फिल्म में अभिनय से लोगों का दिल जीता था। बीबीसी द्वारा कराए गए एक मतदान में इन्हें **स्टार ऑफ द मिलेनियम** चुना गया। इसमें कोई शक नहीं है कि अमिताभ बच्चन भारतीय सिनेमा की सबसे ऊंची हस्ती हैं और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इनकी लोकप्रियता है। उनके क्विज़ शो कौन बनेगा करोड़पति ने टेलीविजन की दुनिया में एक इतिहास रच डाला। अमिताभ बच्चन 1984 से 1987 तक संसद के सदस्य रहे। इन्हें 1984 में पद्मश्री एवं 2001 में पद्मभूषण से सम्मानित किया जा चुका है।



## AMITABH BACHCHAN

Amitabh Bachchan needs no introduction. Born on 11<sup>th</sup> October, 1942 at Allahabad, U P, he made his debut in **SAAT HINDUSTANI**, in 1969. He has so far acted in more than 100 films with a large number of hits. Today, he is regarded as the tallest acting personality of Hindi Cinema.

His T V Quiz show '**KAUN BANEGA CROREPATI**' created history in the annals of Television.

Amitabh Bachchan has been a Member of Parliament from 1984-1987. He was conferred the '**PADMASHREE**' in 1984 and '**PADMABHUSHAN**' in 2001.

Amitabh Bachchan won the award for '**BEST PROMISING ACTOR**' for his debut film '**SAAT HINDUSTANI**' in 1970. Since then he has not looked back. Awards and honours have been coming his way quite often. He has been voted '**STAR OF THE MILLENNIUM**' through a poll conducted worldwide by BBC.

## सर्वोत्तम अभिनेत्री

### सारिका

अभिनेत्री **सारिका** को रजत कमल एवं रू. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार सारिका को अंग्रेजी फिल्म **परजानिया** में एक ऐसी संघर्षशील माँ के चित्रण के लिये दिया गया है जो साम्प्रदायिक तनाव के माहौल में न्याय प्राप्त करने में जी जान से जुटी हुई है।

## BEST ACTRESS

### SARIKA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Actress **SARIKA**

### CITATION

The Award for the Best Actress of 2005 is given to **SARIKA** in the English Language Film **PARZANIA** for her rendition of a crusading mother who fights for justice against all adversity in a communally charged environment.

## सारिका

बम्बई में पली-बढ़ी सारिका फिल्म फेयर द्वारा आयोजित प्रतिभा प्रतियोगिता के जरिए फिल्मों में आई और 4 वर्ष की आयु में अभिनय से अपना कैरियर शुरू किया। उनकी पहली फिल्म **हमराज** थी, जिसका निर्देशन बी.आर. चोपड़ा ने किया था। युवा नायिका के रूप में उन्होंने **कागज की नाव** और **गीत गाता चल** तथा अन्य फिल्मों में अभिनय किया। स्वर्गीय श्री बासु भट्टाचार्य के तहत उन्होंने सहायक निर्देशक के रूप में भी काम किया। मद्रास आने के बाद, उन्होंने ध्वनि निर्देशक तथा परिधान डिजाइनर के रूप में भी काम किया और पीरियड फिल्म **हे राम** के लिए सर्वश्रेष्ठ कॉस्ट्यूम डिजाइनर का राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। सारिका थियेटर में भी सक्रिय रही हैं।



## SARIKA

Born and brought up in Bombay, Sarika came to films through a Talent Contest held by Film Fare. She started her acting career at the age of 4. Her first film was **'Hamraz'** directed by B.R. Chopra. She worked as a child artiste in many other films.. **'Kagaz ki Nao'** was her first film in an adult role as a leading lady. It was followed by **'Geet Gata Chal'** and many other films. She has worked in Marathi, Gujarati and Bengali language films too. She has also worked as an assistant director under the late Sri Basu Bhattacharya.

After shifting to Madras, she switched careers and worked as Sound Director and Costume Designer for more than 30 films. In 2000 she won the National award as the Best Costume Designer for **'Hey Ram'**, a period film. She has also been actively involved in theatre.

## सर्वोत्तम सहअभिनेता

### नसीरुद्दीन शाह

सहअभिनेता **नसीरुद्दीन शाह** को रजत कमल एवं रू 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम सहअभिनेता पुरस्कार नसीरुद्दीन शाह को फिल्म **इक्रबाल** में एक ऐसे प्यारे इन्सान के सफल चरित्रण के लिये दिया गया है जिसे शराब पीने की लत छोड़ पाना एक बेहद मुश्किल काम लगता है लेकिन फिर भी वह एक ग्रामीण नौजवान को क्रिकेट प्रशिक्षण दे उसे सफलता के शिखर पर पहुंचा कर अपना स्वयं का सपना सच होते देखता है और स्वयं को विजयी महसूस करता है।

## BEST SUPPORTING ACTOR

### NASEERUDDIN SHAH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Supporting Actor **NASEERUDDIN SHAH**

### CITATION

The Award for the Best Supporting Actor of 2005 is given to **NASEERUDDIN SHAH** in the Hindi Language Film **IQBAL** for his competent depiction of a endearing man who finds it difficult to give up his addiction to alcohol but still emerges vicarious as his protégé the young village lad conquers his dream.



## नसीरुद्दीन शाह

भारतीय फिल्म जगत की एक और सुप्रसिद्ध हस्ती है, नसीरुद्दीन शाह। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से दीक्षा और नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा तथा भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से शिक्षा प्राप्त नसीरुद्दीन शाह रंगमंच और सिनेमा दोनों में अपना किरदार बखूबी निभा सकते हैं। **सर्वश्रेष्ठ अभिनेता** का पुरस्कार वे चार बार जीत चुके हैं। उन्हें 1980 और 1985 में सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए **नेशनल अवार्ड** तथा **वेनिस फिल्म समारोह का अवार्ड** मिल चुका है।



## NASEERUDDIN SHAH

Naseeruddin Shah is another household name in the Indian film arena. A graduate from Aligarh Muslim University and alumni of National School of Drama and the Film & Television Institute of India he is quite at ease both in the theatre and the cinema. Awards have come to him frequently. Four times **Filmfare Award** winner for **Best Actor**, he got the **National Award for Best Acting in 1980 and 1985** and Best Actor at the Venice Film Festival.

## सर्वोत्तम सहअभिनेत्री

### उर्वशी

सहअभिनेत्री **उर्वशी** को रजत कमल एवं रु. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम सहअभिनेत्री पुरस्कार उर्वशी को मलयालम फिल्म **अच्चुविन्टे अम्मा** में एक ऐसी बहादुर महिला के अभिनय के लिये दिया गया जो एक दत्तक संतान के लिए अपना पूरा प्यार और जीवन प्रतिबद्ध कर देती है।

## BEST SUPPORTING ACTRESS

### OORVASHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Supporting Actress **OORVASHI**

### CITATION

The Award for The Best Supporting Actress of 2005 goes to **OORVASHI** in the Malayalam Film **ACHHUVINTE AMMA** for the highly credible performance of a brave woman who pledges her life and love for an adopted child.

## उर्वशी

अभिनय तो इन्हें विरासत में मिला है। इनके पिता वी. परमेश्वरन नायर और माँ विजयलक्ष्मी रंगमंच के जाने-माने कलाकार हैं। सुविख्यात पटकथा लेखक के. भाग्यराज ने सबसे पहले इनकी प्रतिभा को पहचाना और धूम मचा देने वाली तमिल फिल्म **मुन्दनई मुदिचु** से उर्वशी लोकप्रिय फिल्म स्टार के रूप में उभरीं। उर्वशी आज मलयालय सिनेमा की भी सुविख्यात अभिनेत्री हैं और कई पुरस्कार जीत चुकी हैं।



## OORVASHI

Oorvasi, born at Chennai, is the daughter of well known drama artists Shri V Parameswaran Nair and Smt Vijayalakshmi. She did her schooling at Chennai.

Well known best script writer K Bagyaraj spotted Oorvasi in her school days. Oorvasi became a popular heroin through the blockbuster '**Mundanai Mudichu**' (Tamil). With a thirst to do varieties, Oorvasi entered Malayalam films through Balachandra Memon's '**Ente Ammu Ninte Chakki Avalude Thulasi**' and gained the top spot in Malayalam film industry. Urvasi bagged the Kerala State Award in 1990 (*Mazhavil Kavadi, Varthamanakalam*), in 1991 (*Thalayana Manthram*), in 1992 (*Mukha Chithram, Bharatham, Katinjool Kalayanam*) and in 1996 (*Kazhakam*).

Oorvasi has also bagged the coveted '**Kalaimani**' Tamil Nadu State Award and various other awards including the Filmfare Award.

## सर्वोत्तम, बाल कलाकार

साई कुमार

बाल कलाकार साई कुमार को रजत कमल एवं रू. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार साई कुमार को **बोम्मलाटा - ए बेलीफुल आफ ड्रीम्स** में एक ऐसे बालक के चरित्र को अत्यंत प्रभावकारी ढंग से निभाने के लिये दिया गया है जिसके दिल में स्कूल जाने की दिली लगन है और अंततः उसका सपना साकार होता है।

## BEST CHILD ARTIST

SAI KUMAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000/- to Child Artist SAI KUMAR

### CITATION

The award for the Best Child Artiste of 2005 is given to **SAI KUMAR** for the Telugu Film **BOMMALATA – A BELLYFUL OF DREAMS** for his haunting performance as a child who realises his burning desire to access school education.

## साई कुमार

साई कुमार हैदराबाद के एक छोटे से कस्बे में रहने वाले एक नाई का बेटा है और उसे अभिनय का कोई अनुभव नहीं है। उसने नौ साल के रामू की भूमिका बड़े शानदार तरीके से निभाई है। रामू की महत्वाकांक्षाएं उसकी पहुंच के बाहर हैं। अपने आस-पास के माहौल के अनुसार साई कुमार के अभिनय में भोलापन और आकर्षण दोनों ही हैं। अपने चुलबुलेपन और भोले आकर्षण के जरिए साई कुमार ने इस कहानी की मूल भावना को बखूबी अपने छोटे से कर्णों पर डोया है।



## SAI KUMAR

A son of a barber from a small suburb of Hyderabad, Sai Kumar is an untrained actor with no acting experience. He has successfully portrayed Ramu- a 9 year old boy with aspirations beyond his means. Sai Kumar's acting resonates a charm and innocence particular to his surroundings. With a mixture of street smartness and endearing charm, Sai Kumar effortlessly carries the film on his little shoulders and defines the very nature of the fable.



## सर्वोत्तम पार्श्व गायक

नरेश अय्यर

पार्श्व गायक **नरेश अय्यर** को रजत कमल एवं रु. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम पार्श्व गायक का पुरस्कार नरेश अय्यर को **रंग दे बंसती** फिल्म में गीत **रू-बरू** के उत्प्लासपूर्ण और मधुर गायन के लिये दिया गया है।

## BEST MALE PLAYBACK

**NARESH IYER**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Male Playback Singer **NARESH IYER**

### CITATION

The award for the Best Male Playback Singer of 2005 is given to **NARESH IYER** in **RANG DE BASANTI**, for his melodious rendering of a lilting song “**ROO BA ROO**” that adds exuberance to the film.

## नरेश अय्यर

इसे किरमत ही कहेंगे कि उन्होंने एक ऐसे टीवी टैलेंट शो में भाग लिया, जिसमें ए.आर. रहमान भी एक निर्णायक थे। नरेश रहमान की नजरों में चढ़ गए और उन्होंने तमिल फिल्म **अन्वे औरुयिरे** के एक सुपरहिट गीत से नरेश अय्यर को एक मौका दिया। बस, यही से शुरू हुई इनकी सफलता की नयी यात्रा। नरेश ने अनेक विविधतापूर्ण गीत गाये हैं। कर्नाटक एवं हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में सुशीला मणि एवं चिन्तामणि गोरे इनके गुरु रहें हैं।



## NARESH IYER

Naresh Iyer, the 25 year old singer from Mumbai, accidentally landed up at a talent show. After being rejected from the final rounds of Channel V super singer contest which the famed A.R. Rahman as one of the judges, Naresh was promised a recording by Rahman. He got the promised chance and his first superhit was a song from a Tamil movie, **Anbe Aaruyire**. From then on, there has been no looking back. Naresh has sung a variety of songs ranging from ballads to rebellious tracks displaying an unlimited range of improvisations, thanks to his rigorous training in Carnatic as well as Hindustani classical music. His first teachers include **MRS. SUSHILA MANI AND MR. CHINTAMANI GORE.**

## सर्वोत्तम पार्श्व गायिका

श्रेया घोषाल

पार्श्वगायिका श्रेया घोषाल को रजत कमल एवं ₹. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का पुरस्कार श्रेया घोषाल को हिन्दी फिल्म **पहेली** में **अपने आंसू पीने के लिए** गीत के प्रभावशाली गायन के लिये दिया गया है। इस गीत में हिन्दी फिल्म संगीत के शास्त्रीय और लोकप्रिय स्मों का अनूठा संतुलन है।

## BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

**SHREYA GHOSHAL**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Female Playback Singer **SHREYA GHOSHAL**

### CITATION

The award for the Best Female Playback Singer of 2005 is given to **SHREYA GHOSHAL** in the Hindi Film **PAHELI** for her evocative rendition of a song "**APNE AANSOO PEENE KE LIYE**" that treads the fine balance between the classical and popular genre of Hindi film music.

## श्रेया घोषाल

अंग्रेजी साहित्य में स्नातक श्रेया घोषाल ने चार साल की उम्र से ही संगीत सीखना शुरू कर दिया था और छह साल की उम्र से हिन्दुस्तान शास्त्रीय गायन में प्रशिक्षण लेना शुरू किया। विभिन्न कलामंचों पर अपनी गायन कला के जरिए पुरस्कार जीतने के बाद श्रेया ने बच्चों के टीवी धारावाहिक **सा रे गा मा** में जीत हासिल की। **देवदास** से फिल्मों में कदम रखने वाली श्रेया की नजरें अब नई ऊंचाइयों पर हैं। श्रेया ने न केवल हिन्दी अपितु तमिल, तेलुगु, कन्नड़, बंगला, नेपाली, भोजपुरी, उड़िया एवं असमिया गाने भी गाये हैं। श्रेया इससे पहले भी राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं।



## SHREYA GHOSHAL

Born on 12<sup>th</sup> March, 1984 Shreya Ghoshal is a graduate with English literature she started learning music, mainly Bengali songs, at the age of 4. At the age of 6, she started getting formal training in Hindustani Classical. Later in January, 1995 she won the All India Light Vocal Music Competition at New Delhi. She came into limelight with her winning the Children's Special of Sa Re Ga Ma. In March, 1999, Director Sanjay Leela Bhansali and Music Director Ismail Darbar picked her up for playback singing for the character of Paro, played by Aishwarya Rai, in **DEVIDAS**. It was her debut film. Since then she has been continuously working and has recorded with many music directors. She has rendered film songs not only in Hindi but also in Tamil, Telugu, Kannada, Bengali, Nepali, Bhojpuri, Assamese, Oriya etc..and has many hits to her credit and has won a number of Awards.

## सर्वोत्तम छायांकन

### मधु अम्बट

छायाकार **मधु अम्बट** को रजत कमल एवं रु. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रयोगशाला प्रसाद फिल्म लेबोरेटिरिज़, चेन्नई

प्रसाद फिल्म लेबोरेटिरिज़, चेन्नई को रजत कमल एवं रु. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम छायांकन का पुरस्कार मधु अम्बट को तमिल फिल्म **श्रृंगारम** के छायांकन में तकनीकी उत्कृष्टता के लिये दिया गया है। फिल्म की फ्रेमिंग, प्रकाश व्यवस्था और फिल्मीकरण की यह उत्कृष्टता पूरी फिल्म में झलकती है।

## BEST CINEMATOGRAPHY

### MADHU AMBAT

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Cameraman **MADHU AMBAT**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Laboratory **PRASAD FILM LABORATORIES, CHENNAI**

### CITATION

The award for Best Cinematography of 2005 is given to **MADHU AMBAT** for the Tamil Film **SRINGARAM** for the technical brilliance, which is evident in the framing, lighting and execution through out the film.



## मधु अम्बट

मधु अम्बट ने 1973 में भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से चलचित्रकी में गोल्ड मैडल के साथ दीक्षा ली। इनकी कई फिल्मों को राज्य पुरस्कारों के अलावा संस्कृत फिल्म आदि शंकराचार्य को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।



## MADHU AMBAT

Madhu Ambat was born 6<sup>th</sup> March, 1950. He graduated in 1973 from the Film & Television Institute of India, Poona with Diploma in (Motion Picture Photography) with a Merit Scholarship. In 1984 he received the National Award for Best Colour Photography for the Sanskrit Film "Adi Sankaracharya". Madhu Ambat has received several Awards for Best Cinematography both in Black and White and Colour, for his different films.

## सर्वोत्तम पटकथा

प्रकाश झा, श्रीधर राघवन एवं मनोज त्यागी

पटकथा लेखकों प्रकाश झा, श्रीधर राघवन एवं मनोज त्यागी प्रत्येक को रजत कमल एवं ₹ 3,333/- का नकद पुरस्कार प्रत्येक को

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार प्रकाश झा, श्रीधर राघवन और मनोज त्यागी को फिल्म अपहरण की सटीक पटकथा के लिये दिया गया है, जो दर्शकों को बांधे रखने के साथ-साथ पूरी फिल्म को गति प्रदान करती है।

## BEST SCREENPLAY

**PRAKASH JHA, SHRIDHAR RAGHAVAN & MANOJ TYAGI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.3,333/- each to Screenplay Writers **PRAKASH JHA, SHRIDHAR RAGHAVAN & MANOJ TYAGI**

### CITATION

The award for the Best Screenplay for 2005 is given to **PRAKASH JHA, SHRIDHAR RAGHAVAN & MANOJ TYAGI** in **APAHRAN** for creating a crisp screenplay that is riveting and renders pace to the entire film.

## प्रकाश झा

भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से फिल्म संपादन में प्रशिक्षित प्रकाश झा आज भारत में एक स्वतंत्र फिल्म निर्माता का दर्जा हासिल कर चुके हैं। इनकी फिल्मों को सामयिक भारतीय समाज के मुद्दों और समस्याओं को बड़े संवेदनशील तरीके से प्रस्तुत करने के लिए जाना जाता है।



## श्रीधर राघवन

पत्रकारिता से पटकथा लेखन में आए हैं। उन्होंने **बाम्बे टाइम्स** और **मिड डे** में व्हांग्य स्तम्भकार के रूप में भी काम किया है। **खाकी**, **ब्लफ मास्टर** जैसी फिल्मों तथा **सीआईडी** तथा **आहट** जैसे टीवी धारावाहिकों में उन्होंने अपने कौशल का परिचय दिया है।



## मनोज त्यागी

मनोज त्यागी ने **सट्टा**, **आन**, **अग्निपंख**, **पेज 3** और **कार्पोरेट** जैसी फिल्मों में पटकथा लेखन किया है।



## PRAKASH JHA

Prakash Jha is a multiple award winning independent Film Maker from India. Trained as a Film Editor at the Film & Television Institute of India, he has produced and directed 8 Feature Films, over 25 Documentaries, 2 Featurettes and 3 Series for Television.

Prakash Jha won the highest National Award, the GOLDEN LOTUS for the Best Feature Film of the year – 1985 for his film **DAMUL – Bonded until Death**. He has also won the Golden Lotus for the Best Documentary of the year 2002 for **SONAL** – a documentary on dancer Sonal Mansingh. Most recently he has won the National Award for the Best Feature Film on Other Social Issues for **Gangaajal (2004)**. Including these, he has won over half a dozen National for his other films. From hard hitting socially relevant themes depicted in realistic style to the dramatic genre of artistic commercial cinema – Jha's films have generated considerable response from critics and audiences both.

## SHRIDHAR RAGHAVAN

Shridhar Raghavan's writing credits include **Khakee** and **Bluffmaster** and the TV serials **CID** and **Aahat**. A journalist turned scriptwriter, he has also been a humour columnist with **Bombay Times** and **Midday**. He is currently working on films for **Rajkumar Santoshi**, **Rohan Sippy** and **Sriram Raghavan**.

## MANOJ TYAGI

Manoj Tyagi's writing work includes films like **Satta**, **Aan**, **Agnipankh**, **Page 3** and **Corporate**. Currently he is working on two screenplays to be directed by **Vikram Bhatt**.

## सर्वोत्तम ध्वनि

### नकुल कामते

अंतिम मिश्रित ट्रेक के लिए ध्वनि आलेखक **नकुल कामते** को रजत कमल एवं 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का पुरस्कार नकुल कामते का हिंदी **रंग दे बसंती** में एक ऐसी ध्वनि डिजाइन के लिए दिया गया है जिससे फिल्म की प्रभावोत्पकता को बल मिला है।

## BEST AUDIOGRAPHY

### NAKUL KAMTE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Re-Recordist of The Final Mixed Track **NAKUL KAMTE**

### CITATION

The award for the Best Audio-graphy of 2005 is given to Re-Recordist of the Final Mixed Track **NAKUL KAMTE** for the Hindi Film **RANG DE BASANTI** for creating a vibrant sound design that effectively supports the graph of the film.

## नकुल कामते

ध्वनि तकनीकों से नकुल का परिचय एक विदेशी वाद्य-समूह के लिए ध्वनि मिश्रण के जरिए हुआ। सन 1986 में भारत लौटने के बाद उन्होंने म्यूजिक रूम और एक अन्य संगीत स्टूडियो के निर्माण में अपना सहयोग दिया। कई संगीत अलबमों और टी.वी. विज्ञापनों में ध्वनि मिश्रण के बाद नकुल ने फीचर फिल्मों में कदम रखा। **दस**, **भोपाल एक्सप्रेस**, **लगान**, **दिल चाहता है**, **अरमान** और **लक्ष्य** उनकी कुछ प्रमुख फिल्में हैं।



## NAKUL KAMTE

Nakul's association with sound began in the early 80s, mixing live shows with the well known foreign band,. Returning to India in 1986., he helped set up The Music Room and was also instrumental in setting up Magikraft Studio, a professionally designed facility by John Storyk. Extremely talented Nakul has recorded and mixed numerous albums and over 3,000 T.V. commercials, from where he moved on to films. Nakul has been associated with movies like **"Dus"**, **"Bhopal Express"**, **"Lagaan"**, **"Dil Chahta Hai"**, **"Armaan"** and Farhaan Akhtar's **"Lakshya"**



## सर्वोत्तम संपादन

पी एस भारती

संपादक **पी एस भारती** को रजत कमल एवं रु. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम संपादन का पुरस्कार **रंग दे बंसती** के पी एस भारती को एक बहुआयामी दृश्य संरचना और फिल्म को ऐसी सराहनीय गति प्रदान करने के लिये दिया गया है जिससे फिल्म को उच्च स्तर की प्रभावोत्पत्कता मिली है।

## BEST EDITING

**P S BHARATHI**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Editor **P S BHARATHI**

### CITATION

The award for Best Editing for the year 2005 is given to Editor **P S BHARATHI** of **RANG DE BASANTI (HINDI)** for creating a commendable pace and multi-layered visual design that heightens the impact of the film.

## भारती पी.एस.

पी.एस. भारती ने विज्ञापन की दुनिया से होते हुए फिल्मी दुनिया का दरवाजा खटखटाया और निर्माण सहायक, पात्र निर्देशक से लेकर सम्पादन जैसे कई कार्यों को अंजाम दिया है। **अक्स-द रिफ्लेक्शन** से उन्होंने फिल्मी दुनिया में कदम रखा। भारती को अनेक पुरस्कार मिले हैं।



## P.S. BHARATHI

Bharathi P.S. joined the Ad film industry after doing her B.Sc. She took a post-graduate diploma in Mass Communications and worked a number of reputed companies she specialized in production, casting director and subsequently acquired a penchant for film editing. She made her debut in Movies as Editor of film '**Aks-The Reflection**'. She has worked as Creative Producer and Editor of '**Rang De Basanti**'. Bharathi has various awards to her credit.

## सर्वोत्तम कला निर्देशन

### चन्द्रवदन बी मोरे

कला निर्देशक **चन्द्रवदन बी मोरे** को रजत कमल एवं रु. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 के लिये सर्वोत्तम कला निर्देशन का पुरस्कार **सी बी मोरे** को फिल्म **ताजमहल** में मुगलकालीन शानशौकत की पुनर्रचना कर फिल्म को जीवंत बनाने के लिये दिया गया है।

## BEST ART DIRECTION

### CHABDRAVADAN B MORE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Art Director **C B MORE**

### CITATION

The award for the Best Art Direction of 2005 is given to **C B MORE** in **TAJ MAHAL** for effectively recreating the Mughal period and rendering life to an era.

## चन्द्रवदन बी. मोरे

सन् 1971 में जन्मे चन्द्रवदन बी. मोरे ने रहेजा फाइन आर्ट कॉलेज से फाइन आर्ट्स में डिग्री ली और कला निर्देशक के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत की। उन्होंने कई टेलीफिल्मों और धारावाहिकों में कला निर्देशन किया है। **रोग, ऐसा क्यों होता है, उत्सव और आमची मुम्बई** उनकी कुछ प्रमुख फिल्में हैं।



## CHANDRAVADAN B. MORE

Born in 1971, Chandravadan B. More took a degree in Fine Arts from the Raheja Fine Art College and started his career as Art Director. He has given art direction in a number of telefilms and serials. **Rog, Aisa Kyon Hota Hai, Utsav, and Amchi Mumbai** are some of his other notable films.

## सर्वोत्तम वेशभूषाकार

अन्ना सिंह (ताजमहल - एन ईटरनल लव स्टोरी के लिए ) एवं सब्यसाची मुखर्जी (ब्लैक के लिए)

प्रत्येक को रजत कमल एवं रू 5,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम वेशभूषाकार का पुरस्कार अन्ना सिंह को फिल्म ताजमहल - एन इटरनल लव स्टोरी में इतिहासकालीन फिल्म की मूल आत्मा के अनुसूच्य पोशाकों की संरचना और सब्यसाची मुखर्जी को फिल्म ब्लैक में ऐसी कल्पनाशील पोशाकों की रचना के लिये दिया गया है जो फिल्म के मिजाज और परिवेश को उभारती हैं।

## BEST COSTUME DESIGNER

**ANNA SINGH (FOR TAJ MAHAL- AN ETERNAL LOVE STORY ) & SABYACHI MUKHERJEE (FOR BLACK)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- each to Costume Designer **ANNA SINGH (FOR TAJ MAHAL) & SABYACHI MUKHERJEE (FOR BLACK)**

### CITATION

The award for the Best Costume Designer of 2005 is given to **ANNA SINGH** for **TAJ MAHAL- AN ETERNAL LOVE STORY** for creating costumes true to the spirit of a period film, and to **SABYACHI MUKHERJEE** for **BLACK** for his imaginative creations that enhanced the mood and added to ambience of the film.



## अन्ना एस. सिंह

जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स से टेक्सटाइल कल्चर तथा कमर्शियल आर्ट में गोल्ड मैडलिस्ट अन्ना एस. सिंह फेमिना मिस इंडिया सौन्दर्य प्रतियोगिता के आधिकारिक डिजाइनर रह चुकी हैं। इन्होंने लगभग 550 फिल्मों में जाने-माने अभिनेताओं और अभिनेत्रियों के लिए परिधान डिजाइन किए हैं।



## सब्यसाची मुखर्जी

1999 में 3 पुरस्कारों के साथ राष्ट्रीय फैशन टेक्नोलॉजी संस्थान से दीक्षा प्राप्त सब्यसाची मुखर्जी ने फेमिना ब्रिटिश काउंसिल का सम्मानित युवा भारतीय पुरस्कार जीता और एक जाने-माने डिजाइनर के साथ इन्टरशिप के लिए लंदन गए। तब से उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा है। 2002 में सब्यसाची ने इंडिया फैशन वीक में भाग लिया तथा उन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस में अत्यंत सराहना मिली। उन्हें मिलन फैशन वीक 2004 में आमंत्रित किया गया तथा सिंगापुर की पत्रिका एशिया इन्कार्पोरेटेड ने इन्हें एशिया के सर्वाधिक दस प्रभावी भारतीयों में से एक चुना।



## ANNA S. SINGH

Anna S. Singh is a gold medalist from JJ School of Arts, Mumbai. Anna has been associated with Femina Miss India beauty pageant for 5 years and has created several wardrobes for **Miss India**, **Miss Universe** and **Miss World**. Working on high profile celebrity wardrobes and costumes for films for 15 years, he has so far done 550 films, designing costumes for various mega-actors and mega-stars of the Indian film Industry.

## SABYACHI MUKHERJEE

Sabyachi Mukherjee graduated from the National Institute of Fashion Technology, India in 1999 with three Major Awards. In early 2001 Sabyachi won the Femina British Council most outstanding young Designer of India award, which took him to London for an internship with Georgina Von Etzdorf, an eclectic designer based in Salisbury. In 2002, Sabyasachi participated at the India Fashion Week where his debut collection earned him rave reviews from the national and international press.

Recently he earned the distinction of being the only Indian designer invited to showcase at the Milan Fashion Week 2004 and was voted by Asia Inc., a Singapore based Business magazine as one of the ten most influential Indians in Asia.

## सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

### लालगुडी जयरमन

संगीत निर्देशक **लालगुडी जयरमन** को रजत कमल एवं रु. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन का पुरस्कार लालगुडी जयरमन को **श्रृंगारम** में भारतीय वाद्ययंत्रों का कुशल इस्तेमाल कर नृत्य और संगीत की श्रेष्ठ परम्पराओं के एक युग का जीवंत रूप से चित्रण करने के लिये दिया गया है।

## BEST MUSIC DIRECTION

### LALGUDI JAYARAMAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to  
Music Director (Songs and Background Music Score) **LALGUDI JAYARAMAN**

### CITATION

The award for the Best Music Direction of 2005 is given to **LALGUDI JAYARAMAN** for the Tamil Film **SRINGARAM** for bringing alive an era of great musical and dance tradition through the deft use of Indian musical instruments.

## लालगुडी जयरमन

कर्नाटक संगीत के क्षेत्र में लालगुडी जयरमन मधुरता, ताल, वॉयलिन वादन में महारत तकनीक और संगीतमय उत्कृष्टता का नाम है।

महान संगीतकार संत त्यागराज की शानदार शिष्य परम्परा में जन्मे और संगीत के माहिल मे पले-बढ़े तथा अपने स्वर्गीय पिता श्री वी.आर. गोपाल अय्यर से संगीत की शिक्षा प्राप्त श्री लालगुडी जयरमन को कर्नाटक संगीत विरासत में मिला है।

उन्होंने संगीत के क्षेत्र में अपना कैरियर 12 वर्ष की आयु में शुरू किया। तीक्ष्ण कल्पना शक्ति, तत्काल समझने की क्षमता और कर्नाटक संगीत के महान संगीतकारों की वैयक्तिक शैली को अपनाने की असाधारण कुशलता से लालगुडी जयरमन के रूप में एक अद्भुत प्रतिभा ने जन्म लिया। उन्होंने असाधारण संगीतकार के रूप में अपनी पहचान बनाई है। उन्हें कई तिलाना और वर्णम के सृजन का श्रेय जाता है। संगीत की ये विधाएं राग, भाव, ताल और संगीतमय सुन्दरता से ओत-प्रोत हैं।

भारत सरकार ने उन्हें लन्दन में आयोजित **फैस्टिवल ऑफ इंडिया** में देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना था, जहां उन्होंने एकल तथा जुगलबंदी गायन का समा बांधा। लालगुडी जयरमन ने इटली और जर्मनी में भी समालोचकों के बीच अपनी पहचान बनाई।



## LALGUDI JAYARAMAN

In the sphere of Carnatic music, **Lalgudi Jayaraman** is a name that is instantly associated with melody, rhythm, masterly technique In violin playing and musical excellence.

Born in the lineage of an illustrious disciple of the great saint musician Thyagaraja and meticulously trained and brought up in an atmosphere of music by his versatile father late V R Gopala Iyer, Lalgudi Jayaraman inherited the essence of Carnatic music.

At the early age of 12 he started his musical career as an accompanying violinist. Being endowed with rich imagination, quick grasp, an uncommon ability for adapting to the individual styles of the leading maestros in Carnatic music while accompanying them in their concerts, he emerged as a solo violinist of rare brilliance. He endeared himself to music lovers by his flawless and fascinating style, graceful and original, yet not divorced from traditional roots. He has made his mark also as a unique and extraordinary composer having to his credit several thillanas and varnams which are a scintillating blend of raga, bhava, rhythm and lyrical beauty.

The Government of India chose him to represent India at the **Festival of India** in London and he gave solo and Jugalbanti concerts in London and also in Germany & Italy that received rave reviews.

## सर्वोत्तम गीतकार

### बरगुरु रामचन्द्रप्पा

गीतकार **बरगुरु रामचन्द्रप्पा** को रजत कमल एवं रु. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम गीतकार का पुरस्कार बारागुरु रामचन्द्रप्पा को कन्नड़ भाषा की फिल्म **ताई** में **बरुथे वे नव बरुथे वे** गीत के लिए दिया गया है। इस गीत से पूरी फिल्म के प्रभाव को उभार मिला है।

## BEST LYRICS

### BARAGURU RAMCHANDRAPP

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Lyricist **BARGURU RAMCHANDRAPP**

### CITATION

The award for the Best Lyrics of 2005 is given to **BARGURU RAMCHANDRAPP** for the lyric "**BARUTHE VE NAV BARUTHE VE**" in the Kannada Film **THAAYI**, which heightened the effect of the entire film.

## बरगुरु रामचन्द्रप्पा

बरगुरु रामचन्द्रप्पा फिल्मों के अलावा, अध्यापन और सामाजिक कार्यों में भी अभिरुचि रखते हैं। वे कर्नाटक साहित्य अकादमी के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी हैं।



## PROFESSOR BARAGURU RAMACHANDRAPPA

A multi-faceted personality, Professor Baraguru Ramachandrappa is basically a teacher and has put in 25 years of service in teaching at Bangalore University. He has also been the President of Karnataka Sahitya Academy besides films he has a number of published work to his credit. He is also active in social work.



## निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

### अनुपम खेर

अभिनेता **अनुपम खेर** को रजत कमल एवं 25,000 रुपए नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का निर्णायक मंडल का पुरस्कार अभिनेता अनुपम खेर को हिन्दी फिल्म **मैंने गांधी को नहीं मारा** में एक ऐसे व्यक्ति की परेशानियों के जीवन्त अभिनय के लिए दिया गया है जो अल्झीमर्स रोग से ग्रसित होने के कारण वास्तविक दुनिया से दूर हो गया है।

## SPECIAL JURY AWARD

### ANUPAM KHER

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to Actor **ANUPAM KHER**

### CITATION

The Special Jury Award of 2005 is given to actor **ANUPAM KHER** in Hindi Feature Film **MAINE GANDHI KO NAHIN MARA** for an outstanding performance in the film that brings alive the plight of an Alzheimer's patient who is alienated from the real world.

## अनुपम खेर

फिल्म तथा रंगमंच दोनों में एक समान महारत से अपनी भूमिका निभाने वाले अनुपम खेर का नाम अपने शानदार अभिनय के लिए हर व्यक्ति की जुबान पर है। अनुपम खेर का कहना है 'मैंने कभी भी अपने जीवन का आकलन नहीं किया, यदि मैंने ऐसा किया होता, तो मैं पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया होता।' अपने इसी रवैये से वे अभिनेता और निर्माता के रूप में कदम-दर-कदम मजबूत होते चले गए हैं। इन्हें कई बार पुरस्कृत किया जा चुका है। सन 1994 में अनुपम खेर ने अपनी स्वयं की प्रोडक्शन कम्पनी शुरू की। उनकी पहली फिल्म **बारीवली** ने सेन फ्रांसिस्को महोत्सव में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार जीता। **बैंड इट लाइक बेकम** और **ब्राइड एंड प्रीजुडिस** जैसी फिल्मों के जरिए उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी खासी ख्याति अर्जित की है।



## ANUPAM KHER

Moving from very humble beginnings to acquire a Gold medal at the National School of Drama, Anupam Kher started his career through the expression that still matters most to him – Theatre. One of the most sought out person in film industry, today, Anupam Kher still finds time for theatre. . With over three hundred films to his credit, Anupam Kher has made an indelible impression in the minds of his audience as one of the finest actors of India. With Gurinder Chaddha's '**Bend it like Beckham**' & '**Bride and Prejudice**' he has forayed into the international arena.

In 1994 Anupam Kher launched his own entertainment company and produced his first film '**Bariwali**' that won Best Feature Film Award at the San Francisco International Film Festival and at different festivals including the National Film Festival 2000. His first Hindi film as a producer, '**Maine Gandhi Ko Nahin Mara**' has been well received critically both in India and abroad. He is currently the Chairman and Managing Director of '**Actor Prepares**' – a school for talented individuals who wish to pursue careers as actor-performers in the entertainment industry.

## सर्वोत्तम विशेष प्रभाव

टाटा एलेक्सी, मुंबई

टाटा एलेक्सी मुंबई को रजत कमल एवं रु. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का विशेष प्रभाव सृजन का पुरस्कार तमिल फिल्म **अन्नियन** को अत्यन्त कल्पनाशील विशेष प्रभाव के लिए दिया गया है। इससे फिल्म की शैली में और भी निखार आ गया है।

## BEST SPECIAL EFFECTS

**TATA ELXSI, Mumbai**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Creator **TATA ELXSI, Mumbai**

### CITATION

The award for the Best Special Effects of 2005 is given to the Tamil Feature Film **ANNIYAN** for highly imaginative and creative special effects that lift the style of the film.



अन्नियन - ANNIYAN

## सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन

सरोज खान

नृत्य निर्देशक **सरोज खान** को रजत कमल एवं रु. 10,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन का पुरस्कार तमिल फिल्म **श्रृंगारम** के लिए **सरोज खान** को दिया गया है। सरोज खान ने देवदासी परम्परा के नृत्यों को अत्यन्त शालीनता और सुन्दरता के साथ फिर से इस फिल्म में जीवन्त बनाया है।

## BEST CHOREOGRAPHY

**SAROJ KHAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Choreographer **SAROJ KHAN**

### CITATION

The award for the Best Choreography of 2005 is given to **SAROJ KHAN** for the Tamil Film **SRINGARAM** in acknowledgement of the authentic recreation of the Devdasi tradition that has been brought out with immense grace and beauty.



## सरोज खान

चार दशकों से बॉलीवुड में धाक जमाए रखने वाली सरोज खान को कौन नहीं जानता। एक दो तीन में माधुरी दीक्षित से लेकर निम्बोड़ा में एश्वर्या राय तक कई अभिनेत्रियां और अभिनेता इनसे नृत्य के लटकें-झटकें सीख चुके हैं। विधु विनोद चोपड़ा की **मिशन कश्मीर**, राजकंवर की **ढाई अक्षर प्रेम के**, आमिर खान की **लगान** आदि सरोज खान की उल्लेखनीय फिल्में हैं।



## SAROJ KHAN

Saroj Khan has ruled the roost in Bollywood for four decades. From **Madhuri Dixit in Ek Do Teen** to **Aishwarya Rai in Nimbooda Nimbooda**, many actresses and actors have gone through Saroj Khan's complex dancing lessons. Some of Saroj Khan's memorable projects are Vinod Chopra's **Mission: Kashmir**, Raj Kanwar's **Dhai Akshar Prem Ke**, Aamir Khan's **Lagaan**. She has received innumerable awards..

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल प्रत्येक भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र  
सर्वोत्तम असमिया फीचर फिल्म

कदम तले कृष्णा नाचे

निर्माता **रंजीत चक्रवर्ती** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक **सुमन हरिप्रिया** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

**प्रशस्ति**

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम असमिया फिल्म का पुरस्कार **कदम तले कृष्णा नाचे** को असम की सांस्कृतिक विरासत को बचाये रखने के लिए दिया गया है।

**BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGES SPECIFIED  
IN THE SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION**

**BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE**

**KADAM TOLE KRISHNA NACHE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **RANJIT CHAKRAVARTY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **SUMAN HARIPRIYA**

**CITATION**

The award for the Best Feature Film in Assamese of 2005 is given to **KADAM TOLE KRISHNA NACHE** for its attempt at preserving the dying culture and traditions of Assam.

## रंजीत चक्रवर्ती

रंजीत चक्रवर्ती असमिया फिल्म उद्योग का जाना माना नाम है। अपनी बहन निर्देशिका सुमन हरिप्रिया के साथ मिलकर उन्होंने कई वृत्तचित्र बनाये हैं।



## RANJIT CHAKRAVARTY

Ranjit Chakravarty is a well known name in Assamese film industry. He has produced many documentaries with his sister director Suman Haripriya.

## सुमन हरिप्रिया

सामाजिक कटिबद्धता से गहराई से जुड़ी सुमन हरिप्रिया फिल्मी दुनिया में कदम रखने से पहले कई वृत्तचित्र बना बना चुकी हैं। असमिया फिल्म उद्योग में आज वे एक जाना-माना नाम हैं। निर्देशक और पटकथा लेखक के रूप में वे **कोइना मोर धुनिया** तथा **काका देउतार घोर जावोई** जैसी हिट फिल्मों दे चुकी हैं। उनका अगला प्रयास हिन्दी सिनेमा में है।



## SUMAN HARIPRIYA

A film maker with deep social commitment Suman Haripriya has produced a number of documentaries before entering the realm of movies. Today she is a well known name in Assamese film industry and has given hit films like **Koina Mor Dhuniya** and **Kaka Deutar Ghor Jowai** as Director and Scriptwriter. Her next venture is in Hindi.

## सर्वोत्तम बंगला फीचर फिल्म

### हर्बर्ट

निर्माता **काजल भट्टाचार्य** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक **सुमन मुखोपाध्याय** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम बंगला फिल्म का पुरस्कार हर्बर्ट को वास्तविकता और कल्पना के बीच झूलते शहरी जीवन की व्यंग्यात्मक त्रासदी को एक बिल्कुल सिनेमाई अन्दाज में प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

## BEST FEATURE FILM IN BENGALI

### HERBERT

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- To the Producer **KAJAL BHATTACHARJEE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **SUMAN MUKHOPADHYAYAY**

### CITATION

The award for the Best Feature Film in BENGALI for the year 2005 is given to **HERBERT** for a refreshingly cinematic idiom as the protagonist of this urban existential tragi-comedy veers between the real and the surreal.

## काजल भट्टाचार्य

काजल भट्टाचार्य बंगला सिनेमा के जाने माने निर्माता हैं।



## KAJAL BHATTACHARJEE

Kajal Bhattacharjee is a noted filmmaker produce of Bengali Cinema.

## सुमन मुखोपाध्याय

जाघवपुर युनिवर्सिटी, कोलकाता से तुलनात्मक साहित्य में एम.ए., सुमन मुखोपाध्याय ने देश-विदेश में थिएटर और टेलीविजन में काफी सक्रिय भूमिका निभाई है। फिल्म निर्देशक के रूप में **हरबर्ट** उनकी पहली फिल्म है।



## SUMAN MUKHOPADHYAY

After doing his M.A. in Comparative Literature from Jadavpur University, Kolkata Suman Mukhopadhyay got into theatre productions ranging from European drama to major adaptations of Bengali masterpieces.

In 2005, Suman Mukhopadhyay received a fellowship from Asian Cultural Council, New York and Department of Culture, GOI and studied theatre. After venturing in theatre and Television, he completed his first feature film, *Herbert*, based on a novel by Nabarun Bhattacharya.



## सर्वोत्तम हिन्दी फीचर फिल्म

### ब्लैक

निर्माता **अप्लौस भंसाली फिल्मस प्रा. लि.** को रजत कमल एवं रू. 10,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक **संजय लीला भंसाली** को रजत कमल एवं रू. 20,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम हिन्दी फीचर फिल्म **ब्लैक** को दिया गया है। फिल्म की कथा-वस्तु अत्यन्त विपरीत परिस्थितियों में अस्तित्व बनाये रखकर अपने लक्ष्य को हासिल करने की एक नेत्रहीन बच्चे की जबर्दस्त लगन को बनाया गया है।

## BEST FEATURE FILM IN HINDI

### BLACK

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **APPLAUSE BHANSALI FILMS PVT LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **SANJAY LEELA BHANSALI**

### CITATION

The award for the Best Feature Film in Hindi of 2005 is given to **BLACK** for a stylized and visually vibrant tale of a physically challenged child who learns to live and become an achiever against insurmountable odds.

## संजय लीला भंसाली

आज भारतीय सिनेमा के जाने-माने निर्देशक, संजय लीला भंसाली ने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे से फिल्म सम्पादन में डिप्लोमा लेने के बाद श्याम बेनेगल की फिल्म **भारत की खोज** के सम्पादक के रूप में अपना कैरियर शुरू किया। इन्होंने **1942-ए लव स्टोरी** का गीत निर्देशन और पटकथा लेखन भी किया है। इन्होंने **खामोशी** फिल्म से निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखा। **हम दिल दे चुके सनम** और **देवदास** इनकी अन्य लोकप्रिय फिल्में हैं।



## SANJAY LEELA BHANSALI

Born on 24<sup>th</sup> February, 1963, Sanjay Leela Bhansali, started his career as Editor for Shyam Benegal's television show **'BHARAT : EK KHOJ'**. After directing songs of **'PARINDA'**, he worked as director of songs and co-screenplay writer of **'1942: A LOVE STORY'**. He made his directorial debut with **'KHAMOSHI : THE MUSICAL'** of which he was also the co-writer. As co-writer, co-producer and director of **'HUM DIL DE CHUKE SANAM'**, as co-writer and director of **'DEVDAAS'**, he won wide acclaim. His next film **BLACK** of which he was co-writer, co-producer and director, has been regarded as milestone in Indian Cinema.

## एप्लॉस भंसाली फिल्म्स प्राइवेट लिमिटेड

एप्लॉस भंसाली फिल्म्स प्राइवेट लिमिटेड मुम्बई के एक अग्रणी फिल्म निर्माताओं में से एक है। कंपनी फिल्म तथा टेलीविजन कार्यक्रम निर्माण के अतिरिक्त मनोरंजन के अनेक क्षेत्रों में कार्यरत है।

## APPLAUSE BHANSALI FILMS PRIVATE LIMITED

Applause Bhansali Films Private Limited is a one of the leading production houses based in Mumbai. The company has diversified into several areas of entertainment industry.

## सर्वोत्तम कन्नड़ फीचर फिल्म

### तायी

निर्माता **प्रमीला जोशी** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक **बरगुरु रामाचन्द्रप्पा** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम कन्नड़ फीचर फिल्म **तायी** को दिया गया है। फिल्म में अन्याय तथा शोषण के खिलाफ मैक्सिम गोरकी के उपन्यास की कथा वस्तु को भारतीय परिदृश्य में डाला गया है।

## BEST FEATURE FILM IN KANNADA

### THAAYI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **PRAMEELA JOSHA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **BARAGURU RAMCHANDRAPPA**

### CITATION

The award for the Best Feature Film in Kannada of 2005 is given to **THAAYI** for its contemporary interpretation of maxim Gorky's classic novel against injustice and oppression.

## प्रमीला जोशी

प्रमीला जोशी ने 1976 में कन्नड़ फिल्म **हराके** में अपने अभिनय की धाक जमा दी थी। यह इनकी पहली फिल्म थी। मंदिर के प्रति समर्पित एक महिला के रूप में उनके अभिनय की काफी सराहना हुई थी। कन्नड़ के अलावा ये तमिल, तेलुगु तथा तुलु में 250 से ज्यादा फिल्मों में अभिनय कर चुकी हैं। कन्नड़ फिल्म **बेन्की** में अभिनय के लिए प्रमीला को सात राज्य पुरस्कारों के अतिरिक्त उन्हें अन्य अनेक पुरस्कार मिले हैं।



## PRAMEELA JOSHAJ

Mrs. Pramila Joshai started acting in films at a young age with **HARAKE** in 1976. She has so far worked in more than 250 films in languages ranging from Tamil, Telgu, Tulu apart from her mother tongue and many of these have been highly successful and have won various awards. Active in theatre as well in Television. Pramila has many awards & achievements to her credit for her acting. **BENKI**, the Kannada feature film in which she played the pivotal character, won more than seven awards at the State level. Her other award winning films include **HARAKE**, **SANGEETHA**, **PRATHAMA USHA KIRANA**, **SOORYA** and **BANKER MARGAYYA**. She won the Best Supporting Actress award for her sterling performance in the film **SANGEETHA** in 2004.

## बरगुरु रामचन्द्रप्पा

बरगुरु रामचन्द्रप्पा फिल्मों के अलावा, अध्यापन और सामाजिक कार्यों में भी अभिरुचि रखते हैं। वे कर्नाटक साहित्य अकादमी के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी हैं।



## BARAGURU RAMACHANDRAPPA

A multi-faceted personality, Professor Baraguru Ramachandrappa is basically a teacher and has put in 25 years of service in teaching at Bangalore University. He has also been the President of Karnataka Sahitya Academy besides films he has a number of published works to his credit. He is also active in social work.

## सर्वोत्तम मलयालम फीचर फिल्म

### तनमात्र

निर्माता **सेन्चुरी फिल्मस** को रजत कमल एवं रू. 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक **ब्लेसी** को रजत कमल एवं रू. 20,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम मलयालम फीचर फिल्म का पुरस्कार **तनमात्र** को दिया गया है। फिल्म में एक मध्यमवर्गीय परिवार के सम्मानपूर्ण जीवन जीने के संघर्ष को बड़े संवेदनशील रूप में दिखाया गया है। यह परिवार एक ऐसे मकान में रहता है, जिसका मालिक धीरे-धीरे अपनी याददास्त खोता जा रहा है।

## BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

### THANMATRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **CENTURY FILMS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **BLESSY**

### CITATION

The award for the Best Feature Film in Malayalam of 2005 is given to **THANMATRA** for the moving depiction of middle – class family that struggles to lead a dignified life in the face of the householder's gradual loss of memory.



## ब्लेसी इपे थॉमस

प्राणि विज्ञान में स्नातक तथा निर्देशक और पटकथा लेखक, ब्लेसी ने काझचा से निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखा। इस फिल्म को 2004 में सर्वाधिक केरल राज्य का लोकप्रिय फिल्म और सर्वश्रेष्ठ प्रथम निर्देशन का पुरस्कार प्रदान किया गया था। इनकी दूसरी फिल्म तनमात्र को बहुत सराहा गया है।



## BLESSY IPE THOMAS

A B.Sc. in Zoology, Director and Scriptwriter, and a number of awards. Blessy IPE Thomas made his debut in films with 'KAZHCHA' which won the Kerala state Award for Best Film, Best Director, Best Screenplay, in 2005. His second film **Thanmatra** has also won wide acclaim

## सैन्चुरी फिल्म्स

सैन्चुरी फिल्म्स केरल के एक अग्रणी फिल्म निर्माताओं में से एक है। जिसका संचालन राजू मैथ्यू कर रहे हैं।

## CENTURY FILMS

Century Films is a leading film production house from Kerala headed by Raju Mathew.

## सर्वोत्तम मराठी फीचर फिल्म

### डोम्बिवली फास्ट

निर्माता **रमाकान्त आर गायकवाड़** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक **निशिकान्त कामत** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम मराठी फीचर फिल्म का पुरस्कार **डोम्बिवली फास्ट** को दिया गया है। फिल्म में एक ऐसे मध्यमवर्गीय परिवार के व्यक्ति को दिखाया गया है, जो आधुनिक शहर की भ्रष्ट व्यवस्था के दबाव में टूट चुका है।

## BEST FEATURE FILM IN MARATHI

### DOMBIVALI FAST

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **RAMAKANT R GAIKWAD**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- each to the Director **NISHIKANT KAMAT**

### CITATION

The award for the Best Feature Film in Marathi of 2005 is given to **DOMBIVALI FAST** for its portrayal of an urban middle class man who breaks down under tremendous stress and pressures of life in a corrupt modern city.

## रमाकान्त गायकवाड़

रमाकान्त गायकवाड़ राष्ट्रीय अभिरुचि वाले उद्यमी व्यक्ति हैं। फिल्म निर्माता के रूप में उनकी पहली फिल्म **डोम्बिवली फास्ट** है।

## निशिकान्त कामत

निशिकान्त कामत पन्द्रह से अधिक वर्षों से टेलिविजन के क्षेत्र में निर्देशक, संपादक तथा पटकथा लेखक के रूप में सक्रिय हैं। फिल्म जगत में निर्देशक के रूप में **डोम्बिवली फास्ट** इनका प्रथम प्रयास है।



## RAMAKANT R GAIKWAD

RAMAKANT GAIKWAD: is an enterprising person with national penchant and makes his debut as Film Producer with **Dombivli Fast**.

## NISHIKANT KAMAT

Nishikant Kamat has been active in television for more than 15 years and Director, editor and scriptwriter. **Dombivli Fast** is his debut film as Director.

## सर्वोत्तम उड़िया फीचर फिल्म

### कथान्तर

निर्माता **इति सामन्त** रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक **हिमांशु खटुआ** रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम उड़िया फीचर फिल्म का पुरस्कार **कथान्तर** को आज के माहौल में भारतीय पारिवारिक मूल्यों को फिर से स्थापित करने के प्रयास के लिए दिया गया है।

## BEST FEATURE FILM IN ORIYA

### KATHANTARA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **ITI SAMANTA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- each to the Director **HIMANSHU KHATUA**

### CITATION

The award for the Best Feature Film in ORIYA of 2005 is given to the Oriya Film **KATHANTARA** for seeking to re-establish Indian family values in the modern day situation.

## इति सामन्त

मई, 1970 में जन्मी इति सामन्त ने उत्कल युनिवर्सिटी से एम.ए. और विश्व भारती से पीएचडी की उपाधि हासिल की है। इन्होंने इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियरिंग, होटल मैनेजमेंट और पत्रकारिता जैसे विषयों का भी अध्ययन किया है। इति एक लोकप्रिय उड़िया पारिवारिक पत्रिका कादम्बिनी की सम्पादक हैं और दो पुस्तकें भी लिख चुकी हैं।



## ITI SAMANTA

Born in May 1970 Iti Samanta is an M.A. from Utkal University and is doing Ph.D. from Visva Bharti University. A person, who has studied multiple disciplines like electronic engineering, hotel management, and journalism, Iti edits a popular family magazine Kadambinee in Oriya and has also authored two books.

## हिमांशु खटुआ

हिमांशु खटुआ ने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से शिक्षा प्राप्त की है। उनकी पहली फिल्म शून्य स्वरूपा को 44वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ उड़िया फिल्म के रूप में चुना गया था। उन्होंने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त एक अन्य उड़िया फिल्म इन्द्र घनुर छाई का ध्वन्यांकन भी किया है। हिमांशु ने अनेक वृत्तचित्रों, धारावाहिकों एवं टेलीफिल्मों का निर्माण एवं निर्देशन किया है।



## HIMANSU KHATUA

Himanshu Khatua is an alumni of the Film and Television Institute of India. His debut feature film **Shunya Swaroopa** was adjudged as the Best Oriya film in the 44<sup>th</sup> National Film Festival. He has also done audiography for Oriya film **Indradhanura Chhai**. It won 'Jury's special mention' in National Film Festival 1995 and was selected for Cannes International Film Festival and also won the Grand Prix in the 2<sup>nd</sup> Sochi International Film Festival, Russia in 1995-96.

Himanshu has produced and directed a number of Documentaries, Serials and Telifilms and has been audiographer also for a number of films.



## सर्वोत्तम पंजाबी फीचर फिल्म

### बागी

निर्माता **गज देओल** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक **सुखविंदर धंजल** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम पंजाबी फीचर फिल्म का पुरस्कार **बागी** को दिया गया है। फिल्म में आज के पंजाब में जातिगत विभाजन का सजीव चित्रण किया गया है।

## BEST FEATURE FILM IN PUNJABI

### BAGHI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **GAJ DEOL**.

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **SUKHMINDER DHANJAL**.

### CITATION

The award for the Best Feature Film in Punjabi Language for the year 2005 is given to **BAGHI** for graphically delineating the caste divide in modern day Punjab.

## गज देओल

जाने-माने पंजाबी फिल्म निर्माता और रंगकर्मी हरपाल तिवाना से जुड़े और लॉंग दा लिश्कारा के निर्माण में सहयोग दिया। गज देओल सिनेमा की ओर आकर्षित हुए। निर्माता के रूप में **बागी** उनकी पहली फिल्म है।



## GAJ DEOL

Born on 14<sup>th</sup> July, 1950 in Ludhiana, debut film maker Gaj Deol is not new to Punjabi cinema. In 1983, he was associated with film maker and theatre personality Harpal Tiwana, in making of '**Long Da Lishkara**', a memorable Punjabi film of its time. His love, more than that his dream of making a good Punjabi film with a good team, has been fulfilled with **BAGHI**.

## सुखमिन्दर धंजल

इंजीनियर से फिल्म निर्देशक बने सुखमिन्दर साहित्य में रुचि रखने वाले परिवार से आए हैं। उन्होंने पंकज पराशर के सह-निर्देशक के रूप में अपना कैरियर शुरू किया था। इनकी पंजाबी फिल्म **मेला** को समालोचकों ने भी सराहा है। इन्होंने टेलीफिल्म **सांझी दीवार** का लेखन किया है।



## SUKHMINDER DHANJAL

Born on 2<sup>nd</sup> October, 1966, Sukhminder Dhanjal is a committed film maker and comes from a family having interest in literature and academics. His earlier Punjabi film **Mela** was critically acclaimed. Sukhminder did his diploma in Electrical Engg. From G N E College Ludhiana. He shifted to Bombay in 1987 and joined as Asstt. Director to Pankaj Prashar. He has written a tele film '**Sanjhi Deewar**'.

## सर्वोत्तम तमिल फीचर फिल्म

### आडम कुत्थु

निर्माता लाइट एवं शेडो मूवी मेकर्स को रजत कमल एवं रू. 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक टी वी चन्द्रन को रजत कमल एवं रू. 20,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम तमिल फीचर फिल्म का पुरस्कार **आडम कुत्थु** को दिया गया है। फिल्म में अतीत और वर्तमान के बीच झूलती एक युवा लड़की का बड़ा मार्मिक चित्रण किया गया है।

## BEST FEATURE FILM IN TAMIL

### AADUM KOTHU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **LIGHT & SHADOW MOVIE MAKERS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **T V CHANDRAN**

### CITATION

The award for the Best Feature Film in Tamil of 2005 is given to **AADUM KOTHU** for its imaginative portrayal of a young girl who travels between past and present time zones.

## टी.वी. चन्द्रन

1950 में केरल के तेल्लिचेरी में जन्मे टी.वी चन्द्रन मलयालम सिनेमा के जाने-माने निर्देशक हैं। उन्होंने 1981 में कृष्णन कुट्टी से निर्देशन शुरू किया था। विभिन्न भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में इनकी फिल्मों का प्रदर्शन हो चुका है और इन्हें काफी सराहा गया है।



## लाइट एंड शैडो मूवी मेकर्स

लाइट एंड शैडो मूवी मेकर्स चेन्नई के एक अग्रणी फिल्म निर्माताओं में से एक है।

## T V CHANDRAN

Born in 1950 at Tellicherry, in Kerala, T V Chandran is one of the well known personalities of Indian Cinema. He made his debut in 1981 with Krishnankutty. In 1990 his film **Alicinte Anweshanam** (1989) won the Kerala State Award for Second Best Film, together with that of Best Editor and Best Sound Recordist. Since then he has not looked back and his films have won wide acclaim and many awards at various National and International Festivals.

## LIGHT & SHADOW MOVIE MAKERS

Light & Shadow Movie Makers is a leading film production house based in Chennai.

## सर्वोत्तम तेलुगु फीचर फिल्म

### बोम्मालाटा - ए बैलीफुल ऑफ ड्रीम्स

निर्माता आर के फिल्म एसोसिएट्स एवं स्पिरिट मीडिया ( प्रा. ) लि. को  
रजत कमल एवं 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक प्रकाश कोवेलामुडी को रजत कमल एवं 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 की सर्वश्रेष्ठ तेलुगु फीचर फिल्म का पुरस्कार **बोम्मालाटा - ए बैलीफुल ऑफ ड्रीम्स** को दिया गया है। फिल्म में एक अत्यन्त गरीब बच्चे के सपने को कठपुतली तथा जादू के जरिए जीवन्त सिने शैली में प्रदर्शित किया गया है।

## BEST FEATURE FILM IN TELUGU

### BOMMALATA – A BELLYFUL OF DREAMS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- each to the Producers **R K FILM ASSOCIATES & SPIRIT MEDIA (P) LTD.GUNNAM GANGA RAJU**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **PRAKASH KOVELAMUDI**

### CITATION

The award for the Best Feature Film in Telugu of 2005 is given to **BOMMALATA – A BELLYFUL OF DREAMS** for cinematically vibrant rendition of the story of an underprivileged through the medium of puppetry and magic.



## प्रकाश कोवेलामुदी

आईटी इंजीनियरिंग में ग्रेजुएट प्रकाश कोवेलामुदी दक्षिण भारत के विख्यात फिल्म निर्माताओं के परिवार से हैं। इन्होंने दो फिल्मों में अभिनय भी किया है। लेखक तथा निर्देशक के रूप में इनका हमेशा प्रयास रहा है कि भाषायी तथा सांस्कृतिक बाधाओं की परवाह किए बिना भारतीय परिवेश को सार्वभौमिक अभिव्यक्ति दी जाए।

## आर. के. फिल्म एसोसिएट्स लि०

प्रसिद्ध फिल्म निर्माता कं. राघवेंद्र राव द्वारा संचालित यह कम्पनी हैदराबाद में स्थित है तथा स्वस्थ एवं मनोरंजक फिल्मों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है।

## सिप्रिट मीडिया प्रा० लि०

हैदराबाद स्थित इस कम्पनी का संचालन युवा राना डग्गुबति करते हैं। उनके नेतृत्व में यह कम्पनी एक प्रसिद्ध फिल्म निर्माण इकाई के रूप में उभरी है।



## PRAKASH KOVELAMUDI

An I.T. Engineering graduate Prakash Kovelamkudi comes from an illustrious family of filmmakers in South India. His father K. Raghavendra Rao is a well known film personality. He studied acting at the Lee Strasberg Institute in New York and has acted in two films as a writer/Director. Prakash strives to resonate, through films, an Indian milieu transcending language and cultural barriers to have a universal expression.

## R K FILM ASSOCIATES LTD.

Headed by K Raghavendra Rao, the noted film producer. Based in Hyderabad, the company has acquired a reputation of producing high quality family entertainment.

## SPIRIT MEDIA (P) LTD.

The company is based in Hyderabad. With Rana Daggubati as its head, the company has risen in ranks towards the top slots as a film production house.

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं के अलावा अन्य भाषाओं में सर्वोत्तम फीचर फिल्म

सर्वोत्तम अंग्रेजी फीचर फिल्म

15 पार्क एवेन्यू

निर्माता **विपिन कुमार बोहरा** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक **अपर्णा सेन** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

**प्रशस्ति**

वर्ष 2005 का सर्वोत्तम अंग्रेजी फीचर फिल्म का पुरस्कार **15 पार्क एवेन्यू** को दिया जाता है। फिल्म में सीजोफ्रेनिया से ग्रस्त एक ऐसी लड़की का मार्मिक चित्रण किया गया है जिसे एक ऐसी सपनों की दुनिया की तलाश है जो हो भी सकती है और नहीं भी।

**BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGES OTHER THAN THOSE SPECIFIED IN SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION**

**BEST FEATURE FILM IN ENGLISH**

**15 PARK AVENUE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **BIPIN KUMAR VOHRA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **APARNA SEN**

**CITATION**

The award for the Best Feature Film in English Language of 2005 is given to **15 PARK AVENUE** for its effective and intense portrayal of a schizophrenic girl who seeks a dream world that may or may not even exist

## बिपिन कुमार बोहरा

स्वभाव से उद्यमी और उद्योगपति बिपिन कुमार बोहरा खेल, संस्कृति और मनोरंजन में गहरी अभिरुचि के कारण फिल्म और टेलीविजन की ओर आकर्षित हुए। उन्होंने कई लोकप्रिय टेलीविजन धारावाहिक बनाए हैं और फीचर फिल्मों में भी शोध किया है।



## अपर्णा सेन

अपर्णा सेन बेहतरीन और मंजी हुई अभिनेत्री होने के अलावा भारत की सबसे ज्यादा लोकप्रिय निर्देशक के रूप में भी उभरी हैं। 1981 में **36 चौंरंगी लेन** से इन्होंने निर्देशन की शुरुआत की। इस फिल्म की कहानी भी इन्होंने लिखी है। फिल्म को मनीला में **गोल्डन ईगल** पुरस्कार के अलावा कई फिल्म समारोहों में भी पुरस्कारों से नवाजा गया था। आज अन्तर्राष्ट्रीय मंच में इन्हें भारतीय सिनेमा की महत्वपूर्ण हस्ती माना जाता है। अपर्णा सेन पत्रकारिता के क्षेत्र में भी सक्रिय हैं और बंगला पत्रिका सानंद का सम्पादन करती हैं।



## BIPIN KUMAR VOHRA

An entrepreneur by nature and an industrialist, Bipin Kumar Vohra was drawn to films and television for his keen interest in sports, culture and entertainment. He has a number of popular TV serials to his credit. He has produced a number of telefilms and has delved into making feature films too.

## APARNA SEN

Aparna Sen is one of India's most celebrated directors. She is the daughter of the renowned film historian, critic and filmmaker Chidananda Dasgupta. She is also one of India's finest actors. The celebrated Satyajit Ray introduced her in his film *Sampati*. She has since acted in several films and won several awards and accolades.

Her directorial debut in the year 1981 was an English film, **36 Chowringhee Lane**, which was also written by her. The film won the Golden Eagle – the Grand Prize – at the Manila International Film Festival and the Golden Lotus for best Direction at the National Awards in India. Her directorial work included memorable films like **Sati**, **Paroma**, **Picnic**, **Paromita's Ek Din** and **Mr. and Mrs. Iyer**, which stars her daughter Konkona Sen Sharma and Rahul Bose. She is also the editor of Sananda, a major Bengali magazine with a large circulation.

## सर्वोत्तम भोजपुरी फीचर फिल्म

### कब होई गवना हमार

निर्माता **दीपा नारायण** को रजत कमल एवं रू. 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक **आनन्द डी. गहतराज** को रजत कमल एवं रू. 20,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 के लिए सर्वश्रेष्ठ भोजपुरी फिल्म का पुरस्कार **कब होई गवना हमार** को दिया गया है। यह फिल्म एक पारिवारिक नाटक है, जो पारम्परिक मूल्यों और आधुनिक समाज की संवेदनशीलताओं के बीच सामंजस्य को दर्शाता है।

## BEST FEATURE FILM IN BHOJPURI

### KAB HOI GAWNA HAMAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **DEEPA NARAYAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **ANAND D GHATRAJ**

### CITATION

The award for the Best Feature Film in Bhojpuri Language for the year 2005 is given to **KAB HOI GAWNA HAMAR** for a family drama that harks back to traditional values and modern day sensibilities.



## दीपा नारायण झा

कलिम्पोंग (दार्जिलिंग के नजदीक) की दीपा नारायण झा मुम्बई पहुंच कर एयर इंडिया में एयर होस्टेस बन गईं और इस शहर ने इन्हें गायन के अपने बचपन के शौक को पूरा करने का मौका दिया। दीपा ने अपनी पहली अलबम भी यहीं रिकार्ड कराई थीं। तब से दीपा बंगला, भोजपुरी, नेपाली, गुजराती और तेलुगु आदि विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में नियमित रूप से गा रही हैं। भोजपुरी फिल्म **कब होई गवना हमार** से उन्होंने फिल्म निर्माता के रूप में अपनी यात्रा शुरू की है।



## DEIPA NARAYAN JHA

Deipa Narayan Jha started her journey from Kalimpong (a small hill station in District of Darjeeling) to Bombay and joined "Air India" as Air Hostess – her dream job. But her true passion from the childhood was singing. Bombay gave her the chance to record a private album which made her a known voice. Since then she has regularly been singing in Hindi, Bengali, Bhojpuri, Nepali, Maithili, Gujarati and telgu languages with around 12 albums to her credit besides over 2000 stage shows. She has also turned producer with her maiden Bhojpuri film "**Kab Hoi Gawana Hamaarr**" directed by Mr. Anand Ghatraj.

## आनन्द डी. गहतराज

कैमरामैन से निर्देशक बने आनन्द गहतराज पिछले दो दशकों से फिल्म जगत में हैं। म्यूजिक वीडियो से निर्देशन शुरू करके वे अब तक लगभग 25 म्यूजिक एलबम बना चुके हैं। फिल्म निर्देशक के रूप में **कब होई गवना हमार** उनका पहला प्रयास है।



## ANNAND GHATRAJ

Annand D Ghatraj has been in the Film Industry for over two decades. He made his directorial debut as Music Video Director has completed about 25 music albums for Max Audio Company and for Swati Music. He has also worked as Senior Cameraman in Sahara for over six years and as a Cinematographer for about 5 Nepali movies. With "**Kab Hoi Gawna Hamaarr**" he makes debut as Film Director.



## मोन्या में सर्वोत्तम फीचर फिल्म

### सोनम

निर्माता **गरिमा फिल्मस** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

निर्देशक **अहसान मुजीद** को रजत कमल एवं रु. 20,000/- का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

सर्वश्रेष्ठ मोन्या (अरुणाचली) भाषा की फिल्म का पुरस्कार **सोनम** को दिया गया है। फिल्म में समसामयिक जनजातीय जीवन का अत्यन्त मनोहारी और दिल को छू लेने वाला चित्रण किया गया है।

## BEST FEATURE FILM IN MONPA

### SONAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **GARIMA FILMS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **AHSAN MUZID**

### CITATION

The award for the Best Feature Film in Monpa (Arunachali) Language for the year 2005 is given to **SONAM** for picturesque effective portrayal of the contemporary tribal life.

## अहसान मुजीद

रंगकर्मी से वृत्तचित्र निर्माता बने अहसान मुजीद ने अपनी पहली फिल्म **सोनम** से फिल्म निर्देशन का अपना 12 साल पुराना सपना साकार किया है।



## AHSAN MUZID

Ahsan Mazid started his career as a theatre activist for Indian Peoples' Theatre Association in 1978. He produced his first docu-feature "...and ripples, not waves" in 16mm in 1983. "SONAM" is his debut in celluloid as Director which makes his twelve years old dream of directing a film come true.

## गरिमा फिल्म्स

गरिमा फिल्म्स असम के अग्रणी फिल्म निर्माताओं में से एक है। जिसका संचालन अशोक झूरिया कर रहे हैं। सोनम इनके द्वारा बनाई गयी पहली फिल्म है।

## GARIMA FILMS

Garima Films are film producers from Assam. Headed by Ashok Jhuria, the company has produced its first film, Sonam.

गुजराती फिल्मों के लिए कोई पुरस्कार नहीं दिया गया।  
**No award recommended for Films in Gujarati Language.**

---

गैर कथाचित्र  
पुरस्कार

---

**Awards for  
Non-Feature Films**

## सर्वोत्तम गैर-फीचर फिल्म पुरस्कार

### राइडिंग सोलो टू द टॉप ऑफ द वर्ल्ड (अंग्रेजी)

निर्माता **मैसर्स डर्ट ट्रैक प्रॉडक्शन** को स्वर्ण कमल तथा 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक **गौरव ए. जानी** को स्वर्ण कमल तथा 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 की सर्वश्रेष्ठ गैर-फीचर फिल्म का पुरस्कार **राइडिंग टू द टॉप ऑफ द वर्ल्ड** को दिया जाता है। सिनेमा शैली की सर्वश्रेष्ठ परम्परा में बनी यह सजीव और प्राकृतिक फिल्म, दर्शकों को एक जनजाति और उसकी अनोखी जीवन शैली को समझने और इसे पसंद करने के लिए मजबूर कर देती है।

## AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

### “RIDING SOLO TO THE TOP OF THE WORLD” (English)

Swarna Kamal and a Cash Prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **M/S. DIRT TRACK PRODUCTIONS**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director : **GAURAVA,JANI**

### CITATION

The Award for the Best Non-feature Film of the year 2005 is given to “*Riding Solo to the top of the World*”. Made in the best tradition of Cinema verity, personal, vivid and natural. The film leads the viewer from revelation to revelation giving us an opportunity to come to love and know the “Changpas” and their unique lifestyle.



## गौरव ए. जानी

निर्देशक/कैमरामैन/नैरेटर, गौरव ए. जानी ने रामगोपाल वर्मा की फिल्म जंगल में सहयोग दिया और महसूस किया कि उनका जीवन का एकमात्र सपना यात्रा करना है। फिल्म समाप्त करने के बाद उन्होंने एक मोटर साइकिल खरीदी और वनमैन फिल्मी यूनिट के रूप में लद्दाख पर यात्रा-फिल्म बनाने के लिए निकल पड़े। न तो उन्हें व्यावसायिक कैमरे का संचालन आता था और न ही उन्हें ध्वन्यांकन की जानकारी थी। कैमरा पुस्तिका से संचालन सीखकर और विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए गौरव जानी ने अपनी पहली फिल्म **राइडिंग सोलो टू द टॉप ऑफ द वर्ल्ड** पूरी की।



## GAURAV A. JANI

Director/Cameraman/Narrator Gaurav A. Jani assisted Ram Gopal Verma in *Jungle* and realized that all he wanted in life was to travel. After finishing the film he bought a motorcycle and hit the road to produce a travelogue on Ladakh. With neither the experience of operating a professional camera nor recording sound, he set off on his solo motorcycle journey. Working as one man film unit and learning from camera manuals, Gaurav has finished his first film *'Riding Solo to the top of the World'* facing a lot of odds, particularly the one of coming in front of camera.

## निर्देशक की पहली सर्वोत्तम गैर-फीचर फिल्म

### जॉन एण्ड जेन (अंग्रेजी)

निर्माता **असीम अहलुवालिया** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक **असीम अहलुवालिया** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

### प्रशस्ति

किसी निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ गैर-फीचर फिल्म की श्रेणी में वर्ष 2005 का पुरस्कार भारतीय शहरों में कॉल सेंटरों के दोहरे जीवन और इसके प्रभाव को दर्शाने वाली विचारोत्तेजक फिल्म **जॉन एण्ड जेन** को दिया जाता है।

## AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

### “JOHN & JANE” (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs.10,000/- to Producer : **ASHIM AHLUWALIA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Director : **ASHIM AHLUWALIA**

### Citation

The award for the Best First Non-feature Film of a Director for the year 2005 is given to **John & Jane** for an evocative film capturing the essence of call centres in urban India, its pressures and the dualities of life in this new reality.

## असीम अहलुवालिया

1972 में जन्मे असीम ने न्यूयॉर्क में बार्ड कॉलेज से फिल्म की शिक्षा-दीक्षा ली। बाद में, बॉलीवुड की पारंपरिक शैली से हटकर फिल्म बनाने के लिए उन्होंने अपना खुद का प्रॉडक्शन हाउस बनाया। तीन जादूगरों के जीवन पर उनकी डॉक्युमेंट्री *थिन एयर* को दक्षिण एशिया फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार दिया गया है।



## ASHIM AHLUWALIA

Born in Mumbai in 1972, Ashim studied films at Bard College in New York. Later he set up his own production house with a view to producing a cinema outside the traditional Bollywood system. His documentary *'Thin Air'* on the lives of three magicians has won the Best Film Award at Film South Asia festival.

## सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म

### स्पिरिट ऑफ द ग्रेसफुल लीनिएज ( अंग्रेजी )

निर्माता **बीबी देवी बरबरूआ** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक **प्रेरणा बरबरूआ शर्मा** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

### प्रशस्ति

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म की श्रेणी में वर्ष 2005 का पुरस्कार मेघालय के अनोखे मातृसत्तात्मक परिवार की परम्पराओं का रोचक वर्णन करने वाली फिल्म **स्पिरिट ऑफ द ग्रेसफुल लीनिएज** को दिया जाता है।

## AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ ETHNOGRAPHIC FILM

### “SPIRIT OF THE GRACEFUL LINEAGE” (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **BIBI DEVI BARBAROOAH**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **PRERANA BARBAROOAH SHARMA**

### Citation

The award for the Best Anthropological/Ethnographic film of the year 2005 is given to “**Spirit of the Graceful Lineage**”. An interesting documentation of the unique matrilineal society of the Khasis of Meghalaya.

## बीबी देवी बरबरूआ

ख्याति प्राप्त गीतकार और कवियत्री बीबी देवी बरबरूआ आकाशवाणी और दूरदर्शन की लोकप्रिय आवाज और जाना-माना चेहरा रही हैं। उनकी कई पुस्तकें और लोकप्रिय गीत प्रकाशित हुए हैं। विभिन्न समाचार पत्रों के लिए यात्रा-वृत्त लेखिका होने के अलावा उन्होंने फिल्म तथा टेलीविजन में निर्देशक, एंकर, पटकथा लेखक और निर्माता की भूमिका भी निभाई है।



## BIBI DEVI BARBAROOAH

A lyricist and poet of repute, Bibi Devi Barbarooah has been a popular voice and known face of AIR and Doordarshan. A lyricist and poet of repute, she has a collection of published books and popular songs to her credit. Besides being a travelogue writer for different news papers, she has dabbled into different roles in films and TV as Director, anchor, scriptwriter and producer.

## प्रेरणा बरबरूआ शर्मा

निर्देशक/नैरेटर प्रेरणा ने 18 वर्ष की कम आयु में ही दूरदर्शन के लिए 1994 में वन्स अपॉन ए टाइम शीर्षक से एक संगीतमय रचना के निर्माण से अपना करियर शुरू किया। वे मानवीय संवेदना और ठोस शोध कार्य के जरिए फिल्मों के निर्माण में विश्वास रखती हैं। प्रेरणा, सौफिया कालेज, मुंबई से मनोविज्ञान में स्नातक हैं और उन्होंने सेंट जेवियर, मुंबई से फिल्म तथा टेलीविजन में स्नातकोत्तर की डिप्लोमा हासिल किया है।



## PRERANA BARBAROOAH SHARMA

Director/Narrator Prerana started her career at a young age of 18, directing a musical titled 'Once Upon a Time' for Doordarshan in 1994. She has done a Bachelors in Psychology from Sophia College Mumbai and Post Graduation in Films & Television from St. Xaviers Mumbai. Prerna believes in making films with a human touch and strong research.



## सर्वोत्तम जीवनी/ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म

हंस अकेला- कुमार गंधर्व (हिन्दी)

निर्माता फिल्मस डिविजन, मुम्बई को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक जब्बार पटेल को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

सर्वोत्तम जीवनी/ऐतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फिल्म की श्रेणी में वर्ष 2005 का पुरस्कार शास्त्रीय संगीत की गहरी समझ को पेश करने वाली फिल्म **हंस अंकेला-कुमार गंधर्व** को दिया जाता है। फिल्म में अद्वितीय हस्ती और शास्त्रीय संगीत में महान योगदान करने वाले कुमार गंधर्व की रचनाओं का मानवीय पक्ष प्रस्तुत किया गया है।

### AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL /HISTORICAL RECONSTRUCTION / COMPILATION FILM

**“HANS AKELA-KUMAR GHANDHARVA” (Hindi)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **FILMS DIVISION, MUMBAI**

Rajat Kamal and a Cash Prize of Rs. 10,000/- to the Director : **JABBAR PATEL**

### Citation

The award for the Best Biographical Film of the year 2005 is given to *“Hans Akela-Kumar Ghandharva”* which is made with a deep sense of understanding of classical Music. This well researched film sensitively evokes the unique personality and contribution of Kumar Gandharva and shows the human face of his outstanding creativity.

## जब्बार पटेल

बालरोग चिकित्सक डॉ० जब्बार पटेल ने समृद्ध मराठी साहित्य से आकर्षित होकर रंगमंच की दुनिया में कदम रखा और वहां एक मंजे हुए कल्याणशील निर्देशक के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई। **घासीराम कोतवाल** उनका सबसे लोकप्रिय नाटक है। डा. जब्बार पटेल ने अनेक फीचर फिल्मों एवं वृत्तचित्र बनाए हैं। इन्हें कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया है।



## Dr. JABBAR PATEL

A paediatrician by education and profession, Dr. Jabbar Patel was fascinated by the richness of Marathi literature and took to theatre where he made a name for himself as a director of refinement and perception. Later, he entered into films as director and made short films on different personalities and other subjects. *Ghasiram Kotwal* is his most celebrated play. Dr. Jabbar Patel has made number of Feature Films and Documentaries. He has been awarded many National and International Awards.

## पर्यावरण संरक्षण/अनुरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म

अण्डर दिस सन (बंगला)

निर्माता नीलांजन भट्टाचार्य को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक नीलांजन भट्टाचार्य को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

### प्रशस्ति

पर्यावरण संरक्षण/अनुरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म की श्रेणी में वर्ष 2005 का पुरस्कार **अण्डर दिस सन** को दिया जाता है। छायांकन, संगीत, सम्पादन और ध्वन्यांकन के बेहतरीन मिश्रण के जरिए पर्यावरण विविधता को दर्शाने वाली यह एक विचारोत्तेजक फिल्म है।

**AWARD FOR THE BEST SCIENTIFIC FILM /ENVIRONMENT CONSERVATION/PRESERVATION FILM (Including method and process of science, contribution of Scientists, awareness etc.)**

**“UNDER THIS SUN” (Bengali)**

Rajat Kamal and a Cash Prize of Rs.10,000/- to the Producer: **NILANJAN BHATTACHARYA**

Rajat Kamal and a Cash Prize of Rs.10,000/- to the Director: **NILANJAN BHATTACHARYA**

### Citation

The award for the Best Scientific Film/ Environment Conservation / Preservation film of 2005 is given to **“Under this Sun”**, A thought provoking film on environmental diversity with excellent Cinematography, Music, Editing and Sound Design.

## नीलांजन भट्टाचार्य

निर्माता/निर्देशक, नीलांजन ने जाने-माने निर्माता निर्देशक, तपन सिन्हा के सहायक के रूप में अपना कैरियर शुरू किया और बाद में निर्माता/निर्देशक के रूप में शिक्षात्मक, डॉक्यूमेंट्री तथा फिक्शन फिल्मों का निर्माण किया। इनमें *लैंड ऑफ हिडन ट्रीजर* और *बेंगालीज इन द वर्ल्ड ऑफ फिश* भी शामिल है। नीलांजन सिनेमा और सांस्कृतिक मुद्दों पर शोध के जरिए उन्मुक्त लेखन भी करते हैं।



## NILANJAN BHATTACHARYA

Producer/Director Nilanjan began his career as Assistant to renowned producer director Tapan Sinha and later became an independent producer/director producing educational films, documentaries and fiction His award winning films including the *Land of Hidden Treasure*, and *Bengalis In the World of Fish*. Nilanjan is also a researcher and freelance writer on cinema and cultural issues.

## सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म

### वे टू डस्टी डैथ (हिन्दी/अंग्रेजी)

निर्माता **पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक **सैयद फयाज़** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

### प्रशस्ति

सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म की श्रेणी में वर्ष 2005 का पुरस्कार **वे टू डस्टी डैथ** को दिया जाता है। इस फिल्म का विषय ऐसा चुना गया है जिसकी बहुत कम लोगों को जानकारी है। फिल्म एक विशेष पेशे में लगे श्रमिकों के जीवन में दर्शकों को झांकने के लिए मजबूर कर देती है। यह फिल्म दर्शकों के इनकी पीड़ाओं के जरिए झकझोर देती है।

**AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES (Such as prohibition, women and child welfare, and dowry, drug abuse, Welfare of the handicapped etc.)**

### “WAY TO DUSTY DEATH” (Hindi/English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **Public Service Broadcasting Trust**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **Sayed Fayaz**

### Citation

The award for the Best Film on Social Issues for the year 2005 is given to “*Way to Dusty Death*”. A Film on a little known subject that stirs the conscience and emotionally involves the viewers in the lives of the workers.



## सैयद फयाज़

सर्वश्रेष्ठ संरक्षण फिल्म मोंगूज़ के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त सैयद फयाज़ ने युनिवर्सिटी ऑफ वेल्स से प्रसारण पत्रकारिता में स्नातकोत्तर के बाद इलेक्ट्रॉनिक न्यूज़ मीडिया में कदम रखा और टीवी टुडे की वीडियो पत्रिका न्यूज़ट्रैक के लिए अनुसंधान के साथ अपना कैरियर शुरू किया तथा विभिन्न चैनलों के लिए लघु फिल्मों, समाचार फीचर और वृत्त चित्रों का निर्माण किया।



## SYED FAYAZ

A National Award for best conservation film on Mongoose Syed Fayaz has done his Masters in Broadcast Journalism from University of Wales. He started his career and researcher for TV Today's video magazine *Newstrack* and moved on to other news channels in various capacities. He has produced short films, news features and documentaries for various national and international channels of repute

## सर्वोत्तम खोजी फिल्म

### द विसल ब्लोअर्स (अंग्रेजी)

निर्माता **पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक **उमेश अग्रवाल** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

### प्रशस्ति

सर्वोत्तम खोजी फिल्म की श्रेणी में वर्ष 2005 का पुरस्कार जबर्दस्त प्रभाव वाली **द विसल ब्लोअर्स** को दिया जाता है। खोजी रिपोर्टाज की सर्वश्रेष्ठ परम्परा के अनुकूल इस फिल्म में स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाले तथा प्रदूषण से संबंधित मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है।

## AWARD FOR THE BEST INVESTIGATIVE FILM

### “THE WHISTLE BLOWERS” (ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **Public Service Broadcasting Trust**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **Umesh Aggarwal**

### Citation

The award for the Best Investigative film for 2005 is given to “*The Whistle Blowers*”. A small film with a big impact! In the best traditions of Investigative reportage, the film highlights the burning issue of hazards to health and pollution norms.

## उमेश अग्रवाल

दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक, उमेश अग्रवाल ने 1985 में टेलीविजन उद्योग में अपना कैरियर शुरू किया। 1991 में उन्होंने निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखा। इनकी बनाई कई फिल्मों और टीवी कार्यक्रमों को काफी सराहा गया है।



## UMESH AGGARWAL

A graduate from the University of Delhi, Umesh Aggarwal started his career in Television industry in 1985. In 1991 he took to directing television shows and film and works as an independent producer & director. He has a number of widely acclaimed films and television shows to his credit.

## सर्वोत्तम कार्टून फिल्म

### कछुआ और खरगोश (हिन्दी)

निर्माता **रमेश शर्मा** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक **सी.बी अरुण** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

एनीमेटर **मूविंग पिक्चर कम्पनी एनिमेशन टीम** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म की श्रेणी में वर्ष 2005 का पुरस्कार **कछुए और खरगोश की दौड़** पर आधारित सुविख्यात कहानी पर बनी फिल्म **कछुआ और खरगोश** को दिया जाता है। 3 डी तकनीक में बनी इस फिल्म में जीवन्त संवादों और भारतीय पृष्ठभूमि का बड़ी कुशलता से इस्तेमाल किया गया है।

## AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

### KACHUA AUR KHARGOSH (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **RAMESH SHARMA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **C.B. ARUN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Animator: Moving Picture Company Animation team

### Citation

The award for the Best Animation film for 2005 is given to *Kachua Aur Khargosh* for its delightful adaptation and twist to the well-known Hare and Tortoise story using apt voices, lively dialogues and the latest 3D animation technique skillfully in an Indian setting.

## रमेश शर्मा

लघु फिल्मों, फीचर फिल्मों और टीवी धारावाहिकों के जाने-माने निर्माता/निर्देशक, रमेश शर्मा को *रूमटेक* और *नई दिल्ली टाइम्स* जैसी पुरस्कार प्राप्त फिल्मों के निर्माण का श्रेय प्राप्त है। सह-निर्माता/निर्देशक के रूप में उनकी नवीनतम फिल्म *द जर्नलिस्ट एण्ड द जिहादी-द मर्डर ऑफ डेनियल पर्स* है।



## RAMESH SHARMA

Well known Producer/director of short / feature films and T.V. serials, Ramesh Sharma is credited with many award winning films like *Rumtek* and *New Delhi Times*. His most recent work is as co-director/producer of *'The Journalist and the Jihadi- the murder of Daniel Pearls.'*

## सी.बी. अरुण कुमार

जन-संचार में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त सी.बी. अरुण कुमार ने टीवी धारावाहिक *स्पेस सिटी सिगमा* से अपना कैरियर शुरू किया। बाद में उन्होंने भारत के पहले 3 डी एनीमेशन टीवी धारावाहिक *जंगल टैल्स* के निर्माण में सहयोग दिया। इस समय वे मुंबई के एक अग्रणी प्रॉडक्शन हाउस के एनीमेशन और वीएफएक्स ऑपरेशन के प्रमुख हैं।



## C B ARUN KUMAR

A Masters in Mass Communication, C.B. Arun Kumar started his career working in a Science Fiction T.V. Serial – *Space City Sigma*. Later, he was involved in production of *'Jungle Tales'*, India's first original 3D animated TV series. He is currently heading the Animation and VFX operation of a leading production house in Mumbai.



## निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

### फाइनल सॉल्यूशन (हिन्दी/गुजराती/अंग्रेजी)

निर्माता **राकेश शर्मा** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 के लिए निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार फिल्म **फाइनल सॉल्यूशन** को दिया जाता है। फिल्म में गोधरा कांड और इसके बाद व्यापक स्तर पर फैली हिंसा का ईमानदार और सोचने पर मजबूर कर देने वाला चित्रण किया गया है।

## SPECIAL JURY AWARD

### FINAL SOLUTION (Hindi/Gujarati/English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **RAKESH SHARMA**

### Citation

Special Jury Award for the year 2005 is given to the film *Final Solution* for its powerful, hard-hitting documentation with a brutally honest approach lending incisive insights into the Godhra incident, its aftermath and the abetment of large-scale violence.

## राकेश शर्मा

श्याम बेनेगल की *डिस्कवरी ऑफ इंडिया* में सहायक निर्देशक के रूप में अपना कैरियर शुरू करने के बाद राकेश शर्मा प्रसारण उद्योग में आ गए, लेकिन फिर से वृत्त-चित्र निर्माण के क्षेत्र में लौट आए। उन्हें देश-विदेश के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में कई पुरस्कार मिल चुके हैं।



## RAKESH SHARMA

Beginning his career as an Asstt. Director in Shyam Benegal's *Discovery of India* Rakesh Sharma moved to Broadcast industry and again came back to making documentaries. He has won a number of awards in domestic and international festivals.

## सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म

### थक्कायिन मीधा नांगु कंगल (तमिल)

निर्माता **दूरदर्शन तथा रॉय सिनेमा** प्रत्येक को रजत कमल और 5,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक **वसंत** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 के लिए सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म का पुरस्कार तमिलनाडु के एक छोटे से तटीय गांव में गर्भ, वंचना और संवेदनाओं के वास्तविक तथा दिल को छू लेने वाले चित्रण के लिए फिल्म **थक्कायिन मीधा नांगु कंगल** को दिया जाता है।

## AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

### THACKKAYIN MEEDHA NAANGU KANGAL (Tamil)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- to each of the Producers : **Doordarshan & Ray Cinema**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **Vasanth**

### Citation

The award for the Best Short Fiction Film of the Year 2005 is given to *Thackkayin Meedha Naangu Kangal* for its moving and realistic depiction of pride, deprivation and emotion in a small coastal village of Tamil Nadu.

## वसंत

मद्रास विश्वविद्यालय से इतिहास में स्नातक, वसंत ने पत्रकार तथा लघु कथा लेखक के रूप में अपना कैरियर शुरू किया। उन्होंने डॉ० के. बालचन्द्र के संरक्षण में सिनेकला में महारत हासिल की। फीचर फिल्म और वृत्तचित्र बनाने के अलावा उन्होंने विज्ञापन फिल्मों भी की हैं। वसंत का मानना है कि फिल्म निर्माण का सबसे बड़ा चुनौती भरा काम मुख्यधारा की फिल्मों में वास्तविकता लाना है।



## VASANTH

A graduate in History from Madras University, Vasanth started his career as a journalist and a short story writer with more than 500 articles and 100 short stories to his credit. He mastered the art of cinema under noted Dr. K Balachander. Besides producing feature films and documentaries he has also done promotional and ad movies. Vasanth feels that the most challenging part of film making lies in bringing realism into mainstream cinema.

## सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म

### नैना जोगिन (हिन्दी तथा मराठी)

निर्माता **प्रवीण कुमार** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक **प्रवीण कुमार** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

### प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फिल्म की श्रेणी में वर्ष 2005 का पुरस्कार बिहार के मधुबनी पेन्टर्स के जीवन को दर्शाने वाली फिल्म **नैना जोगिन** को दिया जाता है। फिल्म में तथ्य, कल्पना और साक्षात्कारों के जरिए इन पेन्टर्स की चित्रकला शैली और आजीविका का शानदार चित्रण किया गया है।

## AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

### NAINA JOGIN (Hindi & Maithili)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **Praveen Kumar**

Rajat Kamal and a Cash Prize of Rs. 10,000/- to the Director : **Praveen Kumar**

### CITATION

The Award for the Best Arts/Cultural Film of 2005 is given to *Naina Jogin*. A seamless film aesthetically blending fact, fiction and reconstruction with perceptive interviews bringing out the life of the Madhubani painters of Bihar.

## प्रवीण कुमार

दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातक प्रवीण कुमार ने वरन, पेरिस से फिल्म निर्देशन में डिप्लोमा लिया है। उन्होंने 1990 में अपनी पहली डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'अनटू द फोल्ड' का निर्देशन किया। यह फीचर फिल्म लम्बाई की डॉक्यूमेंट्री थी और इस फिल्म की काफी सराहना हुई थी। शिक्षा तथा पर्यावरण संबंधी टीवी कार्यक्रमों और धारावाहिकों में सक्रिय रहने के बाद वे फीचर फिल्मों की दुनिया में कदम रखने के लिए मुंबई चले गए।



## PRAVEEN KUMAR

A Graduate in Economics from Delhi University, Praveen Kumar took his diploma in film direction from VARAN, Paris. He directed his first feature length documentary '*Unto the Fold*' in 1990 which was widely acclaimed. After remaining active in production of educational and environmental TV programmes and films, he moved to Mumbai to enter the feature films arena.



## सर्वोत्तम कृषि संबंधी फिल्म

### द सीड कीपर्स (तेलुगु/अंग्रेजी)

निर्माता **पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक **फरीदा पाचा** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार।

### प्रशस्ति

कृषि पर सर्वोत्तम फिल्म की श्रेणी में वर्ष 2005 का पुरस्कार **सीड कीपर्स** को दिया जाता है। फिल्म में आंध्र प्रदेश की कृषक महिलाओं के जीवन का ईमानदारी तथा सादगी भरा चित्रण किया गया है और इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार ये महिलाएं मीडिया तथा प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल के जरिए स्व-सशक्तीकरण के माध्यम से अपनी जरूरतें पूरी करती हैं।

**AWARD FOR THE BEST AGRICULTURE FILM (To include subjects related to and allied to agriculture like animal husbandry, dairying etc.)**

**“THE SEED KEEPERS” (Telugu/English)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer : **Public Service Broadcating Trust**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director : **Farida Pacha**

### CITATION

The Award for the Best Agriculture Film of 2005 is given to the film *Seed Keepers* for its simple, honest portrayal of the lives of the women farmers in Andhra Pradesh and their need for addressing pertinent issues through self-empowerment using media and Technology.

## फरीदा पाचा

सदर्न इलिनोइस युनिवर्सिटी से सिनेमा की शिक्षा लेने के बाद, फरीदा पाचा ने कई शैक्षिक फिल्मों का निर्देशन किया। उनकी प्रयोगात्मक लघु फिल्म *टंग* और *कुकिंग टेल्स* की काफी प्रशंसा हुई है।



## FARIDA PACHA

After studying cinema from Southern Illinois University Farida took to directing a series of educational films. Her short experimental films, '*Tongue*' and '*Cooking Tales*' have won wide acclaim.

## सर्वोत्तम निर्देशन

### गणेश शंकर गायकवाड़

निर्देशक गणेश शंकर गायकवाड़ को स्वर्ण कमल और 20,000 रुपए का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 के लिए सर्वोत्तम निर्देशन का पुरस्कार **वॉयसेस एक्रॉस दि ओशन** को दिया जाता है। देश के इतिहास में भारत के महत्वपूर्ण क्षणों के साथ बीबीसी के जुड़ाव की मंत्रमुग्ध कर देने वाली यात्रा के ज़रिए यह फिल्म दर्शकों में उस काल की याद ताज़ा कर देती है।

## AWARD FOR THE BEST DIRECTION

### GANESH SHANKAR GAIKWAD

Swarna Kamal and a Cash Prize of Rs. 20,000/- to the Director : GANESH SHANKAR GAIKWAD

### Citation

The award for the Best Direction for the Year 2005 is given to *Voices Across the Ocean*. This sensitive film uses simple, masterly non-linear storytelling to take us through a nostalgic journey of BBC's association with India's key defining moments in the nation's history.

## गणेश शंकर गायकवाड़

गणेश शंकर गायकवाड़ ने सिविल इंजिनियरिंग में अध्ययन किया और इसके बाद संचार अध्ययन में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल की। इस समय वे भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान पुणे, में फिल्म निर्देशन के अंतिम वर्ष में अध्ययनरत हैं।



## GANESH SHANKAR GAIKWAD

Ganesh Shanker Gaikwad studied Civil Engineering followed by Masters in Communication Studies. Presently he is pursuing his studies in the final year in film direction at FTII Pune

## सर्वोत्तम छायांकन

### परमवीर सिंह

कैमरामैन **परमवीर सिंह** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

फिल्म संस्करण प्रयोगशाला **एड लैब्स** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 के लिए सर्वोत्तम छायांकन का पुरस्कार दिन पर दिन कम होते जा रहे पारसी समुदाय के दृश्यों के संगीतमय प्रदर्शन के लिए फिल्म **पारसीइवाड़ा, तारोपोर प्रजेन्ट डे** को दिया जाता है। इसमें प्रकाश और संगीत का शानदार कल्पनात्मक प्रयोग किया गया है।

## AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

### PARAMVIR SINGH

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Cameraman: **Paramvir Singh** of the film **Parsiwada, Tarapore Present day (English /Gujarati)**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the **Laboratory processing the film** Laboratory: **AD Labs**

### CITATION

The Best cinematography award of 2005 is given to *Parsiwada, Tarapore Present day* for its visually poetic depiction of the decadent Parsi community, with imaginative use of great lighting and compositions.

## परमवीर सिंह

भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान में दाखिला लेने से पहले परमवीर सिंह ने विज्ञापन उद्योग में कला निर्देशक के रूप में काम किया है।



## PARAMVIR SINGH

Paramvir Singh worked as Art Director in Advertising industry before joining the Film & Television Institute of India.



## सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

### अनमोल भावे

ध्वनि आलेखन **अनमोल भावे** को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 के लिए सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का पुरस्कार फिल्म **क्लोजर** को दिया जाता है। फिल्म में ध्वनि आलेखन का अद्भुत तथा काल्पनिक इस्तेमाल किया गया है। क्लोजर दर्शकों को खूबसूरती और अचंभित कर देने वाले दुनिया में पहुंचा देती है।

## AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

### ANMOL BHAVE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Audiographer: **Anmol Bhave** for the film **Closer**

### CITATION

The Best Audiography award of 2005 is given to **Closer** for its outstandingly imaginative use of sound design complementing an equally breath-taking visual wizardry. Closer leaves its audience with a sense of beauty and awe.

## अनमोल भावे

पुणे विश्वविद्यालय से इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, अनमोल भावे ने फिल्मों में अपना कैरियर शुरू करने के लिए भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे से ऑडियोग्राफी में स्नातकोत्तर डिप्लोमा हासिल किया। वे साउन्ड रिकार्डिस्ट और साउन्ड डिजाइनर तथा संगीतकार के रूप में भी कार्य कर चुके हैं।



## ANMOL BHAVE

An Electrical Engineer from University of Pune, Anmol Bhawe took a P.G. Diploma in Audiography from the Film & Television Institute of India to start his career in films. He has been active both as Sound Recordist and Sound Designer as well as Music Composer and has a number of award winning films and T.V. serials to his credit.

## सर्वोत्तम सम्पादन

### स्व० विभूति नाथ झा

सम्पादन विभूति नाथ झा को रजत कमल और 10,000 रुपए का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 के लिए सर्वोत्तम सम्पादन का पुरस्कार कुशल सम्पादन के लिए फिल्म **नैना जोगिन** को दिया जाता है। फिल्म का सम्पादन इतनी कुशलता से किया गया है कि यह पता ही नहीं लगता है कि कब एक कड़ी समाप्त हो गई और दूसरी शुरू हो गई ।

## AWARD FOR THE BEST EDITING

### LATE VIBHUTI NATH JHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Editor: **Vibhuti Nath Jha** for the film **Naina Jogin (Hindi/ Maithili)**

### CITATION

The award for the Best Editing for the Year 2005 is given to *Naina Jogin* for its skillful editing. It is difficult to make out where one sequence ends and the other begins!

## स्व० विभूति नाथ झा

स्व० विभूति नाथ झा एक जाने माने फिल्म सम्पादक थे। उन्होंने कई लघु एवं फीचर फिल्मों में अपना कौशल दिखाया।



## LATE VIBHUTI NATH JHA

Late Vibhuti Nath Jha was a known film editor and had worked in different short and feature films.

## सर्वोत्तम प्रकथन/वॉयस ओवर

अजय रैना

प्रकथक अजय रैना को रजत कमल और 10,000 रुपएका नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2005 के लिए सर्वोत्तम प्राकथन का पुरस्कार फिल्म **वापसी** को दिया जाता है। प्रथम पुरुष में संवादों के जरिए निर्देशक ने फिल्म निर्माण में अपनी ही आवाज शब्दशः समाहित कर दी है।

## BEST NARRATION /VOICE OVER

AJAY RAINA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Narrator: **Ajay Raina** for the film **Wapsi** (English/Hindi/Urdu/Punjabi/ Kashmiri)

CITATION

The best Narration/Voice Over award for 2005 is given to **Wapsi**. Spoken in the first person, the Director literally brings his personal voice into its making.

## अजय रैना

भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान से शिक्षा प्राप्त अजय रैना पिछले 12 साल से वृत्तचित्र बना रहे हैं। कश्मीर को घर वापसी के बारे में उनकी फिल्म **टैल दैम, द ट्री दे हैड प्लांटेड हैज नाउ ग्रोन** को कई पुरस्कार मिले हैं। इनमें गोल्ड क्रॉच अवार्ड, आरएपीए अवार्ड और 2002 में एफडीपीए सिल्वर ट्रॉफी शामिल है।



## AJAY RAINA

An alumni of FTII Ajay Raina has been making documentaries for the last 12 years. His film about journey back home to Kashmir **'Tell them, the tree they had planted has now grown'** has won many awards including the Gold Conch Award, RAPA award and the IDPA Silver trophy in 2002



## विशेष उल्लेख

### विभु पुरी

निर्णायक मंडल ने फिल्म **पॉकेट वॉच** के लिए निर्देशक **(विभु पुरी)** का विशेष रूप से उल्लेख किया है। अच्छी परिकल्पना वाले विभु पुरी का निर्देशन, छायांकन और निष्पादन महान कला को दर्शाता है।

और

### विद्युत कोटोकि

निर्णायक मंडल ने फिल्म **भ्राइमोमन थिएटर** के लिए निर्देशक **(विद्युत कोटोकि)** का विशेष रूप से उल्लेख किया है। निर्देशक ने असम की अपनी छोटी सी सांस्कृतिक दुनिया का मनोहारी चित्रण किया है और इसमें मनोभाव और आनन्द के क्षणों को सही मायनों में प्रस्तुत किया है।

## SPECIAL MENTION

### VIBHU PURI

The Special Mention for 2005 is made for the Director **(Vibhu Puri)** of the film **“Pocket Watch”**. A director's film with competent execution of a good concept with great art direction, cinematography and performances.

### BIDYUT KOTOKY

The Special Mention for 2005 is made for the Director **(Bidyut Kotoky)** of the film **“Bhramimoman Theatre”** for its fascinating picture of a cultural sub-world of Assam, capturing true moments of emotion and joy.

## विभु पुरी

पुरानी दिल्ली में जन्मे और पले-बढ़े विभु पुरी ने भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान, पुणे में दाखिला लेने से पहले जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय से जन-संचार में डिप्लोमा लिया। उनकी डिप्लोमा फिल्म **चाबी वाली पॉकेट वाच** उर्दू भाषा को श्रद्धांजलि है।



## VIBHU PURI

Born and brought up at old Delhi Vibhu Puri graduated in Management from Delhi University. He studied Mass Communication at the Jamia Millia Islamia University before joining the FTII Pune. **Chhabi Wali Pocket Watch** is his diploma film ad is a tribute to Urdu, to which her mother, an unexplored poetess, was introduced by his father.

## विद्युत कोतोकी

पुणे विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर विद्युत कोतोकी ने सिम्बियोसिस, पुणे से पत्रकारिता तथा संचार में डिप्लोमा हासिल किया है। पत्रकार के रूप में विभिन्न समाचारपत्रों में योगदान के अलावा उन्होंने विभिन्न टीवी चैनलों के लिए 1997 से 2001 के बीच साधारण लेकिन आकर्षक विषयों पर लघु फिल्में तथा व्यक्तित्व आधारित कार्यक्रम बनाए। इनमें डीडी-1 पर **सुरभि** कार्यक्रम भी शामिल है। उन्हें कई पुरस्कार मिले हैं। वे थियेटर में भी सक्रिय हैं।



## BIDYUT KOTOKY

A Masters in Economics from University of Pune, Bidyut Kotoky has done P.G. Diploma in Journalism & Communications from the Symbiosis, Pune. Besides contributing in a number of newspapers as a journalist, he has produced & directed over 100 short films on little known, yet fascinating topics of human-interest and personality based programs from different nooks and corners of India (1997- 2007) for different programmes and T.V. channels like **'Surabhi'** on DD I etc. together with a number of promotional films for various organizations and has won a number of awards. He has also been active in theatre.

पुरस्कार जो नहीं दिये गये  
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म  
सर्वोत्तम गवेषणा/साहसी फिल्म  
पवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म  
सर्वोत्तम संवर्धनात्मक फिल्म  
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

**Award Not Given**

**Award for Best Educational/Motivational/Instructional Film**  
**Award for the Best Exploration/Adventure Film**  
**Award for the Best Film on Family Welfare**  
**Award for the Best Promotional Film**  
**Award for Best Music Direction**

---

सिनेमा पर सर्वोत्तम  
लेखन पुरस्कार

---

**Award for the Best  
Writing on Cinema**

## सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार 2005

### कुन्दन

लेखक **शरद दत्त** को स्वर्ण कमल और 15,000 रूपए का नकद पुरस्कार

प्रकाशक **सारांश प्रकाशन** को स्वर्ण कमल और 15,000 रूपए का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

वर्ष 2005 के लिए सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक का पुरस्कार **कुन्दन** को दिया जाता है। पुस्तक में महान गायक-अभिनेता के.एल. सहगल की जीवन और कला का बड़ा मार्मिक और जीवन्त वर्णन किया गया है। यह पुस्तक छात्रों और भारतीय सिनेमा के इतिहास में रुचि रखने वालों के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोगी सिद्ध होगी।

## AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA 2005

### KUNDAN

(a) Swarna Kamal and a Cash Prize of Rs.15,000/- to the Author : **Sharad Dutt**

(b) Swarna Kamal and a Cash Prize of Rs.15,000/- to the Publisher : **Saransh Prakashan**

### CITATION

The Award is presented to the book *Kundan* for its warm and insightful reconstruction of the life and art of the legendary singer-actor KL Saigal, as well as its significance as reference material which will be accessible to students and cineastes of Indian cinema history.

## शरद दत्त

दूरदर्शन केन्द्र के पूर्व निदेशक, शरद दत्त विभिन्न हस्तियों और महत्वपूर्ण मुद्दों पर 100 से ज्यादा वृत्त चित्र बना चुके हैं। वे कई टीवी धारावाहिकों और कार्यक्रमों से भी जुड़े रहे हैं। महान संगीतकार अनिल विश्वास और के.एल. सहगल की जीवनी लिखने के अलावा उन्होंने कई अन्य पुस्तकें भी लिखी हैं।



## SHARAD DUTT

A former Director of Delhi Doordarshan Kendra, Sharad Dutt has produced more than 100 documentaries on many eminent personalities and on various important issues. He has also been associated with a number of TV serials and other programmes. He has authored biographies of Music Maestro Anil Biswas and K.L. Saigal together with many other books to his credit.



## सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक 2005

**भारद्वाज रंगन**

भारद्वाज रंगन को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपए का नकद पुरस्कार

### प्रशस्ति

लोकप्रिय सिनेमा के विद्वतापूर्ण तथा पाठकों की अभिरुचि के अनुसार समीक्षा के लिए यह पुरस्कार **भारद्वाज रंगन** को दिया जाता है। श्री रंगन की समालोचना में विश्व सिनेमा के रुझान और अनुभूति का ज्ञान और इसके स्वरूप तथा इस माध्यम की आम आदमी तक पहुंच के बारे में गहरी समझ स्पष्ट नजर आती है।

## AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC 2005

**BARADWAJ RANGAN**

Swarna Kamal and cash prize of Rs.15,000/- to **BARADWAJ RANGAN**

### Citation

The Award is presented for intelligent and reader-friendly reviews of popular cinema with a depth of understanding of the form, a discernible passion for the medium bulwarked consistently by a knowledge of the trends and touchstones of global cinema.

## भारद्वाज रंगन

बीआईटीएस (पिलानी) से रसायन इंजीनियरिंग में स्नातक, भारद्वाज रंगन ने एएएआई (एडवर्टाइजिंग एजेंसी ऑफ इंडिया, मुंबई) में चुने जाने के बाद लेखन यात्रा शुरू की। इसी दौरान उन्होंने चेन्नई के जे. वाल्टर थाम्पसन के साथ पटकथा लेखन भी किया।

इसके बाद विज्ञापन तथा जन-सम्पर्क में स्नातकोत्तर डिग्री के लिए मिलुवाकी युनिवर्सिटी से पूर्ण छात्रवृत्ति प्राप्त की। स्नातकोत्तर अध्ययन का मुख्य विषय था, इंटरनेट विज्ञापन। बाद में उन्होंने अमरीका में सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) सलाहकार के रूप में भी काम किया।

लेकिन अन्दर छुपे लेखक ने उनका पीछा नहीं छोड़ा और भारद्वाज ने सीतागीताडॉटकॉम के लिए फिल्मों की समीक्षा शुरू की। इस कार्य पर उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया से प्रेरित होकर वे अमरीका छोड़ कर भारत आ गए। आजकल वे चेन्नई से निकलने वाले **न्यू सन्डे एक्सप्रेस** के लिए समालोचक के रूप में कार्य कर रहे हैं।



## BARADWAJ RANGAN

Baradwaj Rangan is a Chemical Engineering graduate from BITS (Pilani). His journey to writing began with selection to the AAAI (Advertising Agencies Association of India, Mumbai) workshop, which led to a stint copywriter with J Walter Thompson, Chennai.

Then came a full scholarship from Marquette University, Milwaukee, for a Master's degree in Advertising and Public Relations, focusing on Internet advertising. Later he also worked as an IT consultant for about five years in U.S.A.

The writing bug, however, never quit, and Baradwaj began reviewing films for sitagita.com. The enthusiastic response to this prompted him to leave the U.S. and return to India to follow his creative instincts. He is now Critic with The New Sunday Express, Chennai.

---

कथासार : **Synopses :**  
कथाचित्र **Feature Films**

---

## 15 पार्क एवेन्यू

बंगाली/125 मिनट/35 एम.एम./रंगीन

**निर्देशक:** अपर्णा सेन, **निर्माता:** विपिन कुमार

वोरा, **पटकथा:** अपर्णा सेन,

**छायांकन:** हेमंत चर्तुवेदी, **कलाकार:** सुभाशीष मुखर्जी, जयराज भट्टाचार्य, नील मुखर्जी

फिल्म दो बहनों, अंजलि अनु और मीताली (मीठी) की कहानी है। अंजलि और उसका भाई महेश अपनी माँ रेवा की पहली शादी की संतान हैं। उनके पिता कर्नल माथुर का देहान्त हो गया था। अपने पति के मित्र ब्रिगेडियर सुनील माथुर की मदद से रेवा ने अपने दोनों छोटे बच्चों को पाल-पोस कर बड़ा किया था। बाद में रेवा ने सुनील से शादी कर ली थी। इस शादी के बाद मीताली पैदा हुई थी। दुर्भाग्य से मीताली बचपन से ही मानसिक रोग से पीड़ित थी और उसे मिर्गी के दौर पड़ते हैं। हालाँकि 22-23 साल की उम्र तक वह काफी चुस्त थी और उसकी सगाई भी हो चुकी थी। एक पब्लिशिंग हाउस के लिए पत्रकार के रूप में काम करने वाली मीठी सगाई के बाद अपने काम के सिलसिले में बाहर जाती है और राजनीतिक गुण्डों के बलात्कार का शिकार हो जाती है। मानसिक आघात से उसका सुप्त पड़ा सिज़ोफ्रेनिया रोग फिर से जाग जाता है और वह यह मानने लगी है कि वह अपने बच्चों और पति के साथ 15 पार्क एवेन्यू में रहती है। लेकिन यह घर वह कभी नहीं तलाश पाती। एक दिन मीठी अपनी बहन के साथ छुट्टियाँ बिताने भूटान जाती हैं। संयोग से जयदीप भी अपने परिवार के साथ भूटान आया हुआ है। यहाँ उसकी मीठी से मुलाकात होती है।

कलकत्ता वापस आने के बाद जयदीप भी 15 पार्क एवेन्यू का पता लगाने जाता है। यह एक ऐसा पता है जो कभी नहीं मिलेगा।



## 15 PARK AVENUE

Bengali/ 125 Min/35MM/Colour

**Director:** Aparna Sen, **Producer:** Bipin Kumar Vohra, **Screenplay:** Aparna Sen  
**Cinematography:** Hemnat Chaturvedi,  
**Cast :** Subhashis Mukherjee, Joyraj Bhattacharge, Neel Mukherjee

This is a story of two sisters, Anjali and Mitali – Anu and Meethi as they are called affectionately at home. Anjali and her brother Mahesh were their mother Rewa's children from her first marriage to Col. Mathur who had died soon after Mahesh was born. Rewa had brought up her two small children with the help of her late husband's friend – a bachelor by the name of Brigadier Sunil Mathur. Later, Rewa had married Sunil who had been a good surrogate father to Anjali and Mahesh and Mitali had been born. Mitali or Meethi, the youngest, unfortunately, turned out to be mentally and physically challenged. She suffered both from chronic schizophrenia and epilepsy, but had been quite functional up to her early twenties.

She had even got engaged to a young man called Joydeep or Jojo, as she called him. But had finally given in with good grace. Their engagement also took place but, after that, disaster had struck! Meethi, who was working for a publishing house as a journalist, had gone by herself on a journalistic assignment outside Calcutta where political goons had raped her repeatedly. This incident had acted as a trigger for Meethi's hitherto dormant schizophrenia and she started believing that she lived with her husband and children at 15 Park Avenue and would insist on being taken to look for her house, which she could never find. Meethi and her sister go to Bhutan on a holiday. By a strange co-incidence Joydeep too was here with his family. On seeing Meethi Joydeep felt completely shattered but, strangely, Meethi did not recognize him at all! Back in Calcutta Joydeep does go with Meethi to look for 15 Park Avenue – to look for something one can never find. But, is Meethi the only one who is looking for the impossible?



## आडम कुत्थु

तमिल/112 मिनट

**निर्देशक:** टी.वी. चन्द्रन, **निर्माता:** लाईट एंड शेड मूवी मेकर्स प्रा. लि., **छायांकन:** मधु अंबट, **कलाकार:** चेरन, नवया नायर

फिल्म का घटनाकाल 1950, 1975 और 2005 है और इसमें तीन अलग-अलग लोगों को केंद्र बिन्दु बनाया गया है। 1950 में एक स्थानीय जमींदार हुकुम न मानने पर एक दलित महिला वेल्लयम्मा का सारे आम सिर मुड़वा देता है। गणशेखरन, जिसने बचपन में यह घटना देखी है, 1975 में फिल्म संस्थान से डिग्री ले चुका है। इस घटना पर फिल्म बनाने के सिलसिले में बम्बई की एक मॉडल प्रभा मेनन और अपनी टीम के साथ उस गांव में जाता है। प्रभा मेनन को गणशेखरन ने अपनी फिल्म की नायिका बनाया है। फिल्म के दृश्य तैयार करते समय स्थानीय जमींदार की अगुवाई में हिंसक मीड यूनिट और प्रभा मेनन पर हमला कर देती है। प्रभा मेनन जिसे वेल्लयम्मा की भूमिका निमाने के लिए अपना सिर मुड़ाना पड़ा है, आत्महत्या कर लेती है। क्रोधित गणशेखरन और उसके साथी मिलकर जमींदार की हत्या कर देते हैं। पुलिस गणशेखरन को गिरफ्तार कर लेती है, लेकिन तीन दिन बाद उसकी लाश एक नदी के किनारे मिलती है। 2005 का घटनाक्रम कालेज छात्रा मणिमेगलाई से शुरू होता है। मणिमेगलाई को अपने प्रेमी और होने वाले पति से उपहार में एक चूड़ी मिली है। वह कपड़े धोने के लिए तालाब के किनारे गई हुई है। उसे गणशेखरन की अपूर्ण फिल्म देखने का मौका मिलता है। मणिमेगलाई यह देखकर आश्चर्य चकित रह जाती है कि फिल्म में दिखाई जा रही लड़की का चेहरा उससे काफी मिलता-जुलता है। वह उस स्थान को देखने के लिए निकल पड़ती है। वहां मणिमेगलाई की भेंट लुइस बाबू से होती है। लुइस ने फिल्म में जमींदार की भूमिका निभाई थी। मणिमेगलाई लुइस से सारी कहानी सुनती है और गणशेखरन की फिल्म को फिर से बनाने की वान लेती है।



## AADUM KOOOTHU

Tamil/112 minutes

**Director :** T.V. Chandran, **Producer:** Light and Shadow Movie Makers Pvt Ltd., **Cinematography :** Madhu Ambat, **Cast :** Cheran, Navya Nair

The film deals with three different periods 1950, 1975 and 2005 and focuses on three different individuals. In 1950 Vellayamma, a dalit woman was tonsured and humiliated in public by a local Zamindar for not succumbing to his wishes. In 1975, the story focuses on Gnanasekaran, who had seen this incident as a child, is now a film institute graduate. In his effort to make a film on this incident, he goes to the village along with his crew and the leading lady Prabha Menon, a Bombay model. The local Zamindar

disrupts the shooting and Prabha Menon, who had to tonsure her head for the role, suicide. Gnanasekaran gets furious and kills the zamindar. He is captured by the police but his body is found on a riverside three days after.

The 2005 relates to the story of Manimegalai who is a college student. She gets in gift a bangle from her fiancée. While washing the clothes a light emanates and a black - white film unfolds from under the bangle, the film left unfinished by Gnansekaaran. Manimegalai is stunned to find that the girl in the film has features similar to those of her own. She sets out to visit the place and there she meets Louise Babu who had acted as Zamindar in the film. He tells her the entire story and Manimegalai imbibes the passion of Gnanasekaran and decides to redo the film.



## अचुविन्टे अम्मा

मलयालम/130 मिनट

**निर्देशक:** सत्तयान अनथीकाळ मारावाटीकल,  
**निर्माता:** पी.वी. गंगाधरन, **स्क्रीनप्ले:** रंजन प्रमोद,  
**छायांकन:** अलगापन, **कलाकार:** सुनील, मीरा  
जेसमिन, ओडुविल उन्नीकृष्णन, उर्वशी

यह फिल्म एक माँ और बेटी के बीच अंतरंग संबंधों के बारे में है। फिल्म इस तथ्य पर

प्रकाश डालती है कि मानवीय रिश्ते कभी-कभी खून के रिश्तों से भी ज्यादा मजबूत होते हैं और खून का रिश्ता न होने के बावजूद दो औरतों के बीच माँ-बेटी का मजबूत रिश्ता हो सकता है। फिल्म में माँ को ताकत और बलिदान का प्रतीक दिखाया गया है। इसमें एक माँ के अपनी उस बेटी के प्रति प्रेम, लगाव, देखभाल और चिन्ता को दिखाया गया है, जिसे उसने जीवन में हर विपत्ति का सामना करते हुए बड़ा किया है।

## ACHUVINTE AMMA

Malayalam/130 minutes

**Director:** Sathyan Anthikkad  
**Maravattikkal, Producer:** P.V.  
Gangadharan, **Screenplay :** Ranjan  
Prمود, **Cinematography :** Alagappan,  
**Cast :** Sunil, Meera Jasmine, Oduvil  
Unnikrishnan, Oorvasi

This film is about the very intimate relationship between a mother and daughter. It highlights the fact that human bondages can sometimes be stronger than blood relations and a perfect mother-daughter relationship is possible between two women without having a blood relation. The film depicts the mother as symbol of strength and sacrifice. It highlights the love, passion, care and anxiety of a mother for her daughter whom she had brought up alone fighting all odds in life.



## अन्नियन

तमिल/153 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** शंकर, **निर्माता:** वी. रवि चन्द्रन,  
**स्क्रीनप्ले:** शंकर, **छायांकन:** आई.एस. रविवरम,  
**कलाकार:** विक्रम, सुधा, प्रकाश राज, शांति विलियम्स

युवा वकील, रामानुजन कट्टरपंथी अयंगर ब्राह्मण परिवार से है। रामानुजन एक ऐसी मानसिक बीमारी से ग्रस्त है, जिसमें एक व्यक्ति अपने अन्दर एक साथ कई व्यक्तित्व जीता है। इस रोग की वजह रामानुजन कई बार कानून अपने हाथ में ले लेता है और गैर-कानूनी घंघों और ब्रष्टाचार में लिप्त लोगों को दण्डित करने लगता है रामानुजन पड़ोस में रहने वाली नन्दिनी को प्यार करता है। लेकिन नन्दिनी को रामानुजन का बात-बात पर नियमों-कानूनों का हवाला देना पसंद नहीं है। रामानुजन नन्दिनी का दिल जीतने के लिए आधुनिक जमाने का रेमो बन जाता है, लेकिन इस आधुनिक रेमो को कई बार विचित्र हरकतें करते देख नन्दिनी को आश्चर्य होता है। मनोचिकित्सक से परामर्श लेने पर उसे पता चलता है कि रामानुजन पर्सनालिटी डिस-ऑर्डर रोग से पीड़ित है। इस बीच पुलिस रामानुजन को गिरफ्तार कर लेती है और जेल में डाल देती है। नन्दिनी के प्यार और समझबूझ से रामानुजन अपनी बीमारी से छुटकारा पा जाता है। जेल से बाहर आने के बाद रामानुजन और नन्दिनी शादी के बंधन में बंध जाते हैं।



## ANNIYAN

Tamil/153 minutes/35mm/Colour

**Director :** Shankar; **Producer:** V. Ravi Chandran, **Screenplay :** Shankar, **Cinematography :** I.S. Ravivarman, **Cast :** Vikram, Sudha, Prakash Raj, Shanthi Williams

Ramanujan is a young lawyer from an orthodox Brahmin Iyengar family. He suffers from a Multiple Personality Disorder, under the influence of which, he, at times, takes the law into his hands to punish those involved in illegal activities and corruption. Ramanujam

loves his neighbour Nandini. But Nandini does not like his strict adherence to Rules and Regulations in every aspect of life. In order to woo his love, Ramanujam changes himself as Remo, a modern looking youth and catches Nandini's fancy. But Nandini is surprised when she finds Remo acting differently on certain occasions. On checking with the Psychiatrist she comes to know of his personality disorder. Meanwhile police nabs Ramanujam and he is sentenced to jail. Nandini's love and understanding attitude helps him to come out of his illness. After coming out of the jail the two marry.

## अपहरण

हिन्दी/165 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक एवं निर्माता:** प्रकाश झा, **स्क्रीनप्ले:** प्रकाश झा, श्रीधर राघवन, मनोज त्यागी, **छायांकन:** अरविन्द, **कलाकार:** नाना पाटेकर, अजय देवगन, विपाशा बसु

फिल्म की पृष्ठभूमि बिहार में फलता-फूलता अपहरण उद्योग है। फिल्म एक पिता और पुत्र के बीच विक्षुब्ध तथा जटिल रिश्तों की कहानी है। फिल्म का नायक अजय पुलिस में नौकरी करना चाहता है। वह मानता है कि पुलिस में नौकरी से आगे चल कर ताकत, सम्मान, समाज में ऊंचा ओहदा और अपनी बचपन की प्रेमिका मेघा के साथ सुरक्षित जीवन बिताने का मौका मिलेगा। उसे विश्वास है कि इससे उसके पिता को भी गर्व होगा। अजय यह नौकरी पाने के लिए कुछ भी करने यहां तक की रिश्त देने को भी तैयार है। लेकिन उसका आदर्शवादी पिता इस कोशिश को नाकाम कर देता है। निराश और दिशाहीन अजय अपराध की ऐसी अंधेरी दुनिया में चला जाता है जहां से लौटना मुश्किल है।



## APAHARAN

Hindi/165 Min/35mm/Colour

**Director & Producer:** Prakash Jha, **Screenplay :** Prakash Jha, Shridhar Raghavan, Manoj Tyagi, **Cinematography :** Arvind, **Cast :** Nana Patekar, Ajay Devgan, Bipasha Basu

Apaharan is the story of a tumultuous and complex relationship between a father and son set against the backdrop of the thriving kidnapping industry in Bihar. The hero of the film Ajay aspires for a job in the police,

which he thinks is his ticket to a future of power, respectability, social status and a secure life with his childhood sweetheart Megha. He hopes that it will also make his father proud. Ajay is prepared to do anything to get such a job even to bribe. But his desperate attempt is snapped by the choices made by his idealist father.

Dejected and disillusioned, Ajay is drawn into a dark world from which there is no return.

## बागी

पंजाबी/141 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** सुखविन्दर धंजल, **निर्माता:** गज देओल, **स्क्रीनप्ले:** सुखविन्दर धंजल एवं सरदार सोही, **कलाकार:** ओम पुरी, गुरलीन घोषड़ा

बागी जैसा कि नाम से ही पता चलता है एक क्रान्तिकारी फिल्म है। लेकिन यह विद्रोह व्यवस्था, ताकत या कानून के खिलाफ नहीं है। यह संघर्ष निस्वार्ता और जातिवाद जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ है। फिल्म का संदेश है कि गरीबों और पद-दलितों से नफरत मत करो। संघर्ष एकता और मानवता के लिए है।

दीपा और प्रीत एक दूसरे से प्यार करते हैं। कालेज परिसर में उनका प्यार का सपना और रोमान्स फल-फूल रहा है। उनके प्यार ने आत्माओं के मिलन की ऊंचाइयों को छू लिया है। लेकिन जब शादी की बात आती है तो जाति और नस्ल आड़े आ जाता है। गरीबी उनके रास्ते का रोड़ा बन जाती है और यह प्रेमी युगल बागी हो जाता है।

शिवदेव सिंह (नायक का पिता) इस शादी के सख्त खिलाफ है, क्योंकि प्रीत (नायिका) अनुसूचिता जाति की है। प्रीत एक समझदार पढ़ी-लिखी लड़की है, उसका बड़ा भाई (हाकम सिंह) सेना में अधिकारी है वह इन युवा प्रेमियों की मदद करता है। वह सीमा पर ही नहीं बल्कि समाज के दुश्मनों से भी लड़ता है।



## BAGHI

Punjabi/141 minutes/35mm/Colour

**Director:** Sukhminder Dhanjal, **Producer:** Gaj Deol, **Screenplay:** Sukhminder Dhanjal & Sardar Sohi, **Cast:** Om Puri, Gurleen Chopra

'BAGHI' as it sounds from its title is definitely a revolutionary film, but the revolt is not against the system, power or the law of the land. The fight is against the social evils like illiteracy and casteism. After thousand years of preaching by of our great Gurus, Saints and Sufi Fakirs, we have not changed. The message shows that no one should look down at the poor and downtrodden.

Deepa and Preet are two love-birds, who are flourishing their dream of love and romance in the college campus. Their love

touches the heights of togetherness and eternity, but when it comes to the marriage, the high wall of caste and creed, poverty stands tough in their way. Then the lovers become 'BAGHI'.

Shivdev Singh (Hero's father) is deadly against their love, because, Preet (Heroine) belongs to the scheduled caste. Preet is an intelligent and scholarly girl. Her elder brother is educated military officer (Hakam Singh) and is an enlightened man. He joins hands with young lovers. He fights not only on border, but also fights against the evils of society and helps the two lovers in demolishing the wall of hatred.



## बोम्मलाटा - ए बेलीफुल ऑफ ड्रीम्स तेलगु/95 मिनट

**निर्देशक:** प्रकाश कोवेलुमुडी, **निर्माता:** आर.के.फिल्म एसोसिएट एंड स्पीट मीडिया प्रा. लि., **स्क्रीनप्ले:** प्रकाश कोवेलुमुडी, **छायांकन:** किरण रेड्डी, **कलाकार:** मास्टर साई कुमार, श्रेया सरन

नी साल के रामू का बस एक ही सपना है, वह पड़ोस की बस्ती वाले स्कूल में पढ़ना चाहता है। इस बस्ती में कूड़ा-कचरा बीन कर उसने अपने दिन काटे हैं। कठपुतली के खेल का वर्णन करने वाले एक व्यक्ति को रामू अपनी सारी कहानी सुनाता है। यह व्यक्ति रामू के सपने को अपने कठपुतली के खेल के जरिए जगह-जगह दिखाने का निश्चय करता है और शुरू हो जाती है एक कल्पना भरी कहानी। रामू को अपना सपना पूरा करने की तलाश में मिलती है एक जर्जर व्यवस्था। उसकी मुलाकात एक नकली ज्योतिषी से होती है, एक सामाजिक कार्यकर्ता रामू का फायदा उठाना चाहता है, एक पीएचडी का छात्र रामू की दुर्दशा से फायदा उठाता है, स्कूल में पढ़ने की रामू की लालसा उसे एक दिन षड्यंत्रकारी डेयमास्टर से भी मिलती है। इन सब घटनाओं से रामू लगभग टूट चुका है। अचानक रामू को यहां से मदद मिलती है, जहां से उसने सोचा भी नहीं था। अन्त में, रामू के मजबूत इरादे उसके सपने को सच बना देते हैं।



### BOMMALAATA A BELLY FULL OF DREAMS Telugu/95 minutes

**Director :** Prakash Kovelamudi, **Producer:** R.K. Film Associates & Spirit Media Pvt Ltd , **Screenplay:** Prakash Kovelamudi, **Cinematography:** Kiran Reddy, **Cast :** Master Sai Kumar, Shreya Saran

Nine year old Ramu has a simple dream of going to school at the local neighbourhood- the place where he made a living as a rag picker. As with everything in his life he invests the dream in the belly

of a puppet narrator - Know-it-all. The narrator decides to talk about Ramu's dream and a fable begins. Ramu in his quest comes across a broken system; fake astrologer, a social activist who uses Ramu to further his own interests, a PhD student who benefits from his plight and a scheming headmaster. The system breaks Ramu completely. Suddenly Ramu finds help from the most unexpected quarters.....Finally Ramu emerges with a belief so strong that it leads him to realize his dream - out of the Belly of a puppet.

## ब्लैक

हिन्दी/125 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** संजय लीला भंसाली, **निर्माता:** अप्पलौज भंसाली फिल्म प्रा. लि., **छायांकन:** रवि के. चन्द्रन, **कलाकार:** अभिताम बच्चन, रानी मुखर्जी, धृतिमन चटर्जी, श्रेयनाज पटेल

48 वर्ष का देबराज सहाय बहरे और नेत्रहीनों के स्कूल में अध्यापक है। नेत्रहीन मिशेल एक गुस्सैल लड़की है। आँखें न होने की वजह से वह बाहरी दुनिया को देख नहीं पाती।

देबराज मिशेल को सुधारने और उसका जीवन संवारने की ठान लेता है। वह चाहता है कि मिशेल सामान्य जीवन जीये। देबराज मिशेल की आँख, कान यानि सब कुछ बन जाता है। वह मिशेल की ऐसी परछाई बन जाता है जो उसे रोशनी की ओर ले जा रही है।

अलझैमर रोग की वजह से देबराज की याददास्त कमजोर होती जा रही है, लेकिन वह समझता है कि बुढ़ापे की वजह से ऐसा हो रहा है।

समय बीतता जाता है ... मिशेल का एक ही लक्ष्य है, देबराज के सपने को साकार करना और एक दिन वह कालेज की डिग्री प्राप्त करने में सफल हो जाती है।



## BLACK

Hindi /125 Min. /35mm/Colour

**Director:** Sanjay Leela Bhansali  
**Producer:** Applause Bhansali Films Pvt Ltd  
**Screenplay:** Cinematography: Ravi K. Chandran, **Cast :** Amitabh Bachchan, Rani Mukherjee, Dhritiman Chatterjee, Shernaz Patel

Forty eight year old Debraj Sahai is a teacher at the school for the Deaf and Blind, and takes up the challenge to teach a deaf and blind girl, Michelle. Michelle is unruly and very ill mannered, her world is full of darkness, she has no way of communicating with the world.

This child becomes the focus of Debraj's life. He has only one thing on his mind, and that is to make this child as normal as

possible. He wants her to lead a normal life, go to a normal college and study with regular students. He becomes her eyes, her ears .. he makes her see this new facet of life and the world through his vision. Studying with her, sharing her wonder at the discovery of life. He is her constant shadow leading her towards light.

Through all this, the slow and gradual onslaught of Alzheimer's disease is corroding his memory with patient persistence. But Debraj is unaware, putting down the lapses of memory to old age.

Years pass. Michelle succeeds in living an independent life, single-minded in her pursuit of what was Debraj's dream for her. She succeeds twelve years after she joined college; she gets her graduate degree.



## देवानामातिल

मलयालम/105 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** जयराज, **निर्माण एवं पटकथा :** आर्यदन शौकत, **छायांकन:** सन्नी जोसेफ, **कलाकार:** पृथ्वी भावना, ममूठी सुमा कुथूपरम्मा, वेवी शयाना

देवनमातिल एक युवा लड़की समीरा की कहानी है। समीरा मालाबार के एक पारम्परिक मुस्लिम परिवार की लड़की है। उसकी शादी अनवर से हो गई है। अनवर को पढ़ाई जारी रखने के लिए उत्तरी भारत में जाना पड़ता है। अनवर यहां धार्मिक कट्टरपंथियों के प्रभाव में आ जाता है। वह धार्मिक कट्टरता को पूरी तरह निमाना चाहता है। वह समीरा पर पर्दे में तथा दूसरों की पहुंच से दूर रहने के लिए दबाव डालता है। समीरा अपने पति के व्यवहार में आए इस बदलाव से दुखी और अचमित है।

जिसका भय था वही हुआ, एक आतंकवादी षड्यंत्र में शामिल होने के शक में पुलिस को अनवर की तलाश है। अनवर फरार हो जाता है। साम्प्रदायिक दंगे कराने के अनवर के षड्यंत्र को नाकाम करने के लिए दुखी समीरा अनवर को कमरे में बंद कर देती है और उसे पुलिस के हवाले कर देती है। अनवर को अपनी भूल का एहसास होता है और वह अपने प्रति समीरा के प्रेम और चिन्ता को समझ जाता है।



### DAIVANAMATHIL

Malayalam/105 minutes/35MM/Colour

**Director :** Jayraj **Producer and Screenplay:** Aryadan Shoukath, **Cinematography:** Sunny Joseph, **Cast :** Pritwiraj, Bhavana, Mammooty Subha Kuthuparamba, Baby Shabana

Daivanamathil is the story of a young girl Samira who is born and brought in a traditional Malabar Muslim family. She gets married to Anwar, who has to leave Kerala for North India to pursue his studies. Here Anwar get into the company of religious fanatics and now wants Samira to be veiled and to remain invisible and

inaccessibly private. He wants her to follow the orthodoxy in letter and spirit. Samira is grieved and shocked at this change in husband's behavior. .

The inevitable happens when police tracks down Anwar for his involvement in a terrorist conspiracy. He is forced to go into hiding. In a moment of agony and idealism, and apparently to prevent the communal tragedy, Anwar was hatching, Samira locks Anwar inside and turns him over to the Police. In the end, Anwar realizes his mistakes and recognizes Samira's deep love and concern for him.



## धावामाई धावमिरुन्तु

तमिल/197 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक एवं स्क्रीनप्ले:** चेरन, **निर्माता:** पी.ए. शानमुगम, **छायांकन:** एम.एस. प्रभु, **कलाकार:** राजकिरण, पदमप्रिया, चेरन, सरनया

छापेखाने का मालिक, मुथैया अपने दो बेटों, रामनाथन और रामलिंगम को अच्छी शिक्षा और जीवन देने के लिए संघर्ष कर रहा है। लेकिन पुरातनपंथी समाज का एक व्यक्ति मुथैया को अपने माँ-बाप से अलग होने के लिए मजबूर कर देता है। अपने बच्चों से दूर होने की माँ-बाप की पीड़ा को बड़े संवेदी तरीके से फिल्म में दर्शाया गया है। फिल्म बच्चों का जीवन संवारने में माता-पिता के बलिदान पर नजर डालने को मजबूर कर देती है।



### **DHAVAMAI DHAVAMIRUNTHU**

Tamil/197 minutes/35mm/Colour

**Director & Screenplay :** Cheran  
**Producer:** P.A. Shanmugham,  
**Cinematography:** M.S. Prabhu **Cast :**  
Rajkiran, Padmapriya, Cheran, Saranya

Muthaiyah, the owner of a printing press struggles to give the best possible education and quality of life to his two

sons, Ramnathan and Ramalingam. But in a traditional society Muthaiyah has to go through the bearing that such a society casts on an individual when he tries to move away from his parents. The trauma of a parent unwilling to let his children go away, is sensitively portrayed in the film. Just how much of ourselves do we owe to our parents. The film helps us to look back to notice the sacrifice parents make to shape the lives of their children.

## डोम्बिवली फास्ट

मराठी/110 मिनट

**निर्देशक:** निशिकांत कामत, **निर्माता:** रामाकान्त आर. मायकवाड, **पटकथा:** निशिकांत कामत तथा बाल (पराग कुलकर्णी), **छायांकन:** संजय जाधव, **कलाकार:** संदीप कुलकर्णी, संदेश जाधव

फिल्म मध्यमवर्गीय परिवार के व्यक्ति, माधव आप्टे की दिक्कतों के बारे में है। आप्टे अपनी पत्नी अल्का, बड़े बेटे राहुल और बेटी प्राची के साथ डोम्बिवली में रहता है। वह बम्बई फोर्ट स्थित एक बैंक में नौकरी करता है और हर रोज डोम्बिवली से सीएसटी तक ट्रेन से जाता है। आप्टे सिद्धान्तों वाला आदमी है। वह अपने आसपास के लोगों के अमानवीय और भ्रष्ट व्यवहार से नफरत करता है। उसका आदर्शवाद उसे कई बार परेशानियों में डाल देता है। फिल्म में दिखाया गया है कि पानी के टैंकर के आगे पानी भरने वालों की लम्बी कतार प्रिंसिपल को शिश्त देने को तैयार नहीं है, इसलिए बेटी को स्कूल में दाखिला न मिलने आदि से आप्टे किस कदर क्षुब्ध है। लेकिन उस दिन माधव अपना आपा खो देता है, जब उसके एक सहकर्मी ने बेइमानी से एक ऐसे कर्ज को मंजूर कर दिया, जिसे वह पहले ही निरस्त कर चुका था। अन्य सहकर्मी आप्टे का गुस्सा शान्त करने के लिए उसे कोल्ड ड्रिंक पिलाने ले जाते हैं। दुकानदार बोतल ठंडी करने के दो रुपए अलग से मांगता है। अचानक आप्टे को लगता है कि उसमें अलीकिक ताकत आ गई है। वह कोल्ड ड्रिंक की दुकान में तोड़-फोड़ मचा देता है। लोग तो उसे आज का रॉबिनहुड बता रहे हैं, लेकिन पुलिस वालों की मंशा कुछ और ही है।



## DOMBIVALI FAST

Marathi/110 minutes

**Director:** Nishikant Kamat, **Producer:** Ramakant R. Gaikwad, **Screenplay:** Nishikant Kamat & Bal (Parag Kulkarni), **Cinematography:** Sanjay Jadhav **Cast :** Sandeep Kulkarni, Sandesh Jadhav

This film is about the travails of a middle class family man, Madhav Apté, who lives in Dombivali with his wife Alka, elder son Rahul and daughter Prachi. Madhav works in a Bank at the Fort and daily travels from Dombivali to C.S.T. by train. He is man of principles and hates the inhuman and unjustified attitude of the people around him. In pursuit of his idealism he gets into various unpleasant situations. The film portrays his anguish at the long Q's before the water tanker, denial of school admission to his daughter, as he is not prepared to bribe the principal etc. But, one day Madhav loses his temper at a wrong deal committed by one of his colleagues in the bank in sanctioning a loan, which he had already rejected. His colleagues want him to cool down and take him to a cold drink shop. Suddenly Madhav realizes that he has got amazing powers and breaks the entire shop when the shopkeeper charges two rupees extra as chilling charges for the cold drink. This incident changes Madhav's course of life. People hail him as the modern day Robinhood but the police have instructions otherwise.

## हर्बर्ट

बंगाली/144 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** सुमन मुखोपाध्याय, **निर्माता:** काजल भर्ताचार्या, **कलाकार:** सुभाषीश मुखर्जी, जयरज भट्टाचार्य, नील मुखर्जी

फिल्म 40 साल के एक सनकी, हर्बर्ट सरकार की कहानी है, जो यह मानता है कि वह मुर्दों से बात कर सकता है। वह अपनी इस सनक को *मृतकों से संवाद* नाम से एक अच्छा खासा फायदेमंद धंधा बना लेता है। लेकिन बुद्धिवादियों की धमकी की वजह से उसे अपनी दुकान बन्द करनी पड़ती है और इस सदमे से वह आत्महत्या कर लेता है। लेकिन मृत के बाद उसकी ताकत और बढ़ जाती है और जब उसके मृतक शरीर को अंत्येष्टि गृह में रखा जाता है तो एक जोरदार विस्फोट होता है। कहानी बस यहीं से शुरू होती है।

फिल्म में परानुभूति और नियति का अनोखा मिश्रण है। इसमें अलौकिक शक्तियों वाले एक व्यक्ति के बदलते माहौल के अनुकूल बनने के संघर्ष और प्यार, दोस्त तथा समाज में पहचान बनाने की उसकी कोशिशों को दिखाया गया है। फिल्म नायक और कोलकाता दोनों के जीवन को साथ लेकर चली है।



## HERBERT

Bengali/144 Min/35MM/Colour

**Director:** Suman Mukhopadhyaya,  
**Producer:** Kajal Bhattacharjee, **Cast :**  
Subhashis Mukherjee, Joyraj  
Bhattacharjee, Neel Mukherjee

Film Herbert is the story of Herbert Sarkar – a forty year old crank who thinks that he can talk to the dead. He encashes this and sets up a roaring business called 'Dialogues with the Dead'. But under threats from the Rationalist group, he has

to close the shop. Not able to bear this loss he commits suicide. But after his death his prowess increases and as his body is put into the cremation chamber a blast occurs in the chamber. The film begins at this point.

The film depicts, with a rare blend of empathy and irony, the efforts of a 'gifted man's constant struggle to adapt to his changing surroundings and his efforts to gain love, friendship and social acceptance... It covers several decades not only in the life of its protagonist, but also in the life of Kolkata.



## इकबाल

हिन्दी/132 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** नागेश कुकूनूर, **निर्माता:** सुभाष घई,  
**पटकथा:** नागेश कुकूनूर, **छायांकन:** कलाकार:  
नसीरुद्दीन शाह, श्रेयास तालपाडे, श्वेता प्रसाद

इकबाल हिम्मत और हर हालत में अपना सपना सच कर दिखाने की कहानी है। फिल्म की पृष्ठभूमि 'क्रिकेट है।'

18 साल का गुंगा-बहरा इकबाल एक छोटे से कस्बे कोलीपाड़ में रहता है। उसके पिता अनवर को क्रिकेट से नफरत है। वह इसे केवल समय की बरबादी मानता है लेकिन इकबाल की माँ सईदा को क्रिकेट से लगाव है। इकबाल का एक ही सपना है, देश की क्रिकेट टीम में शामिल होना।

उसका मानना है कि ऐसा तभी हो सकता है जब गुरुजी उसे अपनी क्रिकेट अकादमी में ट्रेनिंग के लिए चुन लें।

सईदा हर संभव तरीके से इकबाल की मदद करती है और एक दिन इकबाल क्रिकेट अकादमी के लिए चुन लिया जाता है। लेकिन अमीर माँ-बाप के बच्चों को गरीब इकबाल का अकादमी में शामिल होना पसंद नहीं है। विवाद के चलते इकबाल को अकादमी से निकाल दिया जाता है।

दुखी इकबाल हिम्मत नहीं हारता और कस्बे के ही एक शराबी मोहित से ट्रेनिंग लेता है। मोहित कभी एक अच्छा क्रिकेट खिलाड़ी रह चुका था। देश की क्रिकेट टीम में शामिल होने के दुर्जेय लक्ष्य को हासिल करने की कोशिशों के दौरान इकबाल और मोहित में गहरी दोस्ती हो जाती है।



## IQBAL

Hindi/132 Min/ 35mm/ Colour

**Director:** Nagesh Kukunoor, **Producer :** Subash Ghai, **Screenplay :** Nagesh Kukunoor, **Cinematography :** Cast : Naseeruddin Shah, Shreyas Talpade, Shweta Prasad

'Iqbal' is a movie about bravery and the willingness to follow your dream in the face of adversity. The film is set against the backdrop of the national obsession — cricket!

Iqbal is an 18-year old deaf and dumb boy who lives in the tiny town of Kolipad. Born to a poor farmer Anwar and a cricket obsessed mother Saida, Iqbal harbors but one dream — to make it to the Indian cricket team!

His path to this glory, he feels, has to begin with being selected and tutored by Guruji, the best cricket coach in the state who runs

a prestigious Cricket Academy.

Iqbal's father hates cricket believing it to be a total waste of time and that there are better ways to serve the nation. His mother however, helps him in every way possible. Iqbal finally gets his big break when he gets to meet Guruji and is accepted into the academy. But problems arise when the other wealthier kids have an issue with a poor farmer's kid stealing the glory. This conflict leads to Iqbal being thrown out of the academy.

The shattered Iqbal picks up the pieces and enlists the help of the town drunk Mohit, who once upon a time was a promising cricketer, to coach him. With great reluctance at first, Mohit begins the training. Soon, the boy and the drunk become inseparable all the while preparing for that seemingly insurmountable goal of making the national team.

## काल पुरुष

बंगाली/120 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** बुद्धदेव दासगुप्ता, **निर्माता:** जुगल सुगंध, **स्क्रीनप्ले:** बुद्धदेव दासगुप्ता,  
**छायांकन:** सुदीप चटर्जी, **कलाकार:** मिथुन चक्रवर्ती, राहुल बोस, समीरा रेड्डी, सुदीपता चक्रवर्ती, लवोनी सरकार

अश्विनी को अज्ञात को जानने की जिज्ञासा है। वह खुले आकाश में उड़ना चाहता है। लेकिन पत्नी पुतुल और बेटे सुमोन्तो के प्रति प्यार ने उनके पंखों को जकड़ रखा है। अश्विनी के जीवन में दूसरी बार आमा के आने से घर की चारदीवारी से बाहर जाने की उसकी छटपटाहट फिर बढ़ जाती है। रिश्तों के प्रति उसकी सच्चाई तथा उसके अपने विश्वास भी उसे जिन्दगी की क्रूरता से नहीं बचा पाते हैं। जीवन के सबसे अधिक कठिन मोड़ पर वह अपने को बिल्कुल अकेला पाता है।

एक अनैतिक समझौते से इंकार करने पर सुमोन्तो को अपने ऑफिस में पदोन्नति नहीं मिलती है। बाहर वालों की नजर में वह असफल समझा जाने लगता है। वह किसी से ... किसी से भी, खासकर अपने पिता से अपनी भावनाएं व्यक्त करना चाहता है.....।



### KAALPURUSH

Bengali/120 Min/ 35MM/Colour

**Director:** Buddhabebe Dasgupta, **Producer :** Jugal Sughand, **Screenplay:** Buddhabebe Dasgupta, **Cinematography :** Sudip Chatterjee, **Cast :** Mithun Chakraborty, Rahul Bose, Sameera Reddy, Sudipta Chakraborty, Labony Sarkar

Ashwini had a thirst for unknown. His desperate wings, always in quest of a greater world were folded beneath his love for his wife, Putul and his son, Sumonto. Arrival of Abha for the second time in Ashwini's life triggered his passion for going beyond the limited horizon. His truthfulness towards the relationships and

his own beliefs couldn't resist him from the ruthlessness of life. At the most crucial junction Ashwini finds himself all alone, deprived and misunderstood by the world around. To Ashwini, death seemed sweeter than life.....

Sumonto's rejection of an amoral compromise barred him from getting the promotion in his office. He became a failure in the eyes of the outer world. Consequently, the otherwise cold and mechanical relationship with his wife Supriya took a worse turn. Sumonto helplessly searched for a hand to hold, he wanted to communicate with someone ... anyone ... mostly his father Ashwini. Sumonto too was standing in a ridge between life and death .....



## कब होई गवना हमार

भोजपुरी/155 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** आनंद डी घाटराज, **निर्माता:** दीपा नारायण झा, **स्क्रीनप्ले:** केशव राठोड़, **छायांकन:** नरेन्द्र पटेल, **कलाकार:** रवि किशन दिव्या देसाई, महेश राजा, दीपाली, शिखा

अपनी दादी का लाडला, गांव वालों की दिलों की धड़कन और ठाकुर धनराज सिंह के इकलौते बेटे बिरजू (बृजभूषण) को नाचने और गाने का बहुत शौक है। वह फिल्मों में हीरो बनना चाहता है। अपने बेटे की नाच-गाने की आदत छुड़ाने के लिए ठाकुर धनराज सिंह उसकी शादी गौरी से कर देते हैं। बिरजू अपनी इस शादी से खुश नहीं है। जैसे ही उसे मौका मिलता है, वह घर से दस लाख रुपए चुराकर अपने दोस्त के साथ अपने सपनों के शहर मुंबई भाग जाता है।

पूरे घर में तनाव का माहौल है, सारा गांव दुखी है और गौरी को यह खबर सुनकर गहरा सदमा पहुंचता है और उसे लगता है कि अब उसका गौना कभी नहीं होगा।

इस बीच मुंबई में एक नकली फिल्म निर्माता, मारवानी, बिरजू को अपने फिल्म में मौका देने के बहाने शूटिंग के लिए मॉरीशस भेजता है। वहां उसके साथी बिरजू से दस लाख रुपए लेकर चुपचाप भारत लौट आते हैं, बिरजू अब मॉरीशस में फंस गया है।



## KAB HOI GAWNA HAMAARR

Bhojpuri / 155 Min/ 35mm/ Colour

**Director :** Anand D Ghatraj, **Producer:** Deepa Narayan Jha, **Screenplay :** Keshav Rathod, , **Cinematography :** Narendra Patel, **Cast :** Ravi Kissen, Divya Desai, Mahesh Raja, Deepali, Shikha

The only son of Thakur Dhanraj Singh Birju (Brijbhushan), pampered grandson of his grandmother and heart throb of villagers, was very fond of dancing and singing. He has great aspiration of becoming a hero. To prevent this hobby his parents tie his knot with Gauri. Gawna is yet to happen but on the other hand Birju is not happy with his marriage. As soon as he gets the opportunity he takes Rs.10

lakh from his house and runs away with his friend to Mumbai, his Dream City.

Apparently there is tension at his house, the entire village is very sad and Gauri is traumatized to hear this and feels that her Gawna will never take place.

Meanwhile in Mumbai a fake producer Marwani gives Birju a break in his film. Director Mr. Sehra takes Birju and the so called heroine, Chandni to Mauritius for shooting. There Mr. Sehra and Chandni take 10 lakh rupees from Birju and run away to India while Birju is unaware of this. Birju is stuck in Mauritius now and to go back to his village he starts working in a sugarcane farm in Mauritius. The owner of that farm is apparently a relative of Birju's wife Gauri. So he sends Birju back to his village.

## कदम तले कृष्णा नाचे

असमिया/137 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** हिमांशु हरिप्रिया, **निर्माता:** रणजीत चक्रवर्ती, **स्क्रीनप्ले:** सुमन हरिप्रिया, **छायांकन:** निरमल डेका, **कलाकार:** सौरभ हज़ारिका, रूमासिका सलोई, महेन्द्र सारमाह, रेणु देवी

राधा मोहन अधिकारी वैष्णवी कला और संस्कृति के विद्वान हैं। उनका एक बेटा है, जिसका नाम जयकिशन है और एक बेटी है, जिसका नाम स्वर्णा है। जयकिशन काफी पढ़ा-लिखा है। वह अपने पिता की भावनाओं की परवाह किए बिना अपना कैरियर बनाने के लिए घर छोड़कर चला जाता है।

लेकिन, कई साल बाद, जयकिशन का बेटा श्याम कानू भी हालांकि काफी पढ़ा-लिखा है, लेकिन, वह अपने दादा की सांस्कृतिक परम्परा में पला-बढ़ा है। श्याम कानू अपने परिवार से फिर से जुड़ने के इरादे से अपने पैतृक गांव पहुंचता है। वह अपनी बुआ स्वर्णा और भतीजी बसन्ता से उसकी पहचान को छुपाए रखने का अनुरोध करता है, ताकि वह अपने मिशन में सफलता हासिल कर सके।

फिल्म में जाति रहित समाज को प्रदर्शित करने के लिए मणिमाला (राधिका मोहन के नौकर गोविन्दा की पौत्री) और बसन्ता (स्वर्णा का बेटा) को एक दूसरे के नजदीक आते दिखाया गया है।

अन्त में राधिका मोहन समझ जाते हैं कि श्याम न करना और क्रोध दोनों ही श्री शंकरदेव के उपदेशों के खिलाफ हैं।



## KADAMTOLE KRISHNA NACHE

Assamese/ 137 Min. /35mm/Colour

**Director:** Suman HariPriya, **Producer:** Ranjit Chakravarty, **Screenplay :** Suman HariPriya, **Cinematography :** Nirmal Deka, **Cast :** Saurabh Hazarika, Rupsikha Saloi, Mahananda Sarmah, Runu Devi

Radhika Mohan Adhikari, a scholar of Vaishnavite art and culture has one son Jaikrishna and daughter Swarna. Jaikrishna being highly educated wants to pursue his career and pays no heed to his fathers sentiment and leaves home. Radhika feels sorry at the unexpected decision of his son and deserts him.

But, years after Jaikrishna's son ShyamKanu, although highly educated, is

brought up with a mind-set attuned to the cultural tradition of his grandfather. ShyamKanu sets foot on his ancestral village with an objective of family reunion. At the outset he requests his aunt Swarna and cousin Basanta to keep his identity concealed so that he can achieve success in his mission.

To show casteless and classless society as advocated by Sri Shankardeva there is Manimala (Granddaughter of Govinda, Radhika Mohan's servant ) and Basanta (Swarna's son) coming together with each other in the film.

At last, Radhika Mohan realizes that anger and unforgiving attitudes go against the preaching of Sri Shankardeva.



## कथान्तर

उड़िया/116 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** हिमांशु कथुआ, **निर्माता:** इति सामन्त,  
**स्क्रीनप्ले:** हिमांशु कथुआ, **छायांकन:** समीन  
महाजन, **कलाकार:** राशेश मोहंती, अणु चौधरी,  
देवाप्रसाद दास, भासवाती वसु

अक्तूबर, 1999 में आए महाविनाशक चक्रवात ने उड़ीसा के तटीय क्षेत्र को तहस-नहस कर दिया था। विनाशक चक्रवात से शरणार्थी बंगालियों की बस्ती को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ था। कल्पना इसी बस्ती की रहने वाली है।

बंगलादेश का टीवी पत्रकार दीपांकर समारोह को फिल्माने के लिए आया हुआ है। समुद्री तूफान में विधवा हुई कल्पना में उसे विशेष रुचि है। वह उस पर अलग से एक फीचर फिल्म बनाना चाहता है।

जीवन से दुखी और हताश कल्पना दीपांकर को इंटरव्यू देने से साफ इन्कार कर देती है। निराश दीपांकर कल्पना पर विशेष फीचर तैयार किए बिना ही अपने देश वापस चला जाता है। दीपांकर फिर वापस आता है। इस बार उसकी शूटिंग की कोई योजना नहीं है। कल्पना की सुन्दरता और दृढ़ इच्छाशक्ति से मुग्ध दीपांकर उसके साथ विवाह का प्रस्ताव रखता है।

हालत से निराश कल्पना अनमने मन से दीपांकर का प्रस्ताव स्वीकार कर लेती है। लेकिन सीमा पार करने से पहले कलकत्ता में छोटे से प्रवास के दौरान कल्पना महसूस करती है कि ढाका के शहरी वातावरण में वह खप नहीं सकेगी तथा और ज्यादा अलग-थलग हो जाएगी। लेकिन गांव वापस लौटने पर उसे देश छोड़ देने का नोटिस मिल जाता है। देश में रहने के अपने अधिकार को पाने के लिए अब वह अत्यन्त साहसिक कदम उठाती है। यही से शुरू होती है दूसरी कहानी ....।



## KATHANTARA

Oriya/116 minutes/35mm/Colour

**Director :** Himansu Khatua, **Producer:** Iti Samanta, **Screenplay :** Himansu Khatua, **Cinematography :** Sameer Mahajan, **Cast :** Rasesh Mohanty, Anu Chaudhry, Debaprasad Dash, Bhaswati Basu

The film's narrative unfolds with the anniversary function of Super Cyclone that devastated coastal Orissa in October 1999. The worst effected were the Bengali population from the refugee settlement. Kalpana belongs to this settlement.

Dipankar, a TV Journalist from Bangladesh, engaged in documenting the anniversary function takes a keen interest in Kalpana, the much publicized young cyclone-widow. He wants to do a special feature on her.

Kalpana bitter with life an disgusted with

the meaningless publicity made out of her suffering, firmly refuses Dipankar for an interview. Disappointed, he returns to his country without the special feature on Kalpana.

Dipankar makes a repeat visit to Kalpana without any shooting plans and offers to her the security of his home, Kalpana reluctantly makes up her mind. However, during her brief stay in Kolkata, prior to crossing the border, Kalpana realizes she will be a misfit in urban Dhaka.

Ironically, the situation in Kalpana's village is quite upsetting. The improper eviction process for immigrants from Bangladesh is in full swing now.

Kalpana unaware of these happening returns back to her village Determined to stay back, she now takes a surprise bold step to reclaim her rights to live in the land of her birth.

It's the beginning of Another Story ....

## मैंने गांधी को नहीं मारा

हिन्दी/99 मिनट/35 एम एम/संगीत

**निर्देशक:** जाहणु बरूआ, **निर्माता:** अनुपम पी. खेर, **स्क्रीनप्ले:** संजय चौहान,

**छायांकन:** राज ए. चक्रवर्ती, **कलाकार:** अनुपम पी. खेर, उर्मिला मातोंडकर, अदिति सिंह राजपूत

**मैंने गांधी को नहीं मारा** फिल्म मानव मस्तिष्क की जटिलताओं को तलाशती नजर आती है। फिल्म में डेमेन्टिया रोग से पीड़ित एक प्रोफेसर अपने बचपन के मानसिक आघात को फिर से जी रहा है।

हालांकि फिल्म में एक आदमी की बीमारी और उसके इलाज का पता लगाने के लिए कटिबद्ध उसकी बेटी के प्यार को दिखाया गया है।

फिल्म में दो अलग-अलग घटनाओं को जोड़ा गया है। पहली- आज के मुंबई शहर में एक मध्यमवर्गीय परिवार अपने मुखिया यानि बम्बई विश्वविद्यालय के रिटायर्ड प्रोफेसर उत्तम चौधरी की मानसिक बीमारी से जूझ रहा है। दूसरी- राष्ट्रपिता मोहनदास करमचन्द गांधी की हत्या। प्रोफेसर का बार-बार यह कथन 'मैंने गांधी को नहीं मारा' उसके बचपन की उस घटना से जुड़ा है जब सच्चाई तलाशने वाला देश का सपूत नवोदित राष्ट्र का जनक बन जाता है। कोई इस व्यक्ति की हत्या कर देता है, लेकिन उसका सत्य जिन्दा रहता है। यह सत्य इस मानसिक रोगी की आत्मा में बस गया है।

हालांकि फिल्म का शीर्षक कहता है 'मैंने गांधी को नहीं मारा' लेकिन शीर्षक यह संदेश भी देता है कि गांधी जी अभी भी मेरी आत्मा में जिन्दा हैं और उन्हें हममें से हरेक के दिल में जिन्दा रहना चाहिए।



## MAINE GANDHI KO NAHIN MAARA

Hindi/ 99 Min/35MM/ Colour

**Director:** Jahnu Barua, **Producer:** Anupam P. Kher, **Screenplay :** Sanjay Chouhan, **Cinematography :** Raaj A. Chakravarti, **Cast :** Anupam P. Kher, Urmila Matondkar, Aditya Singh Rajput

'Maine Gandhi Ko Nahin Mara' explores the complexities of the human psyche as it sets out to unveil a childhood trauma, which is re-lived by an intelligent mind suffering from a brain disorder called dementia. The film structures the narrative by telling a simple story of a man's illness and his daughter's love, understanding and commitment to find her father's treatment, which comes in the form of a young

psychiatrist who unveils the father's demented world and carries him backwards on an awesome journey to finally confront his disillusioned guilt.

It is a film that connects two disparate events together. One, of a middle class family in present day Mumbai struggling to come to terms with the fact that the head of the family, professor Uttam Chaudhary, a retired professor of Hindi from Bombay University, is now suffering from early dementia and two, the assassination of the father of the nation, Mohandas Karamchand Gandhi.

The Professor's often repeated and exasperated denial 'Maine Gandhi Ko nahin mara', also sends out a message saying that Gandhiji is still alive in me! He should be alive in every one of us!



## पहेली

हिन्दी/140 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** अमोल पालेकर, **निर्माता:** गौरी खान लि., **स्क्रीनप्ले:** संध्या गोखले, **छायांकन:** रवि के. चन्द्रन, **फीमेल प्लेबैक सिंगर:** श्रेया घोषाल, **कलाकार:** शाहरुख खान, रानी मुखर्जी, अनुपम खेर, जुही चावला

एक समय की बात है, एक प्यारी सी लड़की थी। उसकी शादी ऐसे व्यक्ति से हो जाती है, जिसे केवल पैसा कमाने में रुचि है।

जिस दिन सुहागरात थी उसी दिन उसका पति कारोबार के सिलसिले में परदेश चला जाता है। एक प्रेतात्मा पति के रूप में इस लड़की के साथ रहने लगती है।

कुछ वर्ष बाद जब पति घर लौटता है तो गांव वाले और रिशतेदार हतप्रभ रह जाते हैं। इस समस्या का समाधान ही पहेली है।

पहेली, उस लड़की की दुविधा की कहानी है जिसे प्रेतात्मा के शाश्वत प्रेम और अपने पति की संवेदनहीन नीरसता में से एक को चुनना है।

पहेली, उन गांव वालों की दुविधा की कहानी है, जिन्हें यह तय करना है कि इस रहस्य को बने रहने दिया जाय या इसे सुलझाया जाय।



## PAHELI

Hindi/ 140 Min / 35mm/ Colour

**Director:** Amol Palekar, **Producer:** Gauri Khan, Ltd., **Screenplay :** Sandhya Gokhale, **Cinematography :** Ravi K. Chandran, **Female Playback Singer :** Shreya Ghoshal, **Cast :** Shah Rukh Khan, Rani Mukherji, Anupam Kher, Juhi Chawla

Once upon a time, there was a lovely girl who was married to a man who was only interested in making money.

On the wedding night itself, the husband left home for five long years on account of his business. The ghost took on the husband's appearance and entered her life.

A few years later when the husband returned home, the villagers and the

relatives were bewildered. How this situation gets resolved is the Paheli.

Paheli is the dilemma of the girl who had to choose between the ghost eternal love and her husband's insensitive monotone....

Paheli is the dilemma of the husband who had to face resignation from his own people.

Paheli is the dilemma of the ghost who wanted to be human and yet remain sincere and honest to his love...

Paheli is the dilemma of the parents who accepted an adorable son who was not their real son....

Paheli is the dilemma of the villagers who had to decide whether to live with ambiguity or to resolve the riddle....



## परिणीता

हिन्दी/127 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** प्रदीप सरकार, **निर्माता:** विधु विनोद चोपड़ा,

**स्क्रीनप्ले:** विधु विनोद चोपड़ा एंड प्रदीप सरकार,

**छायांकन:** एन. नटराजा सुब्रह्मन्यम,

**कलाकार:** संजय दत्त, सैफ अली खान, सव्यसाची चक्रवर्ती, विद्या बालान

फिल्म की पृष्ठभूमि 1962 का कलकत्ता है। कलकत्ता को अपनी शैली, तड़क-मड़क और जीवन्तता के लिए 'पूर्व का पेरिस' कहा जाता था। इस शहर में जन्म लेती है एक संवेदनशील अमर प्रेम कहानी।

कम उम्र में ही अनाथ हो गई ललिता को अपने चाचा के परिवार के साथ रहने के लिए भेज दिया जाता है। वहां किस्मत से उसकी मुलाकात एक युवा संगीतकार शेखर से होती है। शेखर एक घनवान कारोबारी का बेटा है। शेखर और ललिता ने बचपन से लेकर जवान होने तक एक दूसरे की खुशियों और दुखों को साथ-साथ जीया है। आपस में गहरी मित्रता और विश्वास कब एक दूसरे के प्रति गहरे प्यार में बदल गया, इसका उन्हें पता ही नहीं लगता। जब एक तीसरा पात्र, गिरिश उनके जीवन में आता है, तब उन्हें एक दूसरे के प्रति अपनी सच्ची भावना का पता चलता है।

लौभ, धोखा और कुटिल इरादे ललिता और शेखर के भोले प्रेम को तहस-नहस करने के लिए तैयार हैं।



## PARINEETA – THE MARRIED WOMAN

Hindi/ 127 Min /35mm/Colour

**Director :** Pradeep Sarkar, **Producer:** Vidhu Vindo Chopra, **Screenplay :** Vidhu Vindo Chopra & Pradeep Sarkar, **Cinematography:** N. Nataraja Subramanian, **Cast :** Sanjay Dutt, Saif Ali Khan, Sabyasachi Chakraborty, Vidya Balan.

The city of Calcutta – 1962. A city so vibrant, so alive, so stylish, it was referred to as 'The Paris of the East' The exotic backdrop serves as the perfect locale for the tender, immortal love story about to unfold.

A young girl, Lolita, orphaned at an early age, she is sent to live with her uncle's

family, where destiny introduces her to a young boy, Shekhar, musician, the son of an affluent businessman. Together, through childhood and adolescence, Shekhar and Lolita share joys and sorrows, fond memories and bittersweet experiences .. and unknown to them, a relationship of deep friendship and trust takes place. It is unspoken right they hold over each other that metamorphoses into a love so intense, they do not even see it coming. It takes the arrival of an outsider, Girish for them to discover their true feelings for each other.

Can true love conquer these insurmountable obstacles, or will it succumb to them? Will Lolita and Shekhar be forever swept apart by these tumultuous events or can they fulfill their destiny and come back together?

## परजानिया

अंग्रेजी/123 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक, निर्माता एवं स्क्रीनप्ले:** राहुल डोलकिया, **छायांकन:** रोबर्ट इरास, **कलाकार:** नसीरुद्दीन शाह, सारिका, आसिफ बसरा, शीबा चढ़ा, पर्ल बरसीवाला

परजानिया एक परिवार और एक समुदाय को हुए नुकसान की दिल दहला देने वाली कहानी है। फिल्म उन साम्प्रदायिक दंगों की कहानी है, जिसने दुनिया को अचंभित कर दिया था और एक देश को हमेशा के लिए बदल दिया था।

एक सनकी और दिग्भ्रमित अमरीकी ऐलन वेबिंग्स अहमदाबाद शहर पहुंचता है। उसे मानसिक शान्ति की तलाश है। वह स्कूल के तौर पर भारत को और विषय के तौर पर गांधी को चुनता है। यहां उसकी मुलाकात साइरस से होती है। साइरस का अपना एक छोटा सा प्यारा परिवार है, वह एक स्थानीय सिनेमाघर में प्रोजेक्शनिस्ट का काम करता है।

साइरस और उसका परिवार पारसी है। उनका दस साल का एक बेटा है, जिसका नाम परजन है और एक बेटी है, जिसका नाम दिलशाद है। एक सुबह खूबसूरत और शान्त देश, भारत दंगों की आग में झुलसने लगता है और इसका कारण है एक ट्रेन में लगी आग, आतंक और हिंसा की इस बाढ़ में परजन गायब हो जाता है।

अब साइरस को जहां अपने बेटे और मानसिक शान्ति की तलाश है, वहीं ऐलन दंगों के पीछे की सच्चाई और इस वधशीपन के कारणों को जानने की कोशिश कर रहा है। क्या सच्चाई कभी सामने आएगी? परजानिया एक सत्य कथा से प्रेरित फिल्म है।



## PARZANIA

English/123 minutes/35MM/ Colour

**Director, Producer & Screenplay:** Rahul Dholakia, **Cinematography :** Robert Eras, **Cast:** Naseeruddin Shah, Sarika, Aasif Basra, Sheeba Chadda, Pearl Barsiwalla

Parzania is the breathtaking untold story of one family and a community's loss during an act of communal violence that stunned the world and changed a country forever.

Cynical, intelligent and lost, an American by the name of Allan Webbing arrives in Ahmedabad city. Allan has chosen India as his school, and Gandhi as his subject. It's here that he meets Cyrus, the local projectionist and his loving family who

are Parsis.

Through Cyrus's family, and the teachings of an old Indian scholar, Allan starts to find peace of mind, right before the rest of the country loses its sanity. One morning, the beauty and peace that is India, is rocked beyond measure, as a fire erupts in a train killing many people of a particular community.

In the midst of the terror and violence that follows, Parzan disappears.

While Cyrus fights for his own sanity and searches for his child, Alan battles to uncover the truth behind the riots and any possible meaning to the insanity he has witnessed. Will the truth come out? And does any of it matter to a distraught family who just wants to find their little boy. Parzania is inspired from a true story.



## रंग दे बसंती

हिन्दी/171 मिनट/35 एम एम/संगीन

**निर्देशक:** राकेश ओमप्रकाश मेहरा, **निर्माता:** यू टी वी मोशन पिक्चर्स एवं राकेश ओमप्रकाश मेहरा पिक्चर्स (प्रा.) लिमिटेड **पटकथा:** रेनसिल डिसिल्वा एंड राकेश ओमप्रकाश मेहरा, **छायांकन:** विनोद प्रधान, **कलाकार:** आमिर खान, सिद्धार्थ सूर्यनारायण, अतुल कुलकर्णी, शरमन जोशी, किरण खेर

फिल्म 1930 के ब्रिटिश भारत और आज के भारत की समानान्तर यात्रा है जैसे-जैसे फिल्म समापन की ओर आगे बढ़ती है विगत और वर्तमान को बांटने वाली रेखा घूमिल होती जाती है।

**रंग दे बसंती** आधुनिक भारत के युवाओं की कहानी है।

लंदन में रहने वाली एक युवा फिल्म निर्माता को उसके दादा की डायरी हाथ लग जाती है। आजादी के संघर्ष के दौरान उसके दादाजी ब्रिटिश पुलिस में रह चुके थे। वह डायरी में नोट किए गए क्रान्तिकारियों पर फिल्म बनाना चाहती है। वह दिल्ली आ जाती है और अपने पांच दोस्तों को अपनी फिल्म में इन क्रान्तिकारियों का किरदार निभाने के लिए चुनती है।

लेकिन आधुनिक भारत के ये पांच युवक शुरू में फिल्म में काम करने से मना कर देते हैं, क्योंकि इतिहास के इन क्रान्तिकारियों से ये कहीं भी मेल नहीं खाते। ये तो मीज-मस्ती में विश्वास रखते हैं और देश भक्ति और सिद्धान्तों के लिए बलिदान देना इनके लिए किताबी बातें हैं। देशभक्त बनने की बजाय मीज-मस्ती करना उन्हें कहीं ज्यादा पसंद है।



### RANG DE BASANTI

Hindi/171 minutes/35MM/ Colour

**Director:** Rakeysh Omprakash Mehra  
**Producer :** UTV Motion Pictures & Rakesh Omprakash Mehra Pictures (P) Ltd., **Screenplay :** Rensil D'Silva & Rakeysh Omprakash Mehra, **Cinematography :** Binod Pradhan, **Cast:** Aamir Khan, Siddhartha Suryanarayana, Atul Kulkarni, Sharman Joshi, Kirron Kher

Rang De Basanti is a story about the youth of India today. In the film both the 1930's British India and the India today run parallel and intersect with each other at crucial points.

A young, London based film-maker

chances upon the diaries of her grandfather, who served in the British police force in India during the freedom struggle. Excited about these memoirs, she makes plans to shoot a film on the Indian revolutionaries mentioned in the diaries. She comes down to Delhi, and casts a group of five friends to play the pivotal roles of these revolutionaries.

However, products of modern India, the five youngsters initially refuse to be part of the project, as they don't identify with these characters from the past. Not surprising, considering that they're part of a generation of Indians that believes in consumerism. To them issues like patriotism and giving one's life for one's beliefs is the stuff stuffy text-books are made of. They would rather party than be patriots.

## सोनम

मोन्या (अरुणाचली)/129 मिनट/35 एम एम/  
रंगीन

**निर्देशक:** अहसान मुजिद, **निर्माता:** गरिमा फिल्मस, **फिल्मस :** अहसान मुजिद, **छायांकन:** नरेश शर्मा, **कलाकार:** हेगे डी. अप्पा, तासी लामू, लंगटीन कोचुलु, रिजोमवा

भारत-तिब्बती भाषा की एक बोली 'मोन्या' में बनी यह पहली फिल्म है। यह बोली अरुणाचल प्रदेश के तिब्बत सीमा से लगे हिमालयी क्षेत्र यानी पश्चिमी कामेंग और तवांग जिलों में बोली जाती है।

फिल्म का विषय ब्रोकपा समाज में प्रचलित बहुपति प्रथा है। ब्रोकपा याक चरवाहों का एक छोटा सा समुदाय है। यह समुदाय हिमालय श्रृंखला की पहाड़ी तलहटी में रहता है। समुदाय में प्रथा है कि एक स्त्री के एक से अधिक पति हो सकते हैं। निर्देशक ने सीधे-सीधे उन उलझनभरी परिस्थितियों से निपटने का प्रयास किया है जब पति अपनी पत्नी के प्रेमी को उसके एक और पति की तरह स्वीकार कर लेता है। नए पति की मौजूदगी पहले पति को घर छोड़ देने के लिए मजबूर कर देती है और वह बिल्कुल अकेला हो जाता है। इन दोनों की पत्नी सोनम धीरे-धीरे और अन्दर ही अन्दर मानसिक तथा शारीरिक जटिलताओं से पीड़ित होने लगती है। बौद्ध धर्म को मानने वाली सोनम प्रायश्चित के रूप में मौत को गले लगा लेती है।



## SONAM

Monpa (Arunachali)/129 minutes/35MM/  
Colour

**Director:** Ahsan Muzid,  
**Producer:** Garima Films, **Screenplay:**  
Ahsan Muzid, **Cinematography:** Naresh  
Sharma, **Cast:** Hagge D. Apa, Tashi  
Lhamu, Lungten Khochilu, Rijomba

This is a first feature made in 'Monpa' dialect of the Indo-Tibetan branch of languages spoken in the hilly Himalayan region bordering Tibet in the district, West Kameng and Tawang of Arunachal Pradesh, of India.

This film deals with polyandry in a small society called Brokpas, a Society of 'Yak shepherds' who live in the mountain slopes of the Himalayan range. It is a

custom in the region where a wife can have more than one husband. The director deals directly with the labyrinthine situation when the husband offers to accept the lover of his wife as co-husband. The presence of the new husband catapults the first husband out and he becomes very lonely. Sonam, the wife of the duo slowly and silently starts suffering due to the body and mind complex. Being a believer of Buddhism she indulges herself for a total and ultimate atonement in her own death.



## श्रृंगारम

तमिल/117 मिनट/35 एम एम/रंगीत

**निर्देशक:** शारदा रामानाथन, **निर्माता:** गोल्डन स्कावयर फिल्मस प्रा. लि., **पटकथा:** इंदिरा सुन्दरराजन, **छायांकन:** मधु अंबट, **कलाकार:** मनोज के. जयन, अदिति राव हेयादरी, शशि कुमार, हंसा मोली

वर्ष 1950 की घटना है। भारत को गणतंत्र घोषित किए जाने के अवसर पर आयोजित एक समारोह में नृत्य के लिए वार्षिणी को बुलाया गया है। भारतनाट्यम नर्तकी के रूप में अपना सफल कैरियर शुरू करने से पहले वार्षिणी अपनी गुरु कामावली से आशीर्वाद लेने के लिए अपने गांव देवपुरम आती है। यहां, वार्षिणी को अपनी पृष्ठभूमि और अपनी माँ, मधुरा के जीवन और संघर्ष की कहानी सुनने को मिलती है।

वर्ष 1920, मधुरा तत्कालीन परम्परा के अनुसार दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य के एक छोटे से गांव देवपुरम की देवदासी (मंदिर नर्तकी) बन जाती है। मौजूदा प्रथा के अनुसार वह स्थानीय जमींदार मिरासु की रखैल भी है।

मधुरा एक अलग-थलग जीवन गुजार रही है। अपनी कला और अपने प्रति मिरासु के रवैये से मधुरा धीरे-धीरे परेशान रहने लगती है। साथ ही वह गांव के एक विद्रोही कासी के सानिध्य में शान्ति महसूस करती है। अन्ततः वह भी परम्पराओं से विद्रोह का रास्ता अपना लेती है।



## SRINGARAM

Tamil/117 minutes

**Director :** Sharada Ramanathan, **Producer:** Golden Square Films Pvt Ltd., **Screenplay:** Indira Sounderrajan, **Cinematography :** Madhu Ambat, **Cast:** Manoj K. Jayan, Aditi Rao Hydari, Shashi Kumar, Hamsa Moily

In the year 1950, Varshini, a dancer of modern times, has been invited to dance for the Prime Minister in Delhi, on the occasion of India being declared a republic. She visits her village to seek the blessings of her Guru, Kamavali, as Varshini is about to embark on successful career a Bharatanatyam dancer. Here, Varshini is enlightened about her background and the life and struggles of her mother, Madhura.

In the year 1920, by tradition Madhura

becomes the principal Devadasi (temple dancer) of a devapuram, a small village in the Tamilnadu state of South India. By the prevailing system of 1920s, she also becomes the mistress of the local princely landlord known as the Mirasu.

Madhura leads a relatively isolated life. Time, Madhura develops a deep discomfort due to the attitude of the Mirasu towards herself and her art. Simultaneously, she finds solace in the ambience created by Kasi, the temple Brahman and the village rebel.

Madhura's growing discomfort pertains to the indiscriminate power that the Mirasu wields in the village and its temple, including the ostracization of Kasi as a vengeful act. Gradually, the Mirasu asks her to curry favors to the English Collector in order to trade favors that his politics could not achieve.



## ताजमहल

हिन्दी/165 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक एवं निर्माता:** अकबर खान, **पटकथा :** अकबर खान एंड फातिमा मेर, **छायांकन:** आर.एम. राव, **कलाकार:** मनीषा कोइराला, पूजा बत्रा, किम शर्मा

रोमान्स और ट्रेजडी पर बनी फिल्म ताजमहल किसी मकबरे की कहानी नहीं है, बल्कि यह एक परिवार की कहानी है।

फिल्म का केन्द्र बिन्दु शाहजहां और मुमताज महल हैं। फिल्म दोनों की मुलाकात से शुरू होकर, हमेशा साथ रहने की शपथ, महल के दुश्चक्रों, अपने समय के सबसे शक्तिशाली बादशाह जहांगीर की सत्ता से प्यार के टकराव से गुजरती हुई, शाहजहां के बादशाह बनने, बाद में बेटों द्वारा विद्रोह और नए बादशाह द्वारा अपने पिता को कैद में डालने पर जा कर समाप्त होती है।

फिल्म उस वृद्ध शाहजहां को पृष्ठभूमि में रखकर बनाई गई है जिसने अपने प्रेम को हमेशा के लिए अमर करने के लिए अपनी पत्नी मुमताज की याद में ताजमहल बनवाया था।



## TAJ MAHAL...AN ETERNAL LOVE STORY

Hindi/ 165 Min. /35MM/ Colour

**Director & Producer:** Akbar Khan, **Screenplay:** Akbar Khan and Fatima Meer **Cinematography :**R.M. Rao **Cast:** Manisha Koirala, Pooja Batra, Kim Sharma

The Taj Mahal is not just the story of a mausoleum; it is the story of a family, it is not only romance, it is also a tragedy.

At the center of the drama are the primal lovers Shah Jehan and Mumtaz Mahal. The drama unfolds their lives from the

time they meet, fall in love and pledge to be inseparable. Though confronted by the palace intrigues, their loves on the might of the most powerful emperor of its time his father Jehangir.

The successions to the throne and consolidation of the empire, the rebellions of sons and civilian war it unleashes and with the usurpation of the throne, the imprisonment of the father by the new emperor and the execution of his brother.

The entire story is told from the perspective of the aged Shah Jehan who transforms his agony of Mumtaz's death to build a tomb that would keep his love alive forever.

## तायी

कन्नड/130 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** बरगुर रामचन्द्राप्पा, **निर्माता:** प्रमीला जोशी, **पटकथा :** बरगुरु रामचन्द्राप्पा, **छायांकन:** नागराज अडवाणी, **कलाकार:** कुमार गोविन्द, प्रमीला जोशी, शंकर, करि वसीवलह, नन्दिणी, वैभव

मैक्सिम गोरकी के उपन्यास 'मंदर' को इस फिल्म में समसामयिक भारत के परिवेश में ढाला गया है। इसमें मूल कहानी के लिए एक नया अर्थ तलाशने की कोशिश की गई है। वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण के इस युग में भारतीय संदर्भ में मूलभूत अधिकारों के लिए संघर्ष और मानवीय रिश्तों के संवेदी पहलुओं को इस फिल्म में उकेरने की कोशिश की गई है।

जन विरोधी राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करने के लिए बेटे और उसके दोस्त को जेल हो जाती है। अनपढ़ और भोली माँ अपने बेटे को रिहा कराने के लिए अनजाने में आन्दोलन में शामिल हो जाती है। माँ को पता लगता है कि उसका बेटा अपने लिए नहीं बल्कि आम लोगों के लिए संघर्ष कर रहा है। वह महसूस करने लगती है कि बेटे की रिहाई से बढ़कर आम लोगों की रिहाई है। विभिन्न पात्र और जीवन्त परिस्थितियाँ माँ की समझ का दायरा और व्यापक बना देती हैं।



## THAAYI

Kannada/130 Min/35MM/ Colour

**Director:** Baraguru Ramchandrappa,  
**Producer:** Pramila Joshai, **Screenplay:**  
Baraguru Ramachandrappa,  
**Cinematography :** Nagaraj Advani,  
**Cast:** Kumar Govind, Pramila Joshai,  
Shankar, Kari Basavaiah, Nandini,  
Vybhav

The film 'THAAYI' is based on the world renowned Russian novel 'Mother' written by Maxim Gorki, over hundred years ago. In the film, Gorki's novel has been adopted to the contemporary Indian Scenario, finds a new meaning for the original story. The movie portrays vividly the ongoing struggle for fundamental

rights and sensitive aspects of human relationships in the era of globalization and Economic liberalization, in the Indian context.

The mother's son and his friends got imprisoned as they organized a struggle against the anti-people political and economic system. The illiterate and innocent mother seeking the release of her son unknowingly joins the struggle. She realizes that the struggle of her son is not for himself but for the people; she also realizes that more than the release of her son the release of the people is supreme. The various characters and lively situations widens the horizons of the understandings of the mother.

## तनमात्र

मलयालम/143 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशन एवं पटकथा :** ब्लेसी निर्माता: सेन्चुरी फिल्मस, **छायांकन:** सेतु श्रीराम, **कलाकार:** मोहनलाल, मीरा वसुदेव, अर्जुन लाल

**तनमात्र** एक साधारण मध्यम परिवार की एक असाधारण कहानी है। परिवार का लक्ष्य अपने बेटों की अच्छी शिक्षा दिलाना है ताकि उनका किशोर बेटा आगे चल कर एक आईएएस अधिकारी बन सके और देश तथा समाज की सेवा कर सके। पिता एक सरकारी नौकर है। वह अपने बेटे के स्कूल की गतिविधियों में सक्रिय रूप से हिस्सा लेकर शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने में सहयोग करता है और छात्रों तथा अध्यापकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहता है।

इस सुन्दर परिवार के शान्त माहौल में उस समय तूफान आ जाता है जब अचानक पिता को अलडैमर बीमारी हो जाती है। अब फिल्म की कहानी उन कोशिशों के इर्द-गिर्द घूमने लगती है कि किस प्रकार बेटा अपने पिता के सपने को पूरा करता है और आईएएस अधिकारी बन जाता है।

फिल्म में अलडैमर जैसी बीमारी से जुड़ी पीढ़ाओं और परेशानियों को भी दिखाया गया है। फिल्म युवाओं और महिलाओं को शिक्षित और प्रेरित करने का भी एक प्रयास है, जो इस बीमारी के बारे में जानकारी न होने या ऐसे मरीज की देखभाल से जुड़ी शारीरिक और भावनात्मक थकावट की वजह से अचानक अपने आप को असहाय महसूस करने लगते हैं।



## THANMATRA

Malayalam/143 minutes/EST

**Director:** Blessy **Producer :** Century Films, **Screenplay :** Blessy, **Cinematography :** Sethu Sreeram, **Cast :** Mohanlal, Meera Vasudev, Arjun Lal

'Thanmatra' is essentially the story of an ordinary middle-class family. The ambition and goal of the family is to give a good education to the two children, with the immediate focus being to make the teenage son an IAS officer. The father, a government servant, is a role model for all parents. He contributes to make the educational system better by actively participating in the activities of his son's school and is always a source of

inspiration for the teachers and students.

The peaceful existence of this family with strong values and bonding is suddenly challenged by Alzheimer's disease, which affects the father. From here on, the story revolves around how the son rises to the occasion and goes on to get into the IAS with the sole aim of fulfilling his father's dreams.

The film also revolves around the trauma of dealing with an illness like Alzheimer's. It is an attempt to educate and inspire the masses, particularly women and the youth, who may suddenly feel helpless either due to lack of information about the disease or the sheer physical and emotional fatigue of dealing with such a patient.





## द ब्लू अम्ब्रेला

हिन्दी/100 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** विशाल भारद्वाज, **निर्माता:** यू टी वी मोशन पिक्चर्स, **स्क्रीनप्ले:** मिन्टी कंवर तेजपाल, अभिशेख चौवे एंड विशाल भारद्वाज, **छायांकन:** सचिन के. कृष्णन, **कलाकार:** पंकज कपूर, श्रेया शर्मा

10 वर्ष की बिनिया उत्तरी भारत के एक खूबसूरत पहाड़ी गांव की लड़की है। वहां मौजमस्ती के लिए लोग आते रहते हैं। ऐसी ही एक पार्टी के साथ मुलाकात में बिनिया बाघ के नाखून से बने अपने लाकेट के बदले एक बिल्कुल नयी नीले रंग की छतरी ले लेती है।

नंद किशोर खत्री की इस गांव में एक छोटी सी चाय की दुकान है। नन्द किशोर खत्री की ही नहीं बल्कि हर गांव वाले की इस खूबसूरत छतरी पर नजर है। नन्द किशोर हर हालत में छतरी पाना चाहता है। वह अच्छी कीमत देकर बिनिया से छतरी खरीदने की पेशकश करता है। लेकिन बिनिया तैयार नहीं होती। नन्दलाल ने छतरी पाने की आशा लगभग छोड़ ही दी थी कि उसका चालाक नौकर राजाराम उसे एक तस्कीब सुझाता है।

बिनिया की छतरी गायब हो जाती है। सारे गांव को विश्वास है कि बिनिया ने छतरी खो दी है। लेकिन बिनिया को पता है कि छतरी चुरा ली गई है। छतरी की तलाश में बिनिया को जो प्राप्त होता है, वह छतरी से कहीं ज्यादा प्यारा और खूबसूरत है।

## THE BLUE UMBRELLA

Hindi/ 100 Min /35mm/Colour

**Director:** Vishal Bharadwaj, **Producer :** UTV Motion Pictures, **Screenplay :** Minty Kunwar Tejpal, Abhishek Chaubey & Vishal Bhardwaj, **Cinematography :** Sachin K. Krishnan, **Cast :** Pankaj Kapur, Shreya Sharma

The film is about Desire ..... How far can one go to fulfill it?

Biniya, a ten-year old girl child from an idyllic mountain village in North India, comes across a party of picnickers. Nothing special about that but this time she notices an object in their possession that catches her fancy. In a brief interaction they discover that both can arrive at an agreement advantageous to them. While the picnickers get Biniya's leopard claw locket, Biniya walks home elated with a brand new sparkling blue umbrella. It is the most beautiful thing she has ever seen. So has Nandkishore Khatri, who runs a small tea stall in the same village. While everyone in the village have their bouts of jealousy regarding the umbrella, Nandkishore goes to the remarkable lengths in order to possess it. His attempts to buy the umbrella off Biniya despite having offered a 'reasonable' price fail miserably. He has all but given up hope. He will have to forget about it and move on but then, his wily servant Rajaram, a boy Biniya's age, has something to suggest. Biniya's umbrella goes missing. The village is convinced that Biniya has lost the umbrella but she knows better. It has been stolen. What follows is Biniya's resolute search for her umbrella and a discovery, sweeter and more beautiful than the umbrella.

## तुचुरी

कन्नड/114 मिनट/35 एम एम/रंगीन

**निर्देशक:** पी शेषाद्री, **निर्माता:** जयमाला,  
**पटकथा :** पी शेषाद्री एवं जे.एम. प्रह्लाद,  
**छायांकन:** एच.एम. रामचन्द्र हलकरें **कलाकार :**  
दत्तात्रेय

सचिन एक बड़े अधिकारी का बेटा है। वह अपनी शानदार कोठी की खिड़की से उदासीभरी आँखों से बाहर की दुनिया देखता रहता है। लेकिन उसके पिता ने इस आशा में कि वह घर में ही खेलेगा, उसके लिए कम्प्यूटर और वीडियो गेम लाकर रखे हैं।

कॉलोनी में खेलने के लिए कोई मैदान नहीं है, इसलिए बच्चे गलियों में खेलते हैं। इन शहरी बच्चों के लिए समय बिताने का साधन केवल क्रिकेट और कम्प्यूटर था। लेकिन उनके बीच एक गांव के लड़कें के आने से अब ये बच्चे गांव के खेलों का मजा लेने लगते हैं। बच्चों के खेल से मकानों की खिड़कियों के शीशे टूटने लगते हैं सड़क पर धमाल मचा रहता है, ट्रैफिक जाम होता रहता है, अतः बच्चों को अब एक खेल के मैदान की तलाश है और उन्हें यह मिल भी जाता है। एक धनवान लेकिन दयालु वृद्ध बच्चों को अपनी खाली जमीन पर खेलने की इजाजत दे देता है। मैदान कंकड़-पत्थर और झाड़ियों से भरा है। वृद्ध व्यक्ति का इकलौता बेटा हरि अमरीका में रहता है। वह अपने पिता का इन आवारा लड़कों के साथ जुड़ना पसन्द नहीं करता भले ही उसके अपने बेटे को उन बच्चों के साथ खेलना पसंद हो। एक अच्छे खासे झूमे के बाद बच्चे वृद्ध व्यक्ति की मदद से अपना खेल का मैदान बचाने में सफल हो जाते हैं।



## THUTTURI

Kannada/ 114 Min/ 35mm/Colour

**Director:** P Seshadri, **Producer:** Jaimala,  
**Screenplay:** P. Sheshadri & J.M. Prahlad,  
**Cinematography:** H.M. Ramachandra  
Halkere, **Cast :** Dattatreya

Sachin is the son of a high ranking officer who looks out forlornly from the window of his luxurious home, longing to be a part of fun and frolic outside. His father has 'pampered' him with computer and video games in the hope of keeping him entertained inside the house.

The lack of a playground in the locality compels the children to play on the streets. Cricket and computer games are the only pass times these city children have been exposed to. The arrival of a village boy on the scene opens them to the joys of

simple village games. Broken windowpanes, obstruction to traffic and ensuing chaos leads to the parents forbidding their children from going out to play on the streets. They go in search of a proper playground and find a vacant piece of land, full of stones and overgrown with weeds. They find the owner, a well meaning old and wealthy man and with lot of health problems. He permits them to play on the land. He too gets involved, in cleaning and the place creating playground for them.

The old man's only son, Hari, settled in America, is not too happy to see his father associate with these 'street children' Then follows a great drama and finally, the children somehow manage to regain their playground, with the help of the old man. Hari repents and comes around.



---

कथासार :      **Synopses :**  
गैर कथाचित्र    **Non-Features Films**

---

## भ्राईमोमन थियेटर

अंग्रेजी/55 मिनट/वीडियो

**निर्देशक:** विद्युत कोटोकि, **निर्माता:** एस. नारायणन, **छायांकन:** विमल विस्वास

भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम में हर साल सितम्बर से अप्रैल तक काम चलाऊ सभागारों में दर्शकों का हजूम उमड़ पड़ता है।

चालीस से ज्यादा पेशेवर थिएटर कम्पनियां अपने कलाकारों, तकनीशियनों, लाइटिंग, आर्कस्ट्रा, लगभग 2000 लोगों के बैठने की व्यवस्था, टेंट आदि यानि पूरे ताम-झाम के साथ गांव-गांव घूमती हैं।

कमाई का 40 प्रतिशत स्कूलों के विकास तथा अन्य सामाजिक कार्यों के लिए रख दिया जाता है।

ये थिएटर कम्पनियां पौराणिक गाथाओं के अलावा टाइटनिक, बेन् हूर लेडी डायना, सुनामी, ऑडिसी और क्लियापेट्रा जैसे नाटकों का भी मंचन करती हैं।

3600 वर्ग फीट के विशाल दोहरे मंच पर इन नाटकों का मंचन किया जाता है, जो केवल 24 घंटे में तैयार या सज्जारहित किए जा सकते हैं।



### BHRAIMOMAN THEATRE... WHERE OTHELLO SAILS WITH THE TITANIC

English/55 Minutes/ Video

**Director :** Bidyut Kotoky **Producer:** S. Narayanan **Cinematographer:** Bimal Biswas

From September to April every year Audiences in Assam, the northeastern State of India, pack the makeshift auditoria with great enthusiasm.

More than forty professional theatre companies move from one village to another with their entire infrastructure ...

artists, technicians, stage, properties, lighting, orchestra, including the state tent and seating arrangement for about 2000 people at a time.

Almost 40% of the income generated is set aside for development of schools and other social causes.

The plays deal with a variety of subjects like, Titanic, Ben Hur, Lady Diana etc.

All this happens on a huge 'Double Stage' – a mini play ground of 3600 sq.ft., which can be dismantled and reassembled along with other properties including the tent, seating etc., in 24 hours.

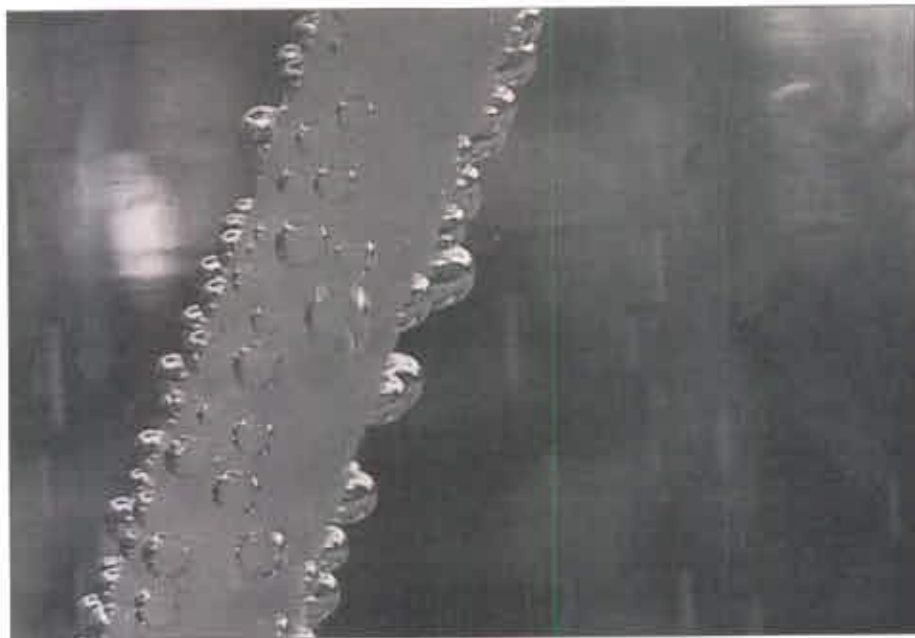
This film explores this phenomenon.

## क्लोजर

साइलेन्ट/8 मिनट/वीडियो

**निर्देशक:** प्रिया पुरी, **निर्माता:** फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, **छायांकन:** मनीष अलीमचंदानी, **ऑडियोग्राफर:** अनमोल भावे

हम सब भाग रहे हैं, बस चिन्ता है तो इस बात की कौन कितनी तेज भाग सकता है। किसी को भी आस-पास देखने की फुरसत ही नहीं है। हमारे आस-पास एक से एक आश्चर्यजनक चीजें हैं, बशर्ते कि हम इन पर नजर तो डालें। दैनिक जीवन में होने वाली सामान्य घटनाओं के दृश्यों के जरिए फिल्म यही संदेश देती है कि रुकिए और आस-पास की वस्तुओं और घटनाओं पर नजर डालिए।



## CLOSER

Silent /8 minutes/Video

**Director :** Priya Belliappa **Producer:**  
Film and Television Institute of India  
**Cinematographer:** Manish  
Alimchandani **Audiographer:** Anmol  
Bhave

We are all running, and our only worry seems to be 'how fast?' Closer is an attempt to make people look around them. It is my way of saying that there are so many wonderful things around you, if only you'd take time off to look. The film is a series of shots of life around us, simple everyday events that we encounter everyday.

## फाइनल सोल्यूशन

हिन्दी/गुजराती/अंग्रेजी/150 मिनट/वीडियो

**निर्देशक एवं निर्माता:** राकेश शर्मा, **छायांकन:** तन्मय अग्रवाल एवं राकेश शर्मा

**फाइनल सोल्यूशन** नफरत की राजनीति का अध्ययन है। फिल्म की पृष्ठभूमि फरवरी/मार्च, 2002 और जुलाई, 2003 का गुजरात है। पश्चिम भारत के गुजरात राज्य में 2002 के नरसंहार के अध्ययन के माध्यम से भारत में दक्षिण पंथी राजनीति के बदलते चेहरे का ग्राफिक चित्रण प्रस्तुत किया है। **फाइनल सोल्यूशन** नफरत और हिंसा का विरोध करती है क्योंकि 'जो लोग इतिहास को भुला देते हैं वे इसे फिर से जीने के लिए अभिशप्त हैं।'



### FINAL SOLUTION

Hindi/Gujarati/English /150 minutes/  
Video

**Director and Producer:** Rakesh Sharma  
**Cinematographer:** Tanmay Aggarwal & Rakesh Sharma

Final Solution is a study of the politics of hate. Set in Gujarat during the period Feb/

March 2002 – July 2003, the film graphically documents the changing face of right-wing politics in India through a study of the 2002 carnage in Gujarat in Western India. Final Solution is anti-hate/violence as 'those who forget history are condemned to relive it'.

## हंस अकेला - कुमार गंधर्व

हिन्दी/80 मिनट/35 एम एम

निर्देशक: जब्बार पटेल, निर्माता: फिल्मस डिवीजन, छायांकन: फारूख मिरत्री

हंस अकेला एक पौत्र द्वारा अपने दादा के जीवन और कृतियों में झांकने की कहानी है। कोमकली दर्शकों को अपने दादा कुमारगंधर्व के संगीतमय आधार का पूर्ववलोकन कराता है। वह कुमार गंधर्व की गायन शैली का विश्लेषण करने के साथ-साथ उन्हें संगीतकारों की भावी पीढ़ी की प्रेरणा और पथ प्रदर्शक बताता है। फिल्म के अनुसार कुमार गंधर्व गायन की एक महान हस्ती ही नहीं बल्कि एक संगीतविज्ञानी भी थे।



Chief Producer  
Films Division Govt of India  
24 Dr. Gopabandhu Deshmukh Marg, Mumbai - 400 026, INDIA  
Tel: (91) 22 2386 1421 Fax: (91) 22 2386 0308  
E-mail: filmsd@bom4.vsnl.net.in / website: www.filmsdivision.org

## HANS AKELA – KUMAR GANDHARVA

Hindi/80 minutes / 35mm

**Director :** Jabbar Patel **Producer:** Films Division **Cinematographer:** Faroukh Mistry

'Hans Akela' is the search of a grandson into his grandfather's life and works.

Bhuvanesh Komkali takes us back for a retrospective look into his grandfather, Kumar Gandharva's, probe of musical roots. He analyses what made Kumarji's singing the way it was and the reason for it being an inspiration and beacon to coming generations of musicians. He talks of Kumar Gandharva as not just a singing legend but as a musicologist too.



## जॉन एण्ड जेन

अंग्रेजी/22 मिनट/35 एम एम

**निर्देशक एवं निर्माता:** आशिम आहलुवालिया,  
**छायांकन:** मोहनन

यह फिल्म हालांकि वृत्तचित्र है लेकिन इसकी कहानी विज्ञान कल्पनालोक जैसी है। फिल्म में मुंबई के एक कॉल सेन्टर में काम करने वाले 'छह काल एजेंटों' की कहानी के जरिए 21वीं सदी की दुनिया में व्यक्तिगत पहचान के बारे में कुछ क्षुब्ध कर देने वाले सवाल उठाए गए हैं।

ये कॉल एजेंट 1-800 नम्बर पर अमरीकियों की समस्याओं का समाधान करते हैं। एजेंट ग्लास और स्टील की एक नई कम्पनी के लिए काम करते हैं। इनका ऑफिस रात में चलता है, क्योंकि जिनके सवाल का इन्होंने जवाब देना है उनके देश में उस समय दिन होता है।

ये एजेंट घंटी बजने पर फोन उठाते हैं तो दूसरी तरफ किसी न किसी अमरीकी की आवाज आती है।

अमरीकी उच्चारण में प्रशिक्षण के बाद इन्हें कॉल सेन्टर में 14-14 घंटे काम करना पड़ता है। देर रात में रोशनी से जगमागाते कार्यालयों और तड़क-भड़क से भरे अत्याधुनिक विशाल मॉलों में काम करने का नशा इन एजेंटों पर हावी होने लगता है। इन्हें नींद में भी अमरीका के सपने आते हैं।

जॉन एण्ड जेन ने भारतीयों की एक ऐसी नयी पीढ़ी पर प्रकाश डाला है जो वास्तविक और काल्पनिक दुनिया के बीच जी रही है।



## JOHN & JANE

English/22 minutes /35 mm

**Director and Producer:** Ashim Ahluwalia  
**Cinematographer:** Mohanan

An uncanny blend of observational documentary and tropical sci-fi, John & Jane follows the stories of six 'call agents' that answer American 1-800 numbers in a Bombay call center. The agents work for one of the new glass and steel corporations that have mushroomed in a stark industrial swampland outside the city. Their offices are only open at night in order to cater to daytime callers in America.

When the agents finally hit the phones, they hear distant American voices. When the night shift draws to a close, the agents

return home to sleep in a tropical Bombay day. But phone calls loop in their heads, they dream of this distant place, where people own cookie cutters that can carve out the shapes of snowmen...

After a heady mix of American 'training' and 14 hour workdays, the job soon starts to take its toll. Counter pointing the fluorescent interiors of late night offices and hyper malls with uneasy currents swirling around the characters, John & Jane discovers a new generation of Indians that already live between the real and the virtual.

The film raises disturbing questions about the nature of personal identity in a 21<sup>st</sup> century globalised world.

## कछुआ और खरगोश

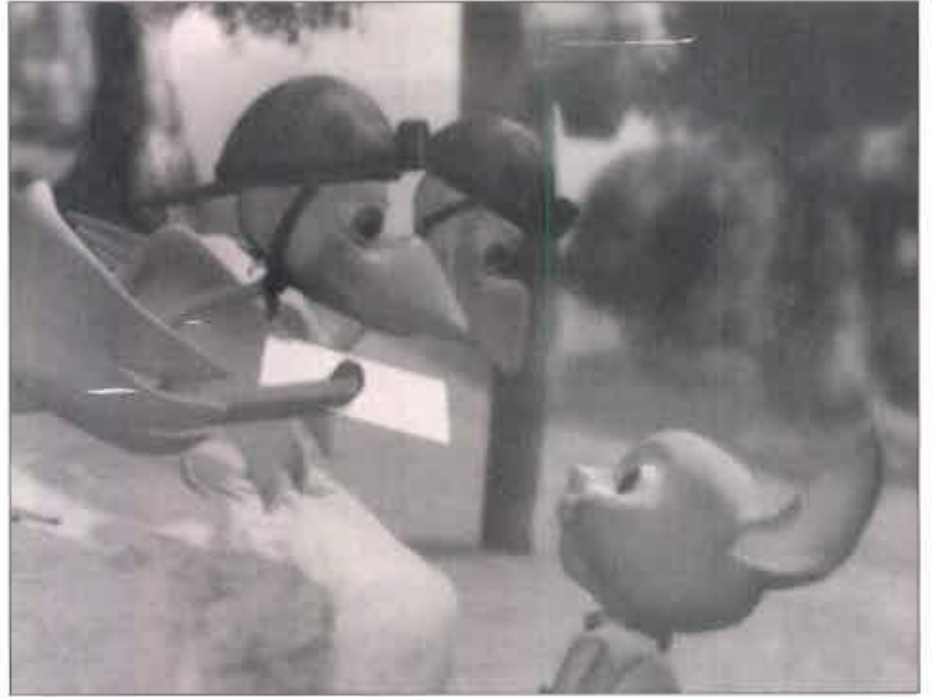
हिन्दी/22 मिनट/वीडियो

**निर्देशक:** सी.बी. अरुण, **निर्माता:** रमेश शर्मा,  
**एनीमेटर:** मूविंग पिक्चर कम्पनी एनीमेशन टीम

कछुआ और खरगोश 'पंचतंत्र' की सबसे प्रसिद्ध कहानी है। यह कछुआ और खरगोश के बीच दौड़ के बारे में है। कहानी, फिल्म के प्रमुख पात्र चीकू नाम के खरगोश धीरू नाम के कछुए के बीच आम बेचने के विवाद से शुरू होती है।

दोनों ने फंसला किया है कि दौड़ में मुकाबले के द्वारा इस विवाद को सुझला लिया जाए। चीकू खरगोश को पूरा विश्वास है कि यह दौड़ जीत जाएगा। दौड़ शुरू होती है। चीकू जल्दी ही धीरू को काफी पीछे छोड़ देता है। यह सोच कर कि धीरू अभी बहुत पीछे होगा, चीकू आराम करने लगता है और उसे नींद आ जाती है। लेकिन, चीकू कछुआ रुकता नहीं है, धीरे-धीरे लगातार चलता रहता है और दौड़ जीत जाता है।

कहानी से यही शिक्षा मिलती है कि अनथक प्रयास करने वाले को ही सफलता मिलती है।



### KACHHUA AUR KHARGOSH

Hindi/22 Min./ Video

**Director :** C.B. Arun **Producer:** Ramesh Sharma **Animator:** Moving Picture Company Animation Team

This is the most famous story of 'Panchtantra'. Its about a race between the Turtle and the Hare. The story begins with a dispute over sale of mangoes between our lead characters Cheeku, the hare and Dheeru, the turtle.

They decide to settle the issue by competing in a race. Cheeku, being a hare, is very confident of winning it, well actually over-confident. The race begins. The overconfident Cheeku soon takes the lead. Considering Dheeru very far behind. Cheeku decides to take a nap and falls asleep soon. Dheeru on the other hand slowly but steadily marches on and wins the race.

So the moral of the story is that 'Slow and steady wins the race'.

## नैना जोगिन (द एसेटिक आइ):

हिन्दी/मैथिली/59 मिनट/वीडियो

**निर्देशक एवं निर्माता:** प्रवीण कुमार, **छायांकन:** समीर महाजन, **कलाकार:** पूनम धाकल, रामजू झा, काओरी टकोची, **संपादक:** स्व. विभूति नाथ झा

मधुबनी के निवासी कठिन परिस्थितियों में जी रहे हैं। कई लोगों ने जीवन यापन के लिए चित्रकारी (पेंटिंग) का कार्य शुरू कर दिया है। ये लोग पारम्परिक चित्रों (धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़े ये चित्र पहले झोपड़ियों की गोबर से लिपी दीवारों पर बनाए जाते थे।) को कागज पर बनाते हैं। ये पेंटिंग्स देश-विदेश के बाजारों में बेच दी जाती है।

नैना जोगिन फिल्म इन्हीं पेंटर्स, इनकी परिस्थितियों, इनकी प्रेरणाओं और इनकी कृतियों के बारे में है।

फिल्म की केन्द्रीय विषय वस्तु 'खोबबर' अनुष्ठान है। इस धार्मिक अनुष्ठान के अनुसार नव विवाहित जोड़े को तीन दिन और तीन रात चित्रकारी किए गए 'खोबबर घर' में बिताने होते हैं उसके बाद ही वे पति-पत्नी का रिश्ता बना सकते हैं।



## NAINA JOGIN (THE ASCETIC EYE)

Hindi/Maithili/ 59 minutes / Video

**Director and Producer:** Praveen Kumar  
**Cinematographer:** Sameer Mahajan  
**Cast:** Poonam Dhakal, Ramju Jha, Kaori Takeochi **Editor:** Late Vibhuti Nath Jha

In Madhubani, people struggle against trying circumstances to eke out a living. Many have taken to painting to survive. They paint the traditional motifs (erstwhile painted on cow dung textured walls of huts and closely associated with ritual) onto paper. The film Naina Jogin is about these painters, their circumstances their inspirations and their works. The central line of the film is the Khobbar ritual, in which, a newly married couple spend three days and nights in the painted Khobbar Ghar before they may consummate their marriage.





### पारसी वाड़ा, तारापोर प्रेजेंट डे

अंग्रेजी/गुजराती/22 मिनट/35 एम एम

**निर्देशक:** केवन उमरीगर, **निर्माता:** फिल्म एंड टेलीविजन इन्स्टीट्यूट ऑफ इंडिया, **छायांकन:** परमवीर सिंह, **कलाकार:** मीनू हीरामाणिक

बम्बई में पारसियों का भविष्य कैसा होगा, क्या यह तारापुर में उनके वर्तमान जैसा होगा? फिल्म इसी समस्या पर केन्द्रित है।

### PARSI WADA, TARAPORE – PRESENT DAY

English/Gujarati/22 minutes/ 35mm

**Director :** Kaevan Umrigar **Producer:** Film and Television Institute of India  
**Cinematographer:** Paramvir Singh  
**Cast:** Minoo Hiramaneek

What will the future of the Parsis of Bombay be like? Will it be like their present in Tarapore? The film focuses on this issue.

## राइडिंग सोलो टू द टॉप ऑफ द वर्ल्ड

अंग्रेजी/94 मिनट/वीडियो

**निर्देशक:** गौरव ए. जानी, **निर्माता:** डर्ट ट्रैक प्रोडक्शन, **छायांकन:** गौरव ए. जानी

राइडिंग सोलो टू द टॉप ऑफ द वर्ल्ड एक यात्री के अनुभवों की अनोखी कहानी है। यह व्यक्ति अपनी मोटर साइकिल पर मुंबई से लद्दाख के चांगथांग पठार की यात्रा पर निकला है। दुनिया का यह दूरस्थ पठार चीन की सीमा पर स्थित है।

15000 फुट की ऊंचाई पर स्थित चांगथांग पठार लद्दाख के लगभग 30000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। यहां सड़कें नहीं हैं और सर्दियों में तापमान शून्यसे 40 डिग्री नीचे चला जाता है।

इस अकेले व्यक्ति ने किस तरह अपनी यात्रा को फिल्माया है, रास्ते में लोगों से बातचीत की है, किन-किन दिक्कतों को झेला है, किस तरह से दुरुह रास्तों से गुजरा है और अन्ततः किस तरह अपनी वृद्ध इच्छा शक्ति से सफलता पाई है, यह सब दृश्य दर्शक को आश्चर्यचकित कर देते हैं।

घूमन्तू जनजातियों से सम्पर्क, दुनिया का सबसे ऊंचा दर्रा, चांग पास और धार्मिक उत्साह ये सब मिलकर उसे जीवन का एक नया पहलू सिखाते हैं।

संक्षेप में कहा जाए तो राइडिंग टू द टॉप ऑफ द वर्ल्ड एक ऐसी फिल्म है, जिसने गौरव जानी को आत्मबोध कराया है।



## RIDING SOLO TO THE TOP OF THE WORLD

English / 94 minutes/Video

**Director :** Gaurav A. Jani **Producer:** Dirt Track Productions **Cinematographer:** Gaurav A. Jani

**Riding Solo To The top of The World** is a unique experience of a lonesome traveler, who rides on his motorcycle all the way from Mumbai to one of the remotest place in the World, the Changthang Plateau, in Ladakh, Bordering China.

Situated at an average altitude of 15000 feet, Changthang covers almost 30,000 sq. Kilometers of Ladakh. A land devoid of

roads and with temperatures which dip to minus 40 degree Celsius in winter.

As a one man film unit, he astonishes you, filming the landscape he passes by and the people he interacts with, capturing moments of beauty, pain, love, hardship, self doubt and spiritual triumphs.

As a city sleeker, his interaction with the nomads of the region, the Chang pas, who live at the highest altitude used by mankind in the world, teaches him a new perspective of life, as are the religious fervors he encounters.

Riding Solo To The Top of the World, in essence is a film about a journey that begins as an adventure and ends with the man Gaurav Jani, seeking the man within.



## स्परिट ऑफ द ग्रेसफुल लीनिएज

अंग्रेजी/35 मिनट/विडियो

**निर्देशक:** प्रेरणा बरबरूआ शर्मा, **निर्माता:** बीबी देवी बरबरूआ, **छायांकन:** देवाशीश भारद्वाज

इस फिल्म उद्देश्य मेघालय के मातृसत्तात्मक परिवारों के उन सदस्यों की भूमिका को तलाशना है, जिन पर इस अनोखी परम्परा को जीवित रखने का दायित्व है।

वृत्तचित्र में जीवन के तीन चरणों यानि जन्म, विवाह और मृत्यु तथा इस व्यवस्था को एक स्वरूप देने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। देश के शेष भाग से बिल्कुल अलग व्यवस्था को समझने के प्रयास में उनकी सामाजिक प्रणाली का प्रतिनिधित्व करने वाले पारिवारिक सदस्यों को फिल्म का केन्द्र बिन्दु बनाया गया है।

अन्य भारतीय समाजों से बिल्कुल अलग और अनोखे समाज के अस्तित्व को दर्शाने वाली इस फिल्म में नृत्यों, उत्सवों और धार्मिक समारोहों और परम्पराओं के जरिए इस शालीन प्रथा की सराहना की गई है।

## SPIRIT OF THE GRACEFUL LINEAGE

English/35 Min. /Video

**Director :** Prerana Barbarooah Sharma  
**Producer:** Bibi Devi Barbarooah  
**Cinematographer:** Debashish Bhardwaj

The film aims to understand the matrilineal society in Meghalaya. It is an exploration into the roles of the different members of matrilineal families in Meghalaya, who are responsible in upholding this unique tradition.

The documentary highlights the three stages of life, viz., birth, marriage and death and how they play a crucial role in shaping up the core values of the system. In an effort to comprehend how a system so varied from the rest of the country still exists, focus is put on members of families representative of their social system.

The film is a celebration of the survival of a society so different from the rest of Indian societies. Through the dances, festivals, religious ceremonies and traditional customs the film applauds the spirit of this graceful lineage.

## थक्कायिन मीदू नांगु कंगल

तमिल/वीडियो/20 मिनट

**निर्देशक:** एस. एम. वसंत, **निर्माता:** दूरदर्शन एवं रे सिनेमा, **छायांकन:** बीजू विश्वनाथ, **कलाकार:** ए.के. वीरास्वामी

एक बूढ़ा और उसका पोता एक छोटे से गांव में रहते हैं। बूढ़े को मछली पकड़ने की अपनी कला पर घमण्ड है। लेकिन पोते को अपने दादा के मछली पकड़ने का तरीका पसन्द नहीं है। तालाब में एक दुर्लभ मछली नजर आती है। दोनों ही इस मछली को पकड़ने के लिए आतुर हैं। कौन पकड़ेगा इस मछली को ?



### THAKKAYIN MEETHU NAANGU KANGAL

Tamil/ Video/20 minutes

**Director :** SM. Vasanth **Producer:**  
Doordarshan & Ray Cinema  
**Cinematographer:** Biju Viswanath  
**Cast:** A.K. Veeraswamy

An old man and his grandson live in a small village. He is proud of his fishing capabilities, but the young boy is critical of his grandpa's approach of fishing. A rare fish is sighted in the pond. Both are eager. Who will catch it?

## चाबीवाली पॉकेट वाच

हिन्दी/उर्दू/35 एम एम 27 मिनट/35 एम एम

**निर्देशक:** विभू पुरी, **निर्माता:** फिल्म एंड टेलीविजन इन्स्टीट्यूट ऑफ इंडिया, **छायांकन:** अनय गोरवामी, **कलाकार:** ललित मोहन तिवारी

बुद्ध शायर बब्बा एक गुमनाम मौत मर रहा है। कला को पैसे से तोलने वाली इस बेदर्द दुनिया से मुँह मोड़कर उसने अपनी अलग ही छोटी सी दुनिया बना ली है। अपने आप में खोये रहने वाले बब्बा की हालत देखकर उसकी बेटी मिन्नी गुमशुम रहने लगती है। इनके पड़ोस में एक छोटा सा प्रकाशक पप्पन रहता है, जो कर्ज से लदा है। बब्बा की बेशकीमती शायरियों और उसकी खूबसूरत बेटी पर पप्पन की नजर है।

अपने में ही खोया रहने वाला एक रोमांटिक बूढ़ा, उसकी गुमशुम बेटी और अवसरवादी प्रकाशक। और फिर, पप्पन के लिए लेखक अब शब्दों से ज्यादा कीमती हो जाता है।



## CHABIWALI POCKET WATCH

Hindi/Urdu /27 minutes/35 mm

**Director :** Vibhu Puri **Producer:** Film and Television Institute of India

**Cinematographer:** Anay Goswamy

**Cast:** Lalit Mohan Tiwari

Babba, an old Urdu poet is dying an unknown death. Having shut his eyes to the callous world that weights money for

art, he has woven a charming little world of his own. Babba's state of bliss drives his daughter Minni into a world of bitter silences. In their neighborhood lives Pappan, a small-time debt-ridden publisher who is eyeing Babba's treasured verses and his beautiful daughter.

A self-indulgent, romantic old man, his reticent daughter and an opportunistic publisher. And then for Pappan, somehow the writer becomes more important than the words.

## द सीडकीपर्स

तेलगु/अंग्रेजी/28 मिनट/वीडियो

**निर्देशक:** फरीदा पाचा, **निर्माता:** पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट, **छायांकन:** शुभ्रा दत्ता, अभिजीत मुकुल किशोर

आंध्र प्रदेश के मेडक जिले में दलित समुदाय की 5000 गरीब महिलाओं ने मिलकर ग्राम स्तर की एक संस्था 'संगम' बनाई है। इन महिलाओं ने संगम के जरिए मेडक जिले की बंजर जमीन को खेती योग्य बना दिया है। इन महिलाओं ने खेती करने की पारम्परिक प्रणालियों को फिर से जीवित किया है। खेती करने के इन पारम्परिक तरीकों को पूरी तरह भुला दिया गया था। इस आंदोलन में भागीदारी से इन महिलाओं को अपने समुदाय में नई प्रतिष्ठा और भूमिका मिली है। फिल्म **द सीडकीपर्स** इन महिलाओं की ही कहानी है।



### THE SEED KEEPERS

Telegu/English/28 minutes/ Video

**Director :** Farida Pacha **Producer:** Public Service Broadcasting Trust  
**Cinematographer:** Shubra Dutta, Avijit Mukul Kishore

In the arid and unforgiving land of Medak District, Andhra Pradesh, more than 5000

poor, Dalit women have come together to form sanghams – village level collectives. Through the sanghams, these women have revived traditional systems of agriculture; systems that have been completely ignored and marginalized now. Their involvement in this movement has helped them to acquire a new dignity and role in their community. The film 'Seedkeepers' narrates their story.



## द वे टू डस्टी डेथ

हिन्दी/अंग्रेजी/28 मिनट/वीडियो

**निर्देशक:** सैयद फय्याज, **निर्माता:** पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट, **छायांकन:** प्रशांत कारनाथ

गुजरात में अकीक या गोमेद उद्योग सदियों से चल रहा है। इससे जुड़ी एक भयानक बीमारी सिलिकोसिस भी कई दशकों से इस उद्योग के श्रमिकों को मीत के मुँह में धकेल रही है। गोमेद की घिसाई और पॉलिश का काम पीढ़ियों से चला आ रहा घन्चा है। यह कार्य गुजरात के खम्बात और इस के आसपास के गांवों में होता है।

सिलिकोसिस एक सामान्य और सबसे खतरनाक मेशागत बीमारी है। सिलिका धूल के कण श्वास के जरिए फेफड़ों में पहुंचते हैं और फेफड़ों में कभी ठीक न होने वाला नासूर हो जाता है।

फिल्म द वे टू डस्टी डेथ के जरिए इन श्रमिकों की वेदना को दिखाया गया है।



### THE WAY TO DUSTY DEATH

Hindi/English/ 28 minutes/Video

**Director :** Syed Fayaz **Producer:** Public Service Broadcasting Trust  
**Cinematographer:** Prashant Karanth

Gujarat, has played host to a thriving agate (akik) industry for centuries, and for decades, to a killer disease Silicosis. Agate grinding and polishing, largely a

hereditary profession has exclusively been functioning in Kambath and nearby villages of Gujarat.

Silicosis is the commonest and one of the most serious occupational disease. It is irreversible fibrosis of the lungs caused by inhalation of free silica dust.

The film - The Way to Dusty Death brings the afflictions of these workers to light.



## अंडर दिस सन

बंगला/48 मिनट/वीडियो

**निर्देशक एवं निर्माता:** नीलांजन भट्टाचार्य,  
**कलाकार:** रानू घोष

अन्डर दिस सन में भारत की जैविक सम्पदा की प्रचुरता, इनसे संबंधित स्थानीय जानकारी और इनके तेजी से पतन के कारणों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। वृत्तचित्र में पश्चिमी घाट और पूर्वी हिमालय की जैव विविधता को केन्द्र बिन्दु बनाया गया है। फिल्म स्थानीय जैविक सम्पदा के निरन्तर इस्तेमाल की समृद्ध परम्परा, इनके नष्ट होने के कारण तथा प्रभाव, संरक्षण के तौर-तरीके, वनस्पति, वन्य प्राणी उत्पादों के औषधीय तथा अन्य गुणों को तलाशती नजर आती है। इसमें पश्चिम बंगाल और यहां की कई प्रकार की कृषि फसलों और इनके स्थाई इस्तेमाल तथा प्रबंध की स्थानीय परम्परा को भी लक्ष्य बनाया गया है। जैविक सम्पदा की विविधता, प्रकृति से जुड़े सजीव अनुष्ठान और प्रथाओं तथा खूबसूरत प्राकृतिक दृश्यों ने फिल्म को परिपूर्ण बना दिया है।



### UNDER THIS SUN

Bengali/48 Min./ Video

**Director and Producer:** Nilanjan  
Bhattacharya **Cinematographer:** Ranu  
Ghosh

Under This Sun attempts to capture the magnitude of India's biological wealth as well as the related local knowledge while examining the reasons for their rapid decline. The documentary focuses on two of the world's eighteen biodiversity hotspots within Indian territory, the Western Ghats, and the Eastern

Himalayas. It tracks the rich tradition of sustainable use of local biodiversity, causes and effects of their depletion, several conservation ethics, and knowledge regarding the medicinal and other properties of plant and animal products. The film also focuses on West Bengal for its tremendous variety of agricultural crops, as well as the rich indigenous knowledge related to their sustainable use and management. To give the film a complete shape the diverse biological wealth, colourful rituals, cultural practices related to nature and the beautiful landscapes are interwoven in it.

## वॉयसेस एक्रॉस दि ओशन्स

अंग्रेजी/हिन्दी/23 मिनट/वीडियो

**निर्देशक:** गणेश शंकर गायकवाड़, **निर्माता:** फिल्म एंड टेलीविजन इन्स्टीट्यूट ऑफ इंडिया,  
**छायांकन:** सारिका बादर खान, **कलाकार:** निखिल मुले

वॉयसेस एक्रॉस दि ओशन्स एक ऐसे व्यक्ति के विषय की कहानी है जो बीबीसी की हिन्दी सेवा में समाचार वाचक बनना चाहता है। उसका सपना है कि वह भी एक दिन कहे 'यह बीबीसी लंदन है।' वह समाचार वाचक तो नहीं बन पाता, लेकिन एक दिन बीबीसी हिन्दी पर डाक्यूमेंट्री बनाने के लिए लन्दन जरूर पहुंच जाता है और इस प्रकार अपने सपने को साकार कर लेता है।

वन वर्ल्ड ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट, लंदन के वित्तीय सहयोग से बनी इस फिल्म में नेशनल फिल्म एण्ड टेलीविजन स्कूल, यू.के. और भारतीय फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान ने भी हाथ बंटाया है।



### VOICES ACROSS THE OCEANS

English/Hindi /23 minutes/Video

**Director :** Ganesh Shankar Gaikwad  
**Producer:** Film and Television Institute of India  
**Cinematographer:** Shariqua Badar Khan  
**Cast:** Nikhil Mulay

Voices Across the Oceans is about the nostalgia of a person who grew up

listening to the shimmering voices of the BBC, fostering a dream of becoming a news reader in the BBC Hindi and proclaim – 'This is the BBC London'. He didn't become one, time flies (Marc Chagall) and one day he finds himself in London making a documentary film on the BBC Hindi, tracing his imagination into the reality ....

## वापसी

अंग्रेजी/हिन्दी/पंजाबी/कश्मीरी एवं ऊर्दू/59 मिनट/  
वीडियो

**निर्देशक:** अजय रैना, **निर्माता:** पब्लिक सर्विस  
ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट, **छायांकन:** अरुण वर्मा, अजय  
रैना, मनोज लोवो **कथावाचक:** अजय रैना

भारत और पाकिस्तान के रिश्तों में नरमी आने  
लगी है। ऐसे समय में एक भारतीय क्रिकेट  
प्रेमी किसी तरह नियंत्रण रेखा पार कर  
पाकिस्तान पहुंच जाता है।

पाकिस्तान की यह यात्रा इतिहास की ओर  
लौटने की एक ऐसी यात्रा है, जिसमें विषाद,  
नफरत, वास्तविकता, सब कुछ है। इसमें, आशा,  
प्यार, चाह, घोखा भी है। भारत की राजधानी  
दिल्ली से शुरू हुई यह फिल्म कश्मीर, गुजरात  
और भारतीय पंजाब से गुजरती हुई यादों और  
इतिहास की भूल-भुलैयाओं में, पाकिस्तान बनाने  
का विचार, इसके बनने की कहानी, यह क्या  
बन गया है और यह किस प्रकार भारत और  
पाकिस्तान को प्रभावित करता है, बंटवारे के  
बावजूद वो कौन लोग हैं, जो नफरत के जरिए  
और प्यार के जरिए एक दूसरे से जुड़े रहते हैं,  
इन सबको तलाशती नजर आती है।



### WAPSI

English/Hindi/Punjabi/Kashmiri and  
Urdu/59 minutes/Video

**Director :** Ajay Raina **Producer:** Public  
Service Broadcasting Trust  
**Cinematographer:** Arun Verma, Ajay  
Raina, Manoj Lobo **Narration/Voice  
Over:** Ajay Raina

In the times of a yet another thaw in the  
relationship between India and Pakistan,  
an Indian 'Lover of Cricket' finally  
manages to go across to the other side of

the Line of Control - to journey through  
the heartland of Pakistan.

The journey to Pakistan is a journey of  
return of various kinds - to Nostalgia,  
hate, metaphor and reality. A song of hope,  
love, longing and betrayal. Starting from  
India's capital Delhi, it takes a detour via  
Kashmir, Gujarat and Indian Punjab. It  
travels back and forth between memory  
and history to explore the 'idea' of  
Pakistan, the story of its making, what it  
has become and how it affects others  
through hate and through Love.



## द विसल ब्लोअर्स

अंग्रेजी/45 मिनट/वीडियो

**निर्देशक:** उमेश अग्रवाल, **निर्माता:** पब्लिक सर्विस ब्रॉडकास्टिंग ट्रस्ट, **छायांकन:** जलज के, नाजीर अहमद, मनोज जोशी

इस फिल्म में कोका कोला और पेप्सी जैसी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा भारत में निर्मित सॉफ्ट ड्रिंक और बोतलबंद पानी में कीटनाशकों के मुद्दे की पड़ताल की गई है। सेन्टर फॉर साइंस एन्ड एन्वायरमेंट की हाल की एक रिपोर्ट में इन साफ्टड्रिंक्स में कीटनाशकों के अवशेष पाये जाने का खुलासा किया गया था।

भारत में इन कम्पनियों के बोतलबंद पानी और सॉफ्ट ड्रिंक में लिडेन डीडीटी, और क्लोरीपायरीफस जैसे खतरनाक कीटनाशक पाये गए थे।

यूरोपीय संघ के मानकों की तुलना में इनका स्तर 40-90 प्रतिशत तक ज्यादा था। इन रिपोर्टों से आम लोगों में क्रोध की लहर दौड़ गई थी।

इसका एक और पक्ष भी है-

भारतीय किसान अपने खेतों में कीटनाशकों के रूप में कोकाकोला और पेप्सी का छिड़काव कर रहे हैं। किसानों का दावा है कि ये सॉफ्ट ड्रिंक कीटनाशकों से ज्यादा प्रभावी है।



## THE WHISTLE BLOWERS

English/45 minutes/Video

**Director :** Umesh Aggarwal **Producer:** Public Service Broadcasting Trust  
**Cinematographer:** Jalaj K. Nazeer Ahmad, Manoj Joshi

The film presents an investigation into the issue of pesticides in bottled water and soft drinks manufactured by reputed MNC's like Coca Cola and Pepsi in India which

has recently revealed in a report by the Centre for Science and Environment.

These reports created a public furor.

There is another side to it.

Farmers in India are spraying Coca Cola & Pepsi in their fields to kill pests.

Farmers claim that these colas have proved to be very effective pesticides.